PDF By - सवाई मान चौहान

रामसागर गीता

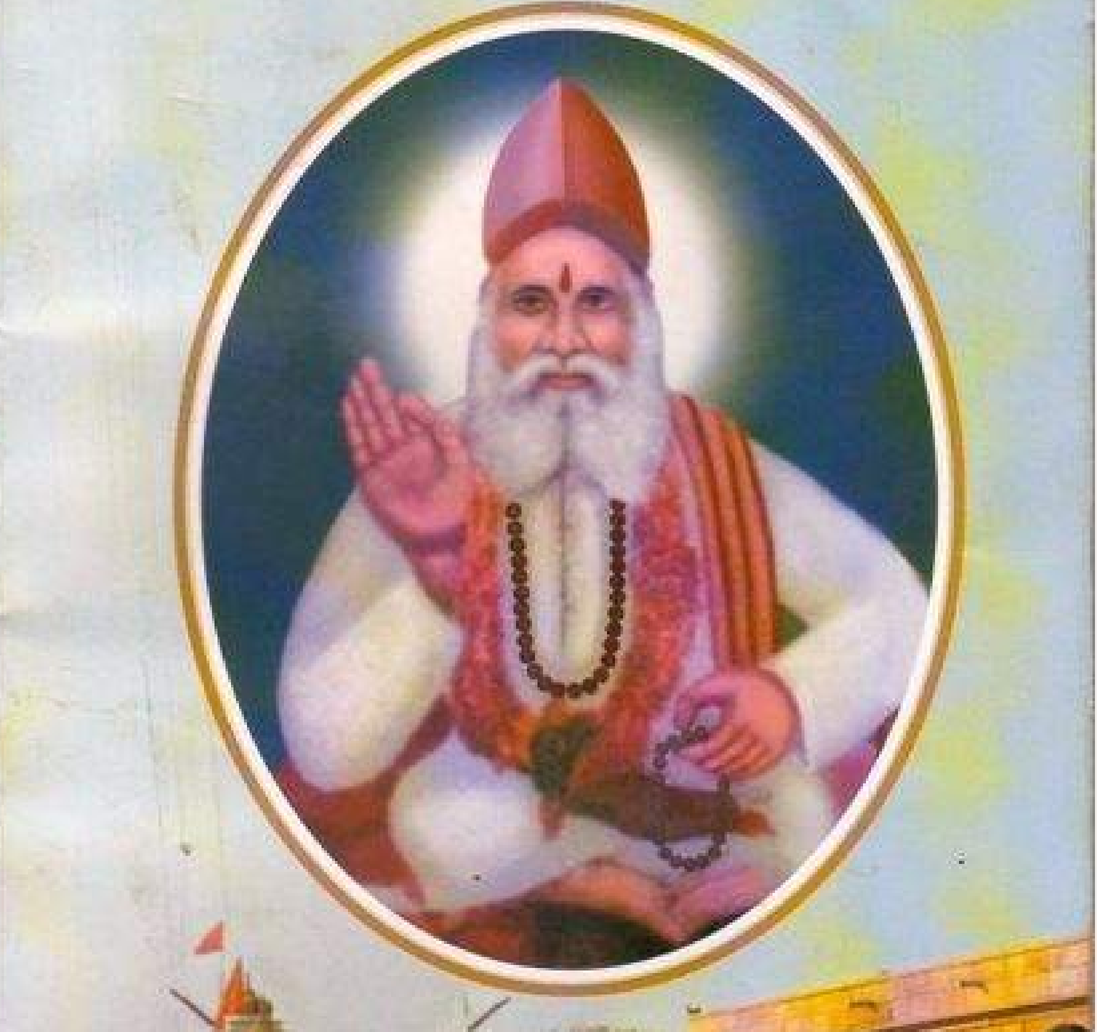

लेखक :–
श्री ओमप्रकाश श्री पूराराम गर्ग

रामसागर गीता

भजन माला

अनुवादक
ओमप्रकाश श्री पुराराम
वरिष्ठ अध्यापक, सामान्य,
राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय
बईया, मो. 9636712170

PDF निर्माता . सवाईमान चौहान
गांव रामगढ़ जिला जैसलमेर राज.
मोबाईल . 9414131313

राजस्थानी ग्रंथागार, जोधपुर

संत श्री सदाराम महाराज का जीवन चरित्र

भारत की भूमि पर समय-समय में साधु-महात्माओं व भक्तजनों का अवतरण हुआ है। इन महापुरुषों की श्रृंखला में राजस्थान के सीमा प्रान्त जिले जैसलमेर में दक्षिण भाग बसिया क्षेत्र में संवत् 1863 में चैत्र सुदी बीज गुरुवार ग्राम गूहड़ा में श्री जीवनणराम जी गर्ग के घर श्री सदाराम जी का जन्म हुआ। माता का नाम श्रीमती ईतुदेवी था। श्री सदाराम के दो अन्य भाई श्री गोमदराम जी व श्री गोरखरामजी थे। श्री सदारामजी ने गृहस्थ जीवन का पालन करते हुए भक्ती प्रारम्भ की माताजी के उपदेश से आपने सेवाराम जी महाराज भाखराणी जैसलमेर को अपना गुरु बनाकर शिक्षा प्राप्त की। भगवान का भजन करते करते महाराजा श्री को गृहस्थ जीवन में विरक्त होकर वैराग्य उत्पन्न हुआ। अपने शिष्यों के साथ भजन व उपदेश करने लगे। महाराज सदाराम जी ने उस समय भारत व पाकिस्तान एक होने के कारण ज्यादा समय वर्तमान सिंध प्रांत में अपने शिष्यों के साथ व्यतीत किया। सिंध में सूफी संत रोहल साहब के धूणों पर भी रहे। क्योंकि महाराज सेवारामजी सूफी पंथ रोहल साहब का अपने दादा गुरु मानते थे इसका कारण सदारामजी के भी रोहल साहब दादा गुरु थे। इस कारण वर्ष में एक दो बार दादा गुरु दरबार आया जाया करते थे और सूफी फकीरों के सम्पर्क में रहते थे। इस प्रकार सदारामजी सिंध व पंजाब प्रान्त में अपने भक्तों, शिष्यो के साथ भगवान का उपदेश देते हुए भजन करते थे। श्री महाराज सदाराम जी ने अपने प्रमुख स्थान गूहड़ा में बारह वर्ष कठोर तपस्या की और कई सिद्धियां प्राप्त की। गुहड़ा के बाद गांव कोहरा, बोगनियाई में भी तपस्या की थी। जैसलमेर जिले के

पूर्वी देवीकोट के पास लाला कराड़ा गांव में भी धूणा जमा कर तपस्या की। नीम का दान्तून करके दो भाग उस दान्तुन के बोदीये जो समय पर बड़े हुए जो नीम लाला कराड़ा में आज तक भी लगे हुए हैं। जैसलमेर के पश्चिम में हाबूर की पहाड़ी पर भी सदाराम ने कुछ दिन रह कर तपस्या की इसके साथ सिन्ध प्रान्त में मुल्तान के कोट मिठण में फरीदशाह के पवित्र स्थान पर भी तपस्या की उसके बाद जिला मीरपुर माथेला में तपस्या की। उसके बाद घोटकी में पिताफी व जलवारा का घूणा स्थापित करके वहां तपस्या की जलवारा में ही सदाराम ने अपना समझसागर ग्रंथ भी लिखा। जलवारा में तपस्या करके वहां से वापिस अपने मुख्य धाम गुहड़ा में पधारे। जलवारा में धूणा जो स्थापित किया वह आज तक अखण्ड ज्योत व अखण्ड धूणा चल रहा है वही जलवारा व धूणा जो रायपुर, छत्तीसगढ़ में स्थापित कर सदाणी दरबार के नाम से विश्वविख्यात है। श्री सदाराम जी ने अपना सम्पूर्ण जीवन भगवान भक्ति में लगाते हुए संवत् 1936 में अपना शरीर त्याग दिया था। सदाराम जी महाराज बाहरी आडम्बरों के खिलाफ थे। इसका कारण अपने शिष्यों व परिवार के सदस्यों को बुलाकर कहा कि आज में इस संसार से जाना चाहता हूँ सो सब शिष्य व परिवार के लोग इकट्ठे हुए। श्री सदाराम जी महाराज संवत 1936 में चैत्र सुदी चौथे को समरण करके ध्यान मग्न हुए कुछ देर बाद जो योग का ओटा बना हुआ है उस पर सफेद कपड़ा ओढ़ कर सो गये। अपने को परम आत्मा में विलीन कर दिया। इस प्रकार सदारामजी जी महाराज ने अपना शरीर त्याग दिया। श्री सदाराम जी महाराज ने अपने जीवन काल में कई ग्रन्थों की रचना की जो इस प्रकार है।

1. मूलद्वीप	2. ज्ञानद्वीप	3. ज्ञानसागर
4. निर्वाण सागर	5. समझसागर	6. रामसागर गीता
7. सादूल गीता	8. ईश्क समुन्द्र	9. शुद्ध सागर इत्यादि

कुल 9 ग्रंथों की रचना की इन ग्रंथों में गुरुवाणी व भजन है।

श्री महाराज ने अपने जीवन काल में कई चमत्कार यानी परचे दिये है जो इस प्रकार है–

1. मालूबाई राजपूत (खालत) गजसिंह का गांव जो उस समय गुहड़ा में रहते थे। मालूबाई बाबा साहेब की शिष्या थी। मालूबाई का 10 वर्ष का बच्चा नाम खानू जी था रात को चल बसा घर के सदस्य बाहर गये हुए थे। इस कारण

मालूबाई बच्चे का शव लेकर बाबा साहेब की सत्संग में आई। रात भर भजन सत्संग उपदेश होते रहे। सुबह 5 बजे जब सत्संग समाप्त हुआ तब प्रसादी बांटी गई। लेकिन मालूबाई ने सत्संग प्रसादी लेने से मना किया व रोने लग गई। तथा शिष्यों ने आकर बाबा साहेब को कहा कि मालूबाई नाराज हो रही है व प्रसादी भी नहीं ले रही है तब बाबा साहब मालूबाई के पास उठ कर गये कारण पूछा तो बाईजी ने बताया कि मेरा पुत्र खानू रात को चल बसा है मैं प्रसादी कैसे ले सकती हूँ। तब सदाराम जी ने भगवान का स्मरण करके तीन बार हे खानू, हे खानू, हे खानू पुकारा तो खानू जी ने कहां हां बाबा जी तब सदाराम जी मालूबाई से कहा कि बाई यह लड़का भूखा है इसे ले जाकर घर पर खाना खिलाओ और यह खानू बाद में 80 वर्ष की उम्र लेकर स्वर्गवास हुए। इस खानू के वंशज खालत आज भी सदाराम की पूजा करते हैं। मालूबाई की एक धर्मशाला भी समाधी स्थल के पास बनी हुई है जिसमें उसके वंशज खालत राजपूत पूजा अर्चना व भजन करते हैं।

2. गैनसिंह राजपूत निवासी कोहरा सदाराम का भक्त था। कोहरा कुएं से पानी सिंचते वक्त 400 फुट गहरे कुएं में गिर गया। गिरते वक्त हे सदाराम पुकारा। वहां खड़े लोग सब रोने लग गए कि ये 400 फुट गहरा कुएं में अब गैनसिंह नहीं जिन्दा होगा। सब लोगों ने मिलकर गैनसिंह को बाहर निकालने का प्रयत्न किया तब अन्दर से आवाज आई कि मैं सकुशल हूं आप आराम से अन्दर बडी रस्सा भेजे में बाहर आ जाऊंगा। गैनसिंह के कोई घाव भी नहीं लकगा था बाहर आकर गैनसिंह ने बताया कि मेरे कुएं में गिरते ही बाबा सदाराम ने मेरी बांह पकड़ ली थी जो में धीरे धीरे कुएं में गिरा। इस प्रकार गैनसिंह अपनी सम्पूर्ण आयु पूरी करके स्वर्गवास हुए उनकी समाधि कोहरा में सदाराम की तपस्या स्थली पर बने मन्दिर के पास ही है।

3. बाबा सदारामजी कोहरा में तपस्या कर रहे थे तो वहां हमेशा भजन सत्संग होती थी जिसमें उनके शिष्यगण आते थे। एक दिन सदाराम ने पूछा कि आप लोग गांव में तो ज्यादा रहते हो लेकिन सत्संग में कम क्यों आते हो तब कोहरा के लोगों ने कहा कि महाराज इस कोहरा गांव के चारों तरफ मगरा (पहाड़) है जिसमें बिच्छू रात को ज्यादा होते हैं व पत्थर के बिच्छू जहरीले भी ज्यादा होते हैं इस कारण हम इन बिच्छुओं के डर से रात को आपके पास सत्संग

में कम आते हैं तब सदारामजी ने राम का नाम लेकर आस–पास देखा तो एक बिच्छू आ रहा है सदाराम ने बिच्छू को पूंछ से पकड़ कर कहा है बिच्छू अब तू इस कोहरा गांव में मत आना यहां से दूर चले जाओ। तब से कोहरा गांव में बिच्छू नहीं है। लोग बड़े चाव से सत्संग में आते थे।

4. तत्कालीन जैसलमेर नरेश श्री केशरसिंह बड़े महान् राजा थे। उनका शरीर व रौब इतना था कि ऊंट भी उनको देखकर कभी मस्ती नहीं करता था। कहते है कि किसी लोगों ने राजा से कहा कि मेघवालों का गुरु है जो घोड़े पर चढ़कर फिरता है अपने को बड़ा चमत्कारी बताता है। राजा ने कहा अच्छा ऐसा है तो मैं उसकी स्वयं परीक्षा लूंगा। तब राजा केशरसिंह ने श्री सदाराम को गूहड़ा से जैसलमेर मिलने के लिए बुलाया। सदारामजी अपने शिष्यों के साथ जैसलमेर पधारे व राजा को कहा में आ गया हूं। तब राजा ने कहा कि आप मुझे अपना चमत्कार दिखाओ नहीं तो में सब आपको देख लूंगा। तब सदाराम ने कहा मेरे पास कोई चमत्कार तो नहीं है लेकिन एक पौथी (पुस्तक) है जो गुहड़ा में रह गई है अगर आप उसको मंगा लो तो जरूर उसमें भक्ती की बातें में आपको बता सकता हूं। तब केशरसिंह ने अपने ऊंट सवार ईश्वरसिंह गांव हप्पा राजपूत को भेजा कि आप जल्दी जाओ और गुहड़ा से जो सदाराम की पौथी (गुटका) है उसको लाओ। ईश्वरसिंह गुहड़ा आये तब सदारामजी ने कहा कि ईश्वरसिंह आप पौथी को आये हो जो ये ले जाओ। ईश्वरसिंह ने कहा पौथी लेकर वापिस जैसलमेर गये और राजा से कहा कि श्री सदाराम तो गूहड़ा में छोड़कर आया हूं इन्होंने ही तो मुझे यह पुस्तक (पौथी) दी है लेकिन राजा ने कहा कि जब तक में स्वयं इनकी परीक्षा नहीं करता तब तक नही मानूंगा। तब राजा को सदाराम जी महल के अन्दर ले गये और आसण पर बैठकर भगवानर का स्मरण करके राजा से कहा कि अब आप अपनी आँख बंद करो। राजा ने आंख बंद करके वापिस खोला तो आसन्न पर सिंह बैठा है तब राजा ने घबराकर महाराज की वंदन की कहा कि मेरी गलती हो गई जो आप सन्त महाराज को कष्ट दिया अब आप शांत हो जाओ तब बाबा साहब ने अपना संत रूप धारण किया। राजा केशरसिंह उनके शिष्य हो गये। सदाराम को जो इशाल बंगला है वह भेंट किया।

सादूळ मेंलो संत को, मेले में मजबूत।
राम दुहाई राम की भड़क गए सब भूत।।

5. उस समय पीपरला गांव तेमड़ेराय मन्दिर के उत्तर व भू गांव के दक्षिण में है जहां पर भूतों का अधिक प्रभाव होने के कारण सब गांव खाली हो गया था रात को कोई व्यक्ति उस दिशा भी नहीं जाता था। राजा केशरसिंह ने बाबा साहब से निवेदन किया कि महाराज आप को मैं पीपरला गांव दान में देता हूं आप वहां जाकर भजन करे वहां के लोगों को उपदेश देकर वापिस गांव मं बसाये। तब सदाराम जी पीपरला गांव आये व धूना थाप पर भजन करने लगे।

सादूळ मेंलो संत को, मेले में मजबूत।
राम दुहाई राम की भड़क गए सब भूत।।

इस प्रकार पीपरला गांव में भूत समाप्त हो गये सब लोग आराम से रहने लगे आज भी पीपरला गांव में सदारामजी के धूणे पर छोटा मन्दिर बना हुआ है। दीपक जलता है कभी कभी सफेद खरगौश के दर्शन भी होते। लोग आराम से रहते हैं।

5. गुहड़ा से उत्तर पश्चिम में खारिया गांव है जिसमे सोढ़ा जाति के लोग रहते हैं उसमें मोड़सिंह सोढ़ा सदाराम के भक्त थे। एक दिन सदाराम घूमते घूमते खारिया गये और मोडसिंह से कुशलक्षेम पूछी। मोडसिंह ने कहा महाराजा मेरी क्या कुशालात है मैं तो 60 वर्ष पार हो गया हूं शादी की हुई नहीं है अब मेरा तो वंश ही समाप्त हो जायेगा। तब सदारामजी ने कहा कि मोडसिंह आप क्यों उदास हो रहे हैं। आपके पांच पुत्र रत्न प्राप्त होंगे सभी बड़े योग्य होंगे। सदारामजी ने स्वयं मोड़सिंह की सगाई करवा के विवाह करवाया। मोडसिंह के पांच पुत्र हुए। 100 वर्ष की उम्र लेकर स्वर्गधाम गये।

6. सिन्ध के सदाराम के दर्शन करने के लिए एक मेघवाल यात्री गूहड़ा आ रहा था उसने पहले अपने कार्य सिद्ध होने के लिए सदाराम की भेंट पांच रुपये बोली थी जब कार्य सिद्ध हुआ तो उसने देखा कि अब में गूहड़ा जाऊं व सदाराम के दर्शन व भेंट देकर आऊं। जब वहां सिन्ध से रवाना हुआ तो बीच में पानी समाप्त हो गया। प्यास मरने लगा। प्यास से इतना व्याकुल हुआ कि चक्कर खाकर केर के वृक्ष के नीचे बैठ गया और अंतमन से सदाराम को पुकारने लगा कि बाबा अब आप भी बचाना यहां कोई 50 कोस में पानी नहीं है तब वह देखता है कि उस केर की झाड़ी में एक बड़ा मतीरा पड़ा है वह बड़ा खुश हुआ मतीरा इतना बड़ा व मीठा था कि पानी पीकर मतीरा खाकर पेट भर गया। जब

गुहड़ा आया तो बाबा साहब के दर्शन कर उसने सोचा कि मैंने पांच रुपये की मन्नत बोली थी मेरे पास पांच रुपये ही है इसका कारण बाबा को क्या पता कि मैंने कितने की मन्नत बोली है जो उसने 2 रुपये निकाल कर बाबा साहब के चरणों में रख दिया। बाबा साहब ने कहा बेटा पांच रुपये बोलकर दो रुपये चढ़ा रहे हो। पैसे नहीं है तो इसको भी ले ले तब उसने अपनी गलती स्वीकार की कहां आप अन्तर्यामी है अब मुझे माफ करे मेरी गलती हो गई।

6. रामगर जी महाराज जो जालौर के सांचौर गांव जाखल में रहते थे उस समय के बड़े सिद्ध थे हवा में उड़ते रहते थे। बड़ी-बड़ी जट्टा रखी हुई थी। एक दिन सदाराम से मिलने चले आये। आपस में वार्ता हुई सत्संग हुआ जब वापिस रामनगर जी महाराज जाने के लिए उड़ने लगे उड़ नहीं सके तब सदाराम ने कहा महाराज ये पाखण्ड है इसको मत करो आप भगवान का भजन करो जब ही जाकर कल्याण होगा। तब रामगर जी महाराज ने सदाराम को अपना गुरु बनाया था। सदाराम जी की सेवा करने लगे। सदाराम के मन्दिर के उत्तर मेंएक बोरड़ी वृक्ष है उसमें अपनी जट्टा काट कर बोध की भक्ति करने लगे। रामगर जी महाराज की समाधि जाखल गांव में है वहां पर कार्तिक अमावस्या के मेला भरा जाता है रामगर जी के साथ-साथ सदाराम जी की पूजा होती है।

सदाराम के दिए हुए

1. सिदाराम/ नानकराम हमीरा, 2. सिदाराम/ छत्तांगढ़, 3. शोभ भगती मच्छाराम, 4. सिरदारसिंह/ प्रागसिंह बैया 5. रताराम साकरिया 60 वर्ष की उम्र में साधु को पुत्र दिया। 6. बाखासर में पूराराम रैगर के कोई पुत्र नहीं था तब करनूराम के पास बाखासर आया व घोड़े की बाग पकड़ कर साथ में फिरता रहा करनूराम ने बाबा की राखी बांध कर कहा कि तेरे पुत्र होगा नाम मोहन रखना व जीवणी आंख के ऊपर सफेद लसण होगा। 7. गांव नागौलड़ी में देवासी पेहलाद के पुत्र नहीं था। करनूराम ने बाबू की राखी बांधी धना जी पुत्र हुए उसके बाद जीवनी, हरजीजी, हरसींगाजी, पांचा जी पुत्र पैदा हुए। पेहलाज के वंश की केकूबाई सदाराम की शिष्य थी। 8. मोटा जी राईका के कोई पुत्र नहीं था बाबा साहब की राखी करनूराम ने बांधी। पुत्र हुआ नाम हीरजी रखा। 9. डलाराम माली, 10. गांव चवन्नू के नाचणा के पास दिल्लू खां 60 वर्ष के कोई पुत्र नहीं

था। बाबा साहब की राखी बांधने से पुत्र पैदा हुआ। राखी जीराराम ने बांधी। 11. भंवरराम/ पन्नाराम गांव- आकल (वेरावाला) के कोई पुत्र नहीं था महाराज जीवाराम ने राखी बांधी तीन पुत्र हुए। 12. रामगढ़ में भोजराजसिंह की ढाणी में प्रेमसिंह के कोई पुत्र नहीं था बाबा साहब की राखी बांधी पुत्र पैदा हुआ, 13. चेतनराम गांव रामगढ़ के पांच पुत्रिया थी कोई पुत्र नहीं था, बाबा साहब की राखी बांधी पुत्र पैदा हुआ। 14. रान्झूमलसो गांव स्वरूपों का तला (चौहटन) में 13 लड़कियां थी। महाराज जीयाराम ने बाबा साहब की राखी बांधी दो पुत्र हुए। 15. गांव स्वागी में चालकजी चारण थे उनके घर पर भूत पुत्र पैदा हो गये घर पर सब लोग नाचते थे महाराजा करनूराम उनके घर गये तब एक ब्राह्मणी ने कहा महाराज आप यहां क्यों आये हो, आप भी अभी नाचने लग जाओगे। तब महाराज ने सदाराम का धूप करके छांट बरती आज तक उनके घर में कोई उपद्रव नहीं है। बाबा साहब की पूजा की जाती है।

000

साखी

सादुळ के अरजां सुणो, अंगण मेरे आव।
विरद वडे हो बाप जी, भगत मुगत के भाव।। 1।।
सादुळ के अरजां सुणों, आइयो मेरे आप।
मेरे तारण के मुदे, बूझयो तुम हो बाप।। 2।।
सादुळ के अरजां सुणो, जद तद आवण जोग।
विरद बड़े हो बाप जी, सुनमुख जोग संजोग।। 3।।

वाणी

आज मेरे अंगण हरी आवणो जरूर।
आवणो जरूर हरी, हाजरा हजूर।। टेर।।
हरी नित चित होय, प्रेम नेम पूर।
हरी हरी हरी हरी, सार है सहूर।। 1।।
जीव प्राण सास जोग, दिल सां न दूर।
सत राम दयो सेव, भगत भरपूर।। 2।।
काळ जाळ मोह कूक करमणा करुर।
काटीअे हरी कृपाल, आय के आतुर।। 3।।
सादुळ हरी आव सही, सकल उदे सूर।
दृिष्ट एक राम दीप, निरखत हां नूर।। 4।।

साखी

सादुळ के अरजां सुणों, रिझ मोंझ दयो राम।
रिदे कंवळ समता रहत, वेर वेर विसरांम।। 1।।
सादुळ के अरजों सुणो, जग पत रांम जरूर।
चाकर राखो चरण को, हाजर दास हजूर।। 2।।

वाणी

अरज एक हरी आप, मांन लिजो मेरी।
मांन लिजो मेरी हरी, तू संभाळ तेरी।। टेर।।

ओर सां रहां अकेल, नित संत नेरी।
खजाना दिजे अखूट फेरणा नं फेरी।। 1।।
राम सरण दिन रात, चरण सरण चेरी।
ओर आस आद अंत, करत हां नं केरी।। 2।।
मैं मैं कछुं नांह मेरा तू जिकास तेरी।
आपणो विरद एसो, वडाई वडेरी।। 3।।
अनंत संत के उधार, मान अरज मेरी।
आपणे कूं लिजे आप, तारण सरण तेरी।। 4।।
सादुळ राख चंरण सरंण, सांईया सगेरी।
जास सिस नजर जोग, जीत दास जेरी।। 5।।

साखी

सादुळ के अरजां सुणो, नाम भुजन दयो नेम।
खड़ा मस्त खुमार मे, पी रस प्यालो प्रेम।। 6।।

वाणी

अरज एक हरी आप, महाराज मानं।
महाराज मांन हरी राज के राजान।। टेर।।

सरण के सुधार संत, तीन लोक तांन।
सरब जीव के सुधार संत, दीन रोज दांन।। 1।।
पल पल पल पल, पूर खांन पांन।
मुगता गताय मिलाय, सवारे समान।। 2।।
रिदे विच राम राम, थाप आप थान।
सरब संत के सुहाग, छाए छत्र छान।। 3।।
सादुळ के जीव सास, नेम हो निदानं।
अरज मेरी हरी आप, कीजे रोज कांन।। 4।।

साखी

सादुळ साहब कूं सदा, अरजां कोट अनंत।
बिरद वडे हो बाप जी, सरण सुधारण संत।। 1।।

साखी

सादुळ के अरजां सुणो, कीजे निसदिन कांनं।
काला वाला में करां, महाराज संत मांन।। 1।।
सादुळ के अरजां सुणो, सब संत काज सुधार।
अब की मेरी अरज हैं, पकड़ उतारो पार।। 2।।
सादुळ के अरजां सुणो, दया राम सुख देव।
चरण कंवळ कि चाकरी, सुनमुख दिजे सेव।। 3।
सादुळ के अरजां सुणो, अनंत उधारण आप।
अब की मेरी अरज हैं, बोलो मेरे बाप।। 4।।

वाणी

अरज एक हरी आप, मान महाराज।
मान महाराज हरी, करो सफल काज।। टेर।। ।।

संत बोल सुबध सत, आप हो आवाज।
जेथ तेथ जगत जीव, सुर आवाज साज।। 1।।
काल सो हरी कल्यांण, ओ ही काज आज।
पल पल पल पल, नेम हो नंमाज।। 2।।
सरब संत के समान, दीन रोज दाज।
अनंत वार हरी आप, लिध सिध लाज।। 3।।
सादुळ के रांम सत, सदाई सिरताज।
दया कीजे रोज दीजे, रांम वडे राम।। 4।।

साखी

सादुळ जाग सवार के, समरो सास उसास।
रट कण्ठ रसना रांम रस, वाणी राग व्रवास।। 1।।

सादुळ जाग सवार के, जाय जाय पल जाय।
वाणी राग व्रवास के, गाय गाय उठ गाय।। 2।।
सादुळ जाग सवार के, समरण राम सम्भार।
मुखर आयो मानखो वळे न वारो वार।। 3।।
सादुळ मिलणो सुझते, रती न सुझे रात।
मुरख आयो मानखो, प्राणी जाग प्रभात।। 4।।

वाणी

प्रभाते उठ जाग प्राणी, राम जी पधारे।
राम जी पधारे हरी, सरब काज सारे।। टेर।।

सपने निद्र सुतो सोई, निद्र तू नंवारे।
आज हरी अंगण आए, तान है तंमारे।। 1।।
कपट निदर रहत कांई, अज्ञाने अंधारे।
जाग जाग जाग जाग, सूझते सवारे।। 2।।
रांम रांम रांम रांम, धीर दृढ़ धारे।
अंत संत आगे उधरे अनतां उधारे।। 3।।
सादुळ निझ मूल सोई, मानीये मनारे।
उलट मिलो आप मांह, क्यां फिरो कंनारे।। 4।।

साखी

सादुळ जाग सवार के, निद्रा तज मन नेह।
मानखो रतन अमोल मन, अवसर आयो एह।। 1।।

वाणी

प्रभाते उठ जाग प्राणी, उलट रांम आए।
उलट राम आये हरी, वेग ले वधाए।। टेर।।
सपने नीदर सूतै सोई, महल ते मण्डाए।
जाग देख उलट जोय, पल न रहत पाए।। 1।।
अज्ञान निद्र जांण एह, लोभ चित न लाए।
मृग तृस्या दौड मन, गांठ को गंमाए।। 2।।

सतगरु की कीजे सेव, जगत संग न जाए।
चरण कवल धार चित, गुपत राम गाए।। 3।।
मैं मैं कछु नांह मेरा, करणी न कुमाए।
राम आए किनी रिज, मुक्त में मिलाए।। 4।।
सादुळ निझ मूळ सोई, सकल में समाए।
उलट मिलां आप, मांही, धार मूल म धाए।। 5।।

साखी

सादुळ जाग सवार के, पल पल खडे पुकार।
रसना कण्ठ राम रस, समरण सार सम्भार।। 1।।
सादुळ जाग सवार के, जोग प्रगट सो जांण।
उलटा सुलटा अथग है, मुक्ता गत मेहरांण।। 2।।

वाणी

प्रभाते उठ जाग प्राणी, राम रस लिजे।
राम रस लिजे हरी, प्रेम रस पिजे।। टेर।।

पांचौ को प्रसंग प्राण, दृष्ट पूठ दीजे।
सुबध बांण जांण सत, ध्यान धीर धीजे।। 1।।
जप तप वरत जोग, बहड छोड बीजे।
राम राम राम राम, मुक्त मैं मिलीजे।। 2।।
एक मान अरज एह, रिदे में रहीजे।
उलट सुलट मांह आप, परत के पतीजे।। 3।।
सेवाराम सतगुर, दया दान दीजे।
सादुळ राख चरण सरण, कृपा एह कीजे।। 4।।

साखी

सादुळ जाग सवार के, प्रभाते प्रभात।
रांम रांम समरण रिदे, वडा गरहण एह वात।। 1।।

पतव्रत को अंग राग रामकली वाणी

प्रीया हमारे जीवण प्यारे, निख छन पल एक नांही न्यारे।
प्रीया हमारे जीवण।। टेर।।

खोट खजाना लागे खारे, धीरज धीर तमारो धारे।। 1।।
तम हम कूं गरह बांही तारे, अनंत वार लियो ओधारे।। 2।।
व्रहम रस आतम चीण विचारे, चेतन खेले फाग चोधारे।। 3।।
हर हर मोटे भाग हमारे, तम हो मेरे हम तंमारे।। 4।।
सादुळ राम स्नेही सारे, वंदण मेरी वारे वारे।। 5।।

साखी

सादुळ प्री एक सत हैं, मेरे चितमन मांह।
प्री वन ओर परस कूं, नजरे देखां नांह।। 1।।

वाणी

प्रीया हमारे जीवण प्राणी, पल पल प्री परचे परचांणी। प्रीया हमारे।। टेर।।

कुटब कबीले तज कुल कांणी, आरत रांम वसीले आणी।। 1।।
खेल खेलारे चतुरस खांणी, जो तेरी गत हम नहीं जांणी।। 2।।
नूर नजर में नांम नीसांणी, शब्द समागम मांह समांणी।। 3।।
तंम हो प्यारे पेटो तांणी, प्रतक सब सां नियार पछांणी।। 4।।
सादुळ उलटे सुलट समांणी, बोल हरी रस अमरत बांणी।। 5।।

साखी

सादुळ प्री एक सार हैं, एक प्रीव की आस।
गरहण हस्त मेरो गरहयो, दंन दंन जाके दास।। 1।।

वाणी

तुम ठाकर हम चाकर तेरे, चरण कवळ के राखो चेरे।। तुम ठाकर।। टेर।।

घट मांही सो घेरे घेरे, नांम स्नेही नेरे नेरे।। 1।।
जो साहब के साहंब जेरे, फेरा जामे फेर न फेरे।। 2।।

मेरा वारस साहब मेरे, दिळ मांही कर दिळवर द्वेरे।। 3।।
सादुळ के हो सैंण सगेरे, वंदण मेरी वेरे वेरे।। 4।।

चिताणी को अंग राग रामकली।

सादुळ सेवा संत की, रिदे राम को राज।
एह जीव उद्वरण कूं, कीजे दूनो काज।। 3।।
सादुळ सेवा संत की, राम भुजन दंन रेण।
एह जीव उद्वरण कूं, वेहद दूनो वेण।। 4।।

वाणी

सेवा कीजे संत की, संत राम सभारो।
दूनां वातां दरस हैं, व्रहम आप विचारो।। टेर।।

प्यारे राम मानख्यो रतन अमोल हैं, वाह आयो वारो।।
करणा सुकरत कीजीए, निझ नांम नंजारो।। 1।।
प्यारे रांम चोरी जारी चपेटका, हूं हूं कर कर हारो।
आप हथे मांहां आपरो, क्यां कीजे कारो।। 2।।
प्यारो राम मोटो बांधयो मुरखे, भरमां को भारो।
ओखो होसी अंत सिर मन तेरो मारो।। 3।।
प्यारे राम मीठो कर कर मेलतो, खट रस अंत खारो।
राम संता सां रोसणो, चोकस जमरो चारो।। 4।।
प्यारे राम दया गरीबी दीनता, धन धीरज धारो।
सत संगत हर संत की, तन मन को तारो।। 5।।
प्यारे राम सादुळ उलटे संघ में, समता गत सारो।
रदे कवळ में राम हैं, थिर थाणो थारो।। 6।।

साखी

सादुळ सेवा संत की, हर हर समरण होय।
एह जीव उद्धरण कूं, देखी वातां दोय।। 5।।

वाणी

सेवा कीजे संत की, समरो हर सोई।
चेतन वचने चालता, दिन दीपक दोई ।। टेर।।

कूडी चाडी कुटलता, लुंटा नर लोई।
होतब कीया हमसो, हमारे होई ।। 1।।
चुतरासी को चालणो, ध्रण दीरग धोई।
तेरा किया तुम कूं, तुम पिरमो तोई ।। 2।।
मरणे के दिन मुरखा, रख वाला रोई।
एक वसीले उबरे, खम में खळ खोई ।। 3।।
प्यारे राम, नैण वैण अंग निरमला, संत उजल सोई।
सेवा कर अण संत की, हर समरण होई ।। 4।।
प्यारे राम सादुळ सार समाप हैं, लेखो नर लोई।
दे टुबकी दरीया मांही, ज्यू त्यूं मिल जोई ।। 5।।

साखी

सादुळ सेवा संत की, राम भजन नित रोज।
अे दूनो कारज अखे, खोजी आतम खोज।। 1।।

वाणी

राम सरम दिन रात के, संत की कर सेवा।
जप तप साधन जोग है, राम जप तप साधन जोग।
ओर न कोई एवा ।। टेर।।

प्यारे राम भोम गउ गज भारजा, दरब कोटे देवा।
दंन दंन तोले हेम दे कुळ ओला केवा।। 1।।
वेद न जांणे वारता, अेसा भेद अभेवा।। 2।।
प्यारे राम सरग सहेला सुर असुर हैं, आसा उलझेवा।।
आपे उलझयो आप सां, सो नहीं सुलझेवा।। 3।।
प्यारे राम अनहद अगम अपार हैं कुण जांणे केवा।
जीता मृतक हर जान हैले ले सुख लेवा।। 4।।

प्यारे राम सादुळ दूनो सत है, तारण कूं तेवा।
बीजा नहीं बरोबरी, जन साहेब जेवा।। 5।।

साखी

सादुळ साहेब संत के, सरण चरण सुनमुंख।
दया गरीबी दीनता, सदा हजुरी सुख।। 1।।

व्रहम को अंग राग धनासरी।
संत को अंग संत को अंग।

साखी

सादुळ एह अंग संत को, सहजे शील संतोक।
समता गत जन संत की, लखे न गत त्रह लोक।। 1।।
सादुळ एह अंग संत को, दया भाव दरसाव।
नेण वेणं अंग निरमला, चित मन हर जान चाव।। 2।।
सादुळ एह अंग संत को, उतम गत आधीण।
अनहद अगम अज्ञाद सो, पूरण व्रहम प्रवीण।। 3।।
सादुळ एह अंग संत को दुरबल दास दरस।
राम प्यारे राम सां, पल पल अरस परस।। 4।।

वाणी

टेर।। संत मिले दंन सोई, सुकरत हैं दंन सोए। संत मिले दन.....
संत सदाई सुख के सागर, जीवां दंन दंन जोय।। 1।।
संत मिले जब राम सनेही, हर संता मै होया।। 2।।
एको संत मिलया अजवालो, दुरजन ढाया होय।। 3।।
हर संता संग उजल होई, धागा तन मन धोय।। 4।।
सुख पायो संता की सतसंग, लेख नरदभा लोय।। 5।।
संत राम को एक सरूपा, कुजरत देखो प कोय।। 6।।
सादुळ संत मिलया सुखपायो, संत हैं साहेब सोय।। 7।।

साखी

सादुळ मेले संत के, आत राम उदोत।
राम दोवाई राम की, जले वदन में जोत।। 1।।

वाणी

आज उमंग मेरे अंग अंग, संत मिळे सुख सागर। आज उमंग मेरे।। टेर।।

आठ पोहर लागी धंन एसी, जोग राम को जागर।। 1।।
प्रेम पिये संत भर भर पयाला, ज्ञान हरी रस गागर।। 2।।
संत सधीर मिल्या मुझ सहजे, नहीं को चाला नागर।। 3।।
सतलोक में मेलो संत को, अनंत सतां को आगर।। 4।।
सादुळ संत सुखां के सागर, आतम राम उजयागर।। 5।।

साखी

सादुळ मेलो संत को, अनहद ज्ञान उचार।
पूरण व्रहम संत पूरणा, तंत निझ तंतसार।। 6।।

पतव्रत को अंग राग भेरवी साखी

सादुळ लगन जंन संत की, लग रही साहब लग।
सरणाई सतगुरु सरणै, अरजी चरणा अग।। 1।।
सादुळ लगन जन संत की, सुनमुख साहब संग।
रात दंना लागो रिदे, राम भुजन को रंग।। 2।।
सादुळ लगन जन संत की, साहब सां सनमुख।
पूरे गुरु प्रताप सां, दूर थये सब दुख।। 3।।
सादुळ लगन जन संत की, मिल रही हर साहब मांह।
जैसी मछली जल मंही, न्यारी कबहू नांह।। 4।।

वाणी

लगन मेरी रे राम सां लागी, राम सां लागी लगन मेरी रे।
राम सा लागी..................टेर।। अरध पद।।

सत शुब्ध को लागो सटको, जब में सूती जागी।। 1।।
दीपक हसते सतगुरु दीयो, भरमना मन की भगी।। 2।।
उलटो सुलटो बाहर अन्धर, सनमुख साहब सागी।। 3।।
सादुळ चरण सरण सरणाई, रहता गत अण रागी।। 4।।

साखी

सादुळ लगन जन संत की सनमुख रांम समान।
हेत प्रीत नित हाजरी, निस दंनसार निधांन।। 1।।

वाणी

राम सां मेरे लिए दिळ राजी, दिळ राजी राम सां।
मेरी द्विळ राजी................ अरध पद।। टेर।।

चित मन चाकर राम चरण को, निसदंन नेम नंमाजी।। 1।।
सहज संमाना राम सनेही, एक समागम द्धिल आजी।। 2।।
ले ले प्री अखीयां उर लायो, लोक सखी सब लाजी।। 3।।
सादुळ चरण सरण सरणाई, मेले इसतक माजी।। 4।।

साखी

सादुळ लगन जन संत की, हर चरणां सां हेत।
अरस परस आधीनता, सुनमुख सदा सुचेत।। 1।।

संत मिलाप को अंग राग तोड़ी

साखी

सादुळधन धन धन संत धन, मिलण धन धन।
सपरसण भये शरीर सुख, जत सत पूरा जंन।। 1।।
सादुळ सोई दंन सफल, संत मिलण दंन सोय।
धन धन दंन पहोर धन, हर हर बो बो होय।। 2।।
सादुळ सोई दंन सफल, सो दंन मेळो संत।
धन धन दंन पहोर धन, मिलयो संत मम मंत।। 3।।

सादुळ सोई दंन सफल, संत दंन मेळो सोय।
सोय मेलो संत सां, हर सां मेळो होय।। 4।।

वाणी

टेर– धन धन संत मिले दंन धन हैं, लग रही प्रेम लगन है।
धन धन संत मिले दंन धन हैं धन धन..........

धन धन पहोर पल धन धन, मगन भयो तनमन है।।
माया मोह नहीं को मेरो, अे सब जूठ अगन हैं।
अत अत मोह तजे इया अगनी, हर को सो हर जंन हैं।। 1।।
प्रेम घूट अचनक जंग पीवे, जाके प्रेम जलन हैं।
जाले मन सिरे मट जोगी, सब घट सकल सजन हैं।। 2।।
गुरगम गरक रहत गलतांना, भनभजन एक भुजन हैं।
वरत न वात वेण नहीं वाणी, अनहद अखण्ड उजंन हैं।। 3।।
सरबंग सकल सकल सरबंगी, तास गरु को तंन हैं।
चरणो लाग रहत गत चेतन, दरसण कर दंन दंन हैं।। 4।।
साहो सेवा अकल सकल में, सादुळ चरण सरण हैं।
मेहर आतर जन की नो मेळो, मेळे मांह मिलन हैं।। 5।।

सारवी

सादुळ सोई दंन सत, मेलो संत मिलाप।
सकल सु कारज सफल हैं, सकल सु काज समाप।। 1।।

वाणी

सत सत संत मिले सत सत हैं सत में चित मसत हैं।
सत सत संत मिले सत सत हैं, सत सत सत सत सत
रहत संत सत, ज्ञान गता संत गत है।
सत सत.............. टेर।।

अखण्ड व्रहम अंनत में एको, ऐके मांह अनंत हैं।
आपा मेट मिले जन उलटे, वेण न वात वरत हैं।। 1।।

ज्ञाने बोले खेले ज्ञाने, ज्ञान समे सत सत है।
संत जन ज्ञाने समझ समावे, अनहद संत सत सत है।। 2।।
सत सत बाणी समझ समांणी, प्रेम मुकत सत पत है।
सत सत शबद समागम सनमुख, दंन दंन पूरण दत है।। 3।।
जीवत मरतक संत गत जागत, जोग नहीं को जत है।
परतक दीप सत शब्द परवाणो, फेर तखत सिर फत है।। 3।।
सादुळ समझ मिलो जन सतां, आप मिलयो अवगत है।
निरदावा सकल सां न्यारा, सो संत जन सत सत है।। 4।।

साखी

सादुळ सो दंन सत सत, सो दंन संत मिलाये।
मिल सलुता सायर मांही, सायर लहर समाये।। 1।।

राग तोड़ी- अरजां को अंग- साखी

सादुळ लीजे तो सरण, दीजे मोज दरस।
चाकर नंस दंन चरण को, पल–पल अरस परस।। 1।।
सादुळ लीजे तो सरण, मोज दयो नंझ मूळ।
चरण कवळ की चाकरी, सो मांगे सादुळ।। 2।।
सादुळ लीजे तो सरण, चरण कवळ में चाव।
दया नजर भर दीजिए, भगत मुगत सत भाव।। 3।।
सादुळ लीजे तो सरण, रीज मोज दयो राज।
हम हजूरी हाजरी, तम मेरे सिर ताज।। 4।।

वाणी

मेरे तुम हो रामइया, सरण सुधारण संत।
सरण सुधारण संत, सरण सुधारण संत।
मेरे तुम हो रामइया, सरण सुधारण संत।। टैर।।

दयाल हो मेरे कुं देवा, आद मध्य पूरण अंत।
अपणे सरणे कोट आगे, उधरे संत अनंत।। 1।।

अनहद उदे अखे वे अंत है, वात कहे वेदंत।
निकस समावे पीछे नाहीं, गजा देख गेदंत।। 2।।
अगम अभेद अरुप अनाहद, कोई न नारी कंत।
सहजे सहजे समझ समायो, वीच रिदे वे अंत।। 3।।
निरख परख सकल सां नयारा, चाह न जाकै चंत।
सतगुर के दर पे सनमुख, नैहचै रहां नंचत।। 4।।
सादुळ चरण सरण सरणाई, तम में कौ तंत।
हेत प्रीत हार गल होये, खरी रिंदे में खंत।। 5।।

साखी

सादुळ लीजे तो सरण, कीजे मेरो काज।
चरण कंवळ की चाकरी, दीजे दंन दंन दाज।। 1।।
सादुळ मेरे राम सत, साहक पूरण सोय।
कोट कोट कै कर कृपा, सनमुंख रहो संजोय।। 2।।

वाणी

मेरे तो तुम हो रामइया, वीच रिदे विश्वास।
मेरे तो तुम हो रामइया, वीच रिदे विश्वास।
विच रिदे विश्वास, विच रिदे विश्वास।
मेरे तो तुम हो रामइया, विच रिदे विश्वास।। टेर।।....

आद मध्य अंत पीछे आगे, एक तमारी आस।
रिदे कवळ में नंसदंन राजे, समरण सास उसास।। 1।।
जप तप तीरथ होम व्रत जिग, नुखतो और नरास।
सोई हो सो हो तम साहब, पूरण मेरे पास।। 2।।
सूरत मूरत मांह समाणो, अगम अखे अभन्यास।
निरख परख दूनां सां न्यारो, रंग रूप नहीं रास।। 3।।
सादुळ चरण सरण सरणाई, दंन दंन तेरो दास।
तम हो ठाकर हम चाकर तेरो, खिजमत दार खवास।। 4।।

साखी गमो अरजां को.....

सादुळ सकल समाप है, गढ मढ देवळ गांम।
जल थल मांही सब जगत, धरीयो मांह सब धामं।। 1।।
सादुळ सकल समाप हैं, में ते सारी मांड।
मण्डप मंडता हर महीं, भोपा भरडा भाण्ड।। 2।।
सादुळ अरज सरूप हैं, अनहद आप अरुप।
चाकर राखो चरण को, संत को दयो सरूप।। 3।।
सादुळ अरज सरूप है, सुणणं रुम तम सार।
साहब तम भव संध सां, पकड उतारो पार।। 4।।

वाणी

टेर- मेरे तो तम हो रामइया वेर वेर विसरांम।
मेरे तो तुम हो रामइया, वेर वेर विसराम।
वेर वेर विसराम, वेर वेर विराम।। .... मेरे तो...

माल रिजक धन माया मेरे, गढ़ मढ देवल गांम।
तुम हो मेरे नाव तारण कूं धीर धरण कूं धाम।। 1।।
परचा सिध हो पीर पैकम्बर, रिध सिध तम हो रांम।
पल पल मेरे प्रेम पीयण कूं, ताता रुचता तांम।। 2।।
प्रेम हरि रस पूरण पूरा, जद तद आठे जाम।
मात-पिता तम बंधव मेरे, दौलत तम हो दाम।। 3।।
सादुळ चरण सरण सरणाई, निरभे कूं नंझ नांम।
है नंत तुम कूं अरज हमारी, अनहद अखे अनाम।। 4।।

साखी

सादुळ अरज सरूप है, बूझो मेरे बाप।
पूरणा हम कूं पूरणा, सरबंग सार समाप।। 1।।

वाणी

मेरे हो तुम हो रमइया परवाणो परवाण।
परवाणो परवाण, परवाणो परवाण।
मेरे हो तुम हो रामइया, परवाणो परवाण।
मेरे तो........... टेर......................।।

हर चरणा के दास हजूरी द्धरवाजे दरवांण।
हर जी तुम कूं अरज हमारी, बहडे बांणो बांण।। 1।।
महाराज बुध रंचक में हां, अत महामुंढ अजाण।
तम जैसा हम जाण्यो तम कूं, साहब जाणत सुंजाण।। 2।।
तीन लोक के लाग तमासे, तनमन ताण तांण।
सनमुख लियो मुझ जीत किले सिर, निरभे धाव, निसांण।। 3।।
सादुळ चरण सरण सरणाई, निसाणो निरवाण।
दंन दंन दीपक दीप दिसो दिस, भललल प्रगटयो भाण।। 4।।

साखी

सादुळ सा हक संत को जदतद राम जरूर।
सार सनेही सनमुख, थान थाप थिर थूर।। 1।।

राग सोरठ अरज को अंग - साखी

सादुळ साहब संत के, अनंत वार अनंत।
बिरद वडे हो बाप जी, सरण सुधारण संत।। 1।।
सादुळ साहब संत के, सहायक है सनमुख।
सुख देवा सुख सागरा, दूर करे अब दुख।। 2।।
सादुळ साहब संत के, वेर वेर विसरांम।
जेथ पुकारे पूरण जठे, रिध सिध रोजी रांम।। 3।।
सादुळ साहेब संत के, सहायक सुख री सीर।
अब की मेरी अरज है, पार पुजायो पीर।। 4।।

वाणी

टेर- सांइया अपणो विरद संभारण हो, हम तेरे द्वर का चाकर हां।
तम हो मेरे तारण हो, सांइया..........। पद।।

मनडी पूत निहाई के मांही, जब सिरीयां उठी जारण हो।
सिरीयां इक सत राम संभारे, ठण्डा राख्या ठारण हो।। 1।।
थम्भ फोड़ निकसयो हर थम्भ सां, धर दे नरसंघ धारण हो।
हरणा कंस नख धारे मारे, पैहलाजा पत पारण हो।। 2।।
कबीर घर मोसे कारज, ढारे बाळध ढारण हो।
सकल वेख कूं दियो समांनो, संत के काज सुधारण हो।। 3।।
मीरां कूं राणे विष मेल्यो, मोसर दे जब मारंण हो।
भाव अमीरस आतम भीनी, टेक रखी दुख टारण हो।। 4।।
दादू कूं मुगलां दुख दिनो, मेल्यो हस्ती मारण हो।
वंदन कर दादू कूं वदे, आओ राम अवारण हो।। 5।।
अनंत कोट संतां घर आयो, कुळ धारे संत कारण हो।
हम की आई वेर हमारी, आयो राम उवारण हो।। 6।।
संतां को सुख दे सुख सागर, ठार रिदो दिळ ठारण हो।
वेर वेर वेर वेर, वारण वारण वारण हो।। 7।।
सादुळ के अरजां सुण सांई, सनमुख कारज सारण हो।
चरण कवळ को राखो चोरो, आतम जीव़ उधारण हो।। 8।।

साखी

सादुळ सहायक संत के, जद तद रांम जरूर।
अबकी मेरी अरज है, हित कर सुणो हजूर।। 1।।

वाणी

सांइया जो विरद अपणो जाणो हो, अपणे कूं लिजे कर अपणो।
ठाहा दे ठीक ठीकाणो हो, सांइया अपणो विरद संभरण हो।। टेर।।

सब संता कूं सार सुधारण, नांम रांम निसाणो हो।
ज्ञान धन समरण गुण गावणं, परचा सुध परचाणो हो।। 1।।

कबीर कमाल और संत केते, समझे समझ समाणो हो।
संत तमारे तम सतां के, तूं हीज पेटो तांणो हो।। 2।।
संता के सुख दे सुख सागर, थाप रिदे थिर थाणो हो।
बोध सुध सत अणभे बांणी, बोलो बांणा बांणो हो।। 3।।
बह संता की गरहे हथ बांही, पल में पार पहचाणो हो।
हम की आई वेर हमारी, कीजे राम कल्याणो हो।। 4।।
सादुळ चरण सरण सरणाई, आप नजर सिर आणो हो।
चाकर अपणो राखो चरणे, पूरथ दे, परवा़णो हो।। 5।।

साखी

सादुळ सहायक संत के, जिउ जन समरे जेथ।
जेथ पुकारे संत जठे, तम हो पूरण तेथ।। 1।।

साखी आगे तानक को अंग

सादुळ तानक संत की, सब कूं दिये संदेश।
साहब सोदो सिर सटे, क्या मूंडावे केश।। 1।।
सादुळ तानक संत की, जगत बराबर जांह।
साहब सोदो सिर सटे, कंठी बांधो कांह।। 2।।
सादुळ तानक संत की, सब कूं दे समचार।
कंठी दयो तिलक क्या, भगत वना सिर भार।। 3।।
सादुळ तानक संत की, सकळ वेख सिर सेल।
साहब सोदो सिर सटे, बधो न बीजा बेल।। 4।।

वाणी

टेर– मन रे मतलब है सब मन को, चोर चपेटक नाटक चेटक।
तोत तमासो तन को, मन रे मतलब है, मन सब को।। पद।।...
बह चेला कर कंठी बांधे, धूतावण है धन को।
बग जिइयां बेसे आंखे, बूंदे, बांधे ध्यान बगन को।। 1।।

मंन मनोरथ माया मांही, वनवासी क्या वन को।
जप तप साधन साधे, जागी, छेड़ मने छन छन को।। 2।।
वेद कहे शास्त्र संत वाणी, वेमुख चोर वचन को।।
कथता बकता जप तप करता, आवे, जमं अचन को।। 3।।
सत शुब्ध लगो सतगुर को, भाण्डो फूटो भन को।
दीप दिशो दिश साहब दरसे, कहां न कन को कन को।। 4।।
सादुळ कृपा सतगुर संत की, देख्यो दीपक दंन को।
उलटो सुलटो बाहर अन्धर, जाण्यो साहब जन को।। 5।।

साखी

सादुळ तानक संत की, खटर वेख सिर खील।
जो जन माने गरहे जन, डिगे न जाको डील।। 1।।

वाणी

नत नत नाट करे सब नट को, जप तप साधन साधे जोगी।
लोक तमासा लटको।। नत नत..........।। पद।।.......

खावण पिवण हसंण खेलंण, चयार दनां को चटको।
क्यां मन माया असुड़क कीजे, झेडो झगड़ो झटको।। 1।।
बहै चेलै कर कंठी बांधे, सब माया को सटको।
मोख आरती माया मांगे, अंत माया में अटको।। 2।।
कथता बकता फिर फिर कहता, रंग राग को रटको।
मत मतलब सां चेला मूंडे, मन माया को मटको।। 3।।
सादुळ कृपा सतगुरु संत की, भूल मिटयो मन भटको।
मथरा काशी घट के मांही, घट में बूझयो घटको।। 4।।
सादुळ दीप दिशो दिश सूरज, परचो पीर प्रगटको।
प्रगट पीर देख्यो प्रगट, अनहद अखे अघट को।। 5।।

साखी

सादुळ वेख सकल सिर, संत को तानो साख।
सुधा चाले सु सत है, दूजां कूं कहो दाख।। 1।।

राग-सारंग - साखी

सादुळ व्रहम वादल सदा, वरसे बह वरसाल।
झड बरसे निझर झरे, रीझे राम रसाल।। 1।।
सादुळ व्रहम बादल सदा, अमृत बूंद अमोल।
झड वरसे नीझर झरे, बुध सुध अनहद बोल।। 2।।
सादुळ व्रहम वादल सदा, प्रेम बूंद की पोट।
झड वरसे नीझर झरे, चहू वल चोटा चोट।। 3।।
सादुळ व्रहम बादल सदा, उलट सुलट है एक।
झड बरसे नीझर झरे, अनहद बूंद अनेक।। 4।।

वाणी

व्रहम बादल वल वरसण आयो, रीझ मेहर कर रांम वे।
व्रहम वादल वल........................।। पद।।

वल वल वरसे दामण दरसे, व्रहण को विसराम वे।। 1।।
वरसे मेह झड चमके विजली, जल हर आठे जाम वे।। 2।।
मुक्ता मुक्त मुक्त जल मुक्ता, निरत जलो जल नाम वे।। 3।।
मेहर हुई जब सनमुख मेलो, धन अनहद की धाम वे।। 4।।
सादुळ सायर उलट समाणो, गुपत अगढ गढ गाम वे।। 5।।

साखी

सादुळ मेहर कर सदा, वरसे व्रहम विचार।
मुक्तागत कर कर मेहर, धरे अखण्डे धार।। 5।।

व्रहम वादल वल वरसण आयो, दिशो दिश दामण दरसे वे।
व्रहम वादल वल वरसण आयो, दिशो दामण दरसे वे।
दिशो दिश दामण दरसे वे,..................।। पद।। टेर।।

वादल बीजली वल वल वरसे, तिउ तिउ तनमन तरसे वे।। 1।।
पलक न न्यारी प्रीतम प्यारी, प्रीतम के सुख परसे वे।। 2।।
सदा सोहागण प्रितम सनमुख, हाजर होई हरसे वे।। 3।।
सादुळ सतगुरु सेवारामा, व्रहम वचन सत वरसे वे।। 4।।

साखी

सादुळ सतगुरु संत सत, सत वचन सत सत।
झउ वरसे नीझर झरे, आतम गत अबगत।। 1।।

मेहर सरुप को अंग... राग सारंग

साखी

सादुळ व्रहम वादल, सदा, गहरी घोर गुडंत।
झड वरसे नीझर झरे, सो जल पीवे संत।। 1।।
सादुळ व्रहम बादल सदा, वरसे प्रेम वमेक।
झड वरसे नीझर झरे, उलटो सुलटो एक।। 2।।
सादुळ व्रहम वादल सदा, मेह वरसे कर मोज।
झड वरसे नीझर झरे, रीझ करे नित रोज।। 3।।
सादुळ व्रहम वादल सदा, वरसे वेरो वेर।
झड वरसे नीझर झरे, सनमुख सांझ सवेर।। 4।।

वाणी

टेर– व्रहम वादल वल वरसण आयो, गिनन वलो वल गुड़ के वे।
व्रहम वादल वल वरसण आयो, गिगन वलो वल.... अरध पद।।

वादल बीज दशो दिश वरसे, झम झम अहनिस झड़ के वे।। 1।।
अलख अरुपी वरसे अहनिस, धर अम्बर धुड़ के वे।। 2।।
सूभर भरयो हर हर सायर, छन छन लहरे छुड़ के वे।। 3।।
सादुळ सायर उलट समाणा, बाहर भीतर बुड़ के वे।। 4।।

साखी

सादुळ व्रहम वादल सदा वरसे चमके वीज।
झड़ मांही लागी झड़ी, बूड़ो बोहयो बीज।। 5।।

वाणी

व्रहम वादल वरसण आयो, पल पल पूरण प्रेम वे।
व्रहम वादल वरण आयो, पल पल पूरण.... ।। अरथ पद।।

मैहर सरूपी सतगुरु मेरो, निस दंन पूरण नेम वे।। 1।।
वादळां मेह वलो वळ विजली तन मन वरसे तेम वे।। 2।।
अनहद अगम अपम्पर अपरम, कुणं जांणे केम वे।। 3।।
सादुळ सायर सरबंग अंग संग, उलटो सुलटो एम वे।। 4।।

साखी

सादुळ वरसे व्रहम सदा, निरख उच नं नीच।
बाहर मिट गयो बूझणो, वहता रहता वीच।। 6।।

सुरत उपदेश को अंग - साखी

सादुळ है एक राम सत, सील डील जत सत।
दरस परस दीदार द्विल, गाए धाए अवगत।। 1।।
सादुळ है एक राम सत, उलटो सुलटो एक।
आरत वारत एक है, अवरस तजो अनेक।। 2।।
सादुळ सनमुख एक सत, पल पल निरख पीव।
सरण चरण हर सुन्दरी, जोखो लगे न जीव।। 3।।
सादुळ हर हर हर समर, अवर तजो मन आस।
सतगुर के चरणा सरण, दंन दंन आगे दास।। 4।।

वाणी

सुरत सोहागण खेले प्रीया संग, प्री एक निरखो प्यारी वे।
प्री एक निरखो प्यारी वे, सुरत सोहागण खेले प्रीया संग।
प्री एक निरखे प्री एक निरखे............।। अरथ पद।।

ममता शोक फिरे मतवारी, मुक्ता विष दे मारी वे।। 1।।
नेम व्रत प्रीतम को नांही, चित चिरत विभिचारी वे।। 2।।
सिध वचन प्रीतम सां, सनमुख, शील वरत सणगारी वे।। 3।।

दया करे प्रीतम सुख दिया, वाह वाह भली विचारे वे।। 4।।
सुन्दर रूप रसा जब सोह, नेम व्रत पत नारी वे।। 5।।
में प्रीतन की प्रीतम मेरा, संग हम तम एक सारी वे।। 6।।
अजब तमासो मांही आतम, तन तन अन्दर तारी वे।। 7।।
जिउ जिउ जण जण सरब जोउ, तिउ तिउ तुरत तेयारी वे।।8।।
सादुळ खेल चरण गुर सरणे, सनमुख हरदम सारी वे।। 9।।

साखी

सादुळ है एक राम सत, मेरे तन मन मांह।
चित रंग बह माया चिरत, नजरे आणणा नांह।। 1।।

वाणी

सुरत सोहागण खेले प्रिया संग, पल पल प्रितम पास वे।
सुरत सोहागण खेले प्रिया संग, पल...............।। पाद।।

चरण कवळ की निसदंन चेरी, दंन दंन आगे दास वे।। 1।।
वात विजोगे प्रीतम विछडे, उण दंन रहा उदयास वे।। 2।।
में प्रीतम की प्रीतम मेरा, अवर न मेरे आस वे।। 3।।
सादुळ अंधर बाहर सोई, सोई जीवण सास वे।। 4।।

साखी

सादुळ वरसे व्रहम सदा, निरख उच नं नीच।
बाहर मिट गयो बूझणो, वहता रहता वीच।।6।।

साखी

सादुळ एक प्रीतम सदा, सनमुख दर सोय।
जे सिर निस दंन नजर जोग, हक हजूरी होय।। 1।।

साखी

सादुळ मेहर कर सवड, वरसे वेरो वेर।।
झड़ मांही लागी झड़ी, फेरे फेरे फेर।। 2।।

सादुळ साहब सनमुख, निस दंन कृपा निधान।
कोट कोट के कर कृपा, निझर झरे नित्यान।। 3।।
सादुळ है साहब सदा, सनमुख मेहर सरुप।
झड़ बरसे निझर झरे, उलटो सुलट अरुप।। 4।।

वाणी

मेहर सरूपी सतगुरु मेरो, व्रहम वळो वळ वरसयो जी।
व्रहम वळो वळ वरसीयो, मेहर सरुपी सतगुरु मेरो।
मेहर सरूपी सतगुरू मेरो व्रहम............।। पद।। ....

कृपा कर सतगुरु अपणो कियो, प्रेम पीयालो पुर कर पीयो।
तन मन अंधर तरसयो जी।। 1।।
जो जन मरत सो फिर जीयो, लगन करे गुरु चरणे लीयो।
हेत समागम हरसयो जी।। 2।।
कीयो सो हर को व्रत कीयो, दीपक कर द्विळ अंद्धर दियो।
दिवस दिसो दिस दरसयो जी।। 3।।
सेवा गुर को सरणो लीयो, जब ही सादुळ जुग जुग जीयो।
पूरण दरसयो परसयो जी।। 4।।

साखी

सादुळ कर नित मेहर सिर देवळ दीनां नाथ।
झड़ बरसे निझर झरे, सब संता के साथ।। 5।।

वाणी

मेहर सरुपी सतगुरू मेरो, उलट सुलट वळ आयो जी।
मेहर सरूपी सतगुरु मेरो, उलट सुलट..... पद।।

मेहर सरूपी साहब मेरो, जो साहब को साहब जेरो।
गुर गम मांही गायो जी।। 1।।
मैं मांही कछुए नही मेरो, सरणो तेरो सांझ सवेरो।
सतगुर संत समझायो जी।। 2।।

भेद शब्द सत वाजे भेरो, द्विल मांही द्धिळवर को द्धेरो।
प्रेम हरी रस पायो जी।।3।।
चरण कंवळ को हां हम चेरो, वंदणा मेरी वेरो वेरो।
सादुळ समझ समायो जी।।4।।

साखी

सादुळ जंन संत सतगुर दया, नजर भर दीन।
सारा बूड़ा संध में, मुक्त जलो जल मीन।। 6।।

साखी

सादुळ साहब कूं सदा, वडपण व्रिद वडेर।
झड़ बरसे निझर झरे, सब दिन सांझ सवेर।। 1।।

वाणी

बोलो राम हमसां हस हस बोलो, बोलो राम।
विकस विकस हस हस वतलाओ। मिल मिल करां मोहेलो।
बेलो राम हस हस बोलो..........।। पद।।

जब बोलो जब ही मिट जावे, रात दनां को रोलो।। 1।।
बोलयो तुम हम सनमुख बूझयो, तहां न मासो तोलो।। 2।।
अनहद शब्द सुणण कूं आयो, अब हर बोल अबोलो।। 3।।
बुध सुध बोल समागम बोलो, खोज गुगट हर खोलो।। 4।।
लहरो राम भुजन को लागो, झड़ अनहद को झोलो।। 5।।
सादुळ राखे चरण के सरणे, गरह कर अपणो गोलो।। 6।।

साखी

सादुळ के अरजां सुणो, रुप देखायो रांम।
झड़ मांही लागी झड़ी, जल हर आठे जांम।। 6।।

वाणी राग-मलार-अरज को अंग

सादुळ के अरजां सुणो, वरसंण आवो वेग।
विरखा चाहे वेळ विरछ, साहब करो नं सेग।। 1।।

सादुळ के अरजां सुणो, मेहर करो महाराज।
वळ वळ चमके वीजली, अनहद घोर आवाज।। 2।।
सादुळ के अरजां सुणो, मेहर करो सिर मोह।
दंन दंन दंन तो वन दुखी, तरक न दीजे तोह।। 3।।
सादुळ के अरजां सुणो, मुक्ता वरसो मेह।
सत संगत हर समरणा, नित नित नवलो नेह।। 4।।

वाणी

वल आवो व्रज लाल कानइया, वन वन फूलयो वेलड़ीयां।
वल आवो हो......... वल आवो......... आवो हो।। पद।।

सेंहस गोपी संग संणगारी, में हां मेली मेलड़ीयां।। 1।।
मिल सहेली मनथ करो का आयो ओली पेलड़ीया।। 2।।
जियां परचे जियां प्रीव परचायो, सहजां सजणा सहेलड़ीयां।। 3।।
संग सहेलीयां सायथ भेली, हो हो हेला हेलड़ीयां।। 4।।
वनरा वन को लोक विडाणो, चल चल चल चल चेलड़ीयां।। 5।।
चित मन मांही बिजली चमके, रुं रुं रेला रेलड़ीयां।। 6।।
केळ कळा कर मोर टहू के, ढूळे ढूळे ढेलड़ीयां।। 7।।
चेतन पीव संग सनमुख चाले, खिल मिल खेले खेलड़ीयां।। 8।।
जल थल महियल तांही जांही, सरबंग संगी सहेलिड़ीयां।। 9।।
भेद अभेदू सूभर भरीयो, खलकत मांही खेलड़ीयां।। 10।।
सादुळ द्धम-द्धम सूरत मांही, छन छन रेला छेलड़ीयां।। 11।।

साखी

सादुळ के अरजां सुणो, वेग पधारो वीर।
मुक्ता गत जै सिर मेहर, सो सुख पाये शरीर।। 1।।

वाणी

वल आवो हो वल आवो, वल आवो व्रज लाल कानइया।
थी थी लाये सूं थोरड़ियां।। वल वल...........।। पद।।

वाट ते आहीयां कूं कूं कहीया, हूं हूं घत द्धी होरड़ियां।। 1।।
हूं हूं कंधीयस मूर न हलधी, गूगन जे गस गोरड़ियां।। 2।।
नंगिदि उनेतिड़ि उजोड़ि ने तिर्गह, छूं छूं हूं द्धो छोरड़ियां।।3।।
तूहिजे द्धर जी द्धर तूहिजे जी, मानो अरजां मोरड़ियां।। 4।।
मूं ते मेहणो तो ते मेंहणो, चोरी चलीए चोरड़ियां।। 5।।
में में में में मूर न कधीयस, त त त तूं तोरड़ियां।। 7।।
सिर तन मन आउ कधीयस सद्धको, घोरे घोरे घोरड़ियां।।8।।
पांण में पंहाजो पाण न परतो, कारो मुंह कियो कोरड़ियां।।9।।
सादुळ द्धम द्धम सूरत मांही, रुं रुं पव द्धे रोड़डियां।। 10।।

साखी

सादुळ के अरजां सुणो, राम सनेही रोज।
चरण कवळ की चाकरी, मन पाउ हर मोज।। 6।।

साखी

सादुळ के अरजां सुणो, अनहद पूरो आस।
वेग पधारो कर विरखा, दाखे सादुळ दास।। 1।।
सादुळ की साहब सदा, मन सुध अरजी मान।
दंन दंन दंन दनं हर दरस, दीजे हंम कूं दान।। 2।।
सादुळ की निस दंन सदा, दीन मांन आरदास।
चरण कवळ की चाकरी, पल पल चरणा पास।। 3।।
सादुळ की निस दंन सदा, मान अरज महाराज।
चाकर निस दंन चरण को, अे ही अखे आवाज।। 4।।

वाणी

वल आवो व्रज लाल कानइया, व्रहण जोयां वाटड़ियां।
वल आवो वल आवो, वल...........टैर।।

गोपी व्रहण विळळत गावे, हर वन सूनो हाटड़ियां।। 1।।
विळळत गोपी वेश विछांगे, खाली सेजां खाटड़ियां।। 2।।
मेह झड़ मांही बिजली चमके, छंन छंन छांटा छांटड़ियां।।3।।

अवला वेवस कण विध आवे, घाटज अबखा घाटड़ियां ।। 4 ।।
राखज चरण कवळ में राजे, नाट चरण मिल नाटड़ियां ।। 5 ।।
सादुळ साहब उलटा सुलटा, फड़का द्विळ का फाटड़िया ।। 6 ।।

साखी

सादुळ के अरजां सुणो, सुर कर दिजे साज।
दंन दंन दंन कर असी दया, तम मेरे सिर ताज ।। 6 ।।

वाणी

वल आयो व्रजलाल कानइया, भाल असांते भलड़ियां।
वल आवो हो, वल आवो हो.......... ।। पद ।।

पल पल बांभण रोज पूछाया, फिर फिर-पाइयां फालड़ियां ।। 1 ।।
तूंहिजे द्धर जी द्धर तूंहिजे जी, हर द्धर छो न हालड़ियां ।। 2 ।।
मेहर नजर वळ किजै मूं ते, गूरगम तूं जिऊ गालड़ियां ।। 3 ।।
रोई रोई अंखियां कीयस रतीयां, हाल वंजायम हालड़ियां ।। 4 ।।
छोड़ वंजी वेला विच छोरी, जोर न आहे जालड़ियां ।। 5 ।।
सादुळ द्धम द्धम सूरत मांही, लाल थई मिल लालड़ियां ।। 6 ।।

साखी

सादुळ अरजी द्धर सधर, आतर कल वळ आय।
चाकर कूं दे चाकरी, लीजे कण्ठ लगाय ।। 7 ।।

साखी

सादुळ वल आयो सजण, दया नजर भर दीन।
मुक्त रहत साहब मंही, मुक्त जलो जल मीन ।। 1 ।।
सादुळ वल आयो सजण, सुबुध सरुपी सोय।
सुबुद्ध सरुपी सत है, दरसां एक न दोय ।। 2 ।।
सादुळ वल आयो सजण, राम करे रिछपाल।
मेरे तारण के मुदे, सतगुरु कीध संभाल ।। 3 ।।
सादुळ वल आयो सजण, साहब मेरो सोय।
प्रेम हरीरस पूरणा हर-हर असे होय ।। 4 ।।

वाणी

वल आयो व्रज लाल कानइयो, वळ वळ पूछीयां वातड़ियां।
वळ आयो हो................ वल आयो हो............ पद।।

तो वन निसदंन तन मन तलफे, रोए रोए अंखीयां रातड़ियां।। 1।।
सतसंग तन मन घणो सोहायो, भाव रिदे सिर भातड़ियां।। 2।।
विजळी चमके वरसे वळ वळ, छन छन भीजे छातड़ियां।। 3।।
मेलो सतसंग सतां मांही, नाम राम के नातड़ियां।। 4।।
भेर भगो सिर तियां वि भेरे कू करड़ी आउ कातड़िया। 5।।
सादूळ वरसे उलटो सुलटो, पल पल राते पिरातड़ियां।

साखी

सादुळ वल आयो सजण, आतम को आधार।
चित मन को खोले चुसम, दरसण दीप दुसार।। 1।।

वाणी

वल आयो व्रज लाल कानइयो, खेलण कूं अग घर खड़ियां।
वल आयो हो...........वल आयो हो..........।। पद।।

वळ वळ चमके वरसे वळ वळ, घणे घणे घड़ियां घड़ियां।। 1।।
इसतक माजी हर द्धम आहे, अंधर बाहर खंड अड़ियां।। 2।।
द्धीद्ध द्धेखण कूं खड़ द्धरवजे, प्रात रात चरणा पड़ियां।। 3।।
सादुळ वरसे उलटो सुलटो, झड़ अंधर लागी झड़ियां।। 4।।

साखी

सादुळ आयो सजण, वरसण कूं वरसाल।
पल पल पूरण पूरणा, पावस पड़ पड़ताल।। 6।।

राग गूढ़ मलार

मान सरोवर हंसा को उपदेश को अंग।

साखी

सादुळ हंस मिल मानसरवर, करत हंस बह केळ।
मिल हंसा हर मानसर, मिल हर हंसा मेल।। 1।।
सादुळ दसो दिस मानसर, विच में हंस वेराज।
उजल निरमल हंस अंग, तिलक मोड़ सिरताज।। 2।।
सादुळ मिल हंस मानसर, मोती है बह मांह।
हेत दास चुग हर हंसा, तीर सीर हर सर तांह।। 3।।
सादुळ मेलो मानसर, दरस परस हर दास।
बण नहीं जाणे हंस बुध, निरमल चरण निवास।। 4।।

वाणी

टेर- मेळो मान सरोवर मांही, मेळो मान सरोवर मांही।
पूरण प्रेम हरि रस पायो, तंत निझ मोती तांही।
मान सरोवर मांही मेळो, मान सरोवर मांही....।। पद।।

मान सरोवर हंस मेलो, बंध जोड़ कर बांहीं।
शिस नमाउ रोज सलामी, जनहर हंसा जांही।। 1।।
हंसा झीणी गेल हंसा की, तू चल हंसचल तांही।
मंक्ता मानसरोवर मेळो, मिल रह मेळे मांही।। 2।।
जग सब बग चूण जीवां की, दौड़ माया द्धर द्धांही।
हंसा के सत संग हंसा की, नेठ बगा तहां नांही।। 3।।
सादुह मेळो मान सरोवर, छपर धोप न छांही।
उलटो सुलटो बाहर अंधर, मान सरोवर मांही।। 4।।

साखी

सादुळ मेलो मानसर, सरबंग हंसा संग।
नेण वेण हंस निरमला, उज्जल निरमल अंग।। 1।।

वाणी

हालो मान सरोवर हंसा, हालो मानसरोवर हंसा।
सनमुख सत सत शुब्द सुणावे, सब कुछ मेटे सेसा।।

हालो मान सरोवर हंसा, हालो मान सरोवर हंसा... पद।।
हंसा झिणी गेल हंसा, की, हाले को हर हंसा।
कुमक चूण चुगे निज मोती, मछली चुगे न मंसा।। 1।।
मुक्ता हंस मानसर मेलो, गये हंस लग गंसा।
सत संगत प्रतापे सतां, आप पछाणीयो अंसा।। 2।।
पांच पचीससे दिरग पापी, खेल खोहरी खंसा।
वेरी व्रहम अगन के विच में, वेग जलाओ वंसा।। 3।।
सादुळ मेरे सतगुर संत कूं, नम नम रोज नमंसा।
मान सरोवर हंसा मेळो, परसियो हंस परमंसा।। 4।।

साखी

सादुळ मेळो मानसर, हंसा संग हमेश।
मान सरोवर हंस मंही निमरळ अंक निरलेश।। 5।।

साखी

सादुळ हंसा मानसर, उजल कोट अनंत।
नेण वेण अंग निरमला, सो जन पूरा संत।। 1।।
सादुळ हंस मानसर, चूगे निरमली चूण।
जो जन हंसा रहता जठे, जठे न जीवा जूण।। 2।।
सादुळ हंसा मानसर, रहे हंसा के राज।
राम भुजन रसना रिदे, करे न दूसर काज।। 3।।
सादुळ हंसा मानसर, भुजन राम सत भाव।
नेण वेण अंग निरमला, दीप उदे दरसाव।। 4।।

वाणी

संतो मान सरोवर सोई संतो मानसरोवर सोई।
नाम सनेही उजल निरमल, हंसा मेलो होई।।
संतो मान सरोवर सोई, संतो..........।। पद।।
मेलो मान सरोवर मांही, धन हंसा आतम धोई।
प्रेम हरी रस मोती पावे, जन हंसा आतम जोई।। 1।।

संत जन झूले मानसरोवर, लखे न संत नर लोई।
मुंझाणो मन माया मांही, करता लखे न कोई।। 2।।
जगत बराबर अेक न जाणे, दरसे घट घट दोई।
ठाहा सिर आसण कैसे ठहरे, चित्त मन मेड़ी चेई।। 3।।
सादुळ चरण सरण सरणाई, व्रहे वेराग विसोई।
मान सरोवर हंसा, मेळो, हर हर बोलो होई।। 4।।

साखी

सादुळ मेलो संत को, मान सरोवर मांह।
मन माया जग मोह को, तीर न लागे तांह।। 1।।

वाणी

टेर- मिल हंसा मानसरोवर मेळो, मिल हंसा मान सरोवर मेळो।
उजल चूण चूगे हंस उजल, निरमल केल नकेल।
मिल हंसा मान सरोवर मेळो, मिल..........।। पद।।

सांग वेख पेट को सांगो, खट वेख को खेलो।
खट वेख छत्तरीसे पाखण्ड, जग सां बांधो जेलो।। 1।।
तन मन सार धार जन तोलो, चेतन राखो चेलो।
सार धन चेतन सत शब्दे, भाव भगत हंस भेळो।। 2।।
हमारा मान शुद्ध सत हंसा, सनमुख उठ सवेळो।
सरण चरण संतो की सतसंग, कर हर हंसा केळो।। 3।।
सादुळ सिर कृपा सतगुर की, हंसा किये हमेलो।
मान सरोवर हंसा मेळो, मेले मांही मेळो।। 4।।

साखी

सादुळ मेलो मानसर, हाजर संत हजूर।
मोती निझ पायो मुक्त, भाव भगत भरपूर।। 1।।

सतगुरु सहाय को अंग-राग गूढ़ मलार -साखी

सादुळ करकृपा सही, सतगुर करी सहाय।
पांचै दूत कूं पकड़ के, मारे मूल मिटाय।। 1।।

सादुळ सतगुरु की सिहाय, शुब्द दियो सत सत।
मारया मंत्री मोह का, तत खण बेठ तखत।। 2।।
सादुळ सतगुरु की सिहाय, शब्द दियो सत सत।
मूल पकड़ वस मन कूं, फिर साहब की फत।। 3।।
सादुळ सतगुरु सिहाय, निरभे घुरया निसांण।
पण्ड खंड व्रहम सा परे, अेक राम की आंण।। 4।।

वाणी

आज फौज मेरे गुरू की आई, आज मेरे फौज गुरु की आई।
थिरथा हर हर दियो थांणौ, अब नहीं आई जाई।। आज ....।।पद।।......

आज नगारो अनहद वाजे, घोर अजब इक घाई।
सतगुर हथ ग्रह सेल शुब्द सत, चोकस हुई चड़ाई।। 1।।
व्रहम विदेही, साधु भेळा, लगनी तोफ लगाई।
में मंत मार कीयो मन मेळो, दसो दिस राम दोवाई।। 2।।
उमंग उठे मिलण की अत अत, पलक न धीरज पाई।
सन्मुख सहाकरी संत सतगुर, वेहद नगर वसाई।। 3।।
प्रथम पांचे दूत पकड़े, गुर गम में गरकाई।
खेल गिइया चोफेरी खंडो, चेतन रसत चलाई।। 4।।
सादुळ संत चड अधर तखत सिर, समता रहत सदाई।
अवचल तखत साहब संत अवचल, पद अवचल संत पाई।। 5।।

राग गुढ मलार- अजाद को अंग।। वाणी।।

जो जन जत सत अनहद जागी जो जन जत सत अनहद जोगी।
है सो नहीं नहीं सो सत है, अगम अभे अणरागी।। टेर।।

जो जन जत सत जागी

अेथ ओथ कहते गये अंधे, दौड़त रहै दोहागी।
मुक्त सनेही आतम मांही, सो संत सदा सोहागी।। 1।।
ज्ञान पांख कि लगाउ गोते, अनहद पीछे आगी।।
ओत पोत सत अधर अखण्ड है, सो संत सतगुर सागी।। 2।।

पूरण व्रहम दसो दिस प्रगट, तमर अंधेरी तयागी।।
अनड रहत थिर अधर निरासा, पग वना जन पागी।। 3।।
सादुळ अधर सधर मिल सोहूँ राग नहीं नहीं रागी।
ध्ये धाता नहीं समरण ध्यांने, वीत राग वेरागी।। 4।।

साखी

सादुळ न्यारो सकळ सां, सकलस भरहयो समाय।
सो गत लखे सु संत है, जो जन आय न जाय।। 1।।

वाणी

संत सकल सां नयारो सांई संत सकल सो न्यारो सांई।
सत शब्दे सत जाणी संता, कहणा सुणतन कांई।
संतो सकल सां नयारो सांई, सतों सकल सां...... टेर....

सतगुरु संत कृपा कर सनमुख, परचा सुध परचाई।
पण्ड वना परचाणो पायो, दरसा वन दरसाई।। 1।।
मछली का घर दरीया मांही, झेमर तहां न झाई।
संत रहत समझे सुख सागर, थाप लगी थिर थाई।। 2।।
निरभे सोई सकल सां न्यारो, सतगुरु संत सुलझाई।
पूरण परसयो मन पतआई, अवर मिटी अलूझाई।। 3।।
सादुळ न्यारो रूप सकल सां, संत जन गरक सबांई।
तहां नहीं पांच ततं खट त्रिगुण, ध्यान समरणा धाई।। 4।।

साखी

सादुळ न्यारो सकल सां, संत लखे गत सोय।
ता गत लखे न लोक त्रहै कहियो न दूसर कोय।। 1।।

राग झंझोटी- वचन सिध पतव्रत को अंग-साखी

सादुळप्यारी सुनदरी, प्रीतम को पतव्रत।
शुब्द ममे गुर संत को, सो सिख है सत सत।। 1।।

सादुळ पतव्रता को सदा, एक प्रीव को अंग।
कोट माया दिखलाय को, सांखत चले न संग।। 2।।
सादुळ पतव्रत को सदा, एक प्रिव की आस।
संत कहे एक राम सत, समरणा सास उसास।। 3।।
सादुळ पतव्रता के सदा, एक मतो प्रीव एक।
द्रिष्ट न आवे दूसरो, आपत करो अनेक।। 4।।

वाणी

समझ सोहागण नारी सुरता, समझ सोहागण नारी समझ।
मैं प्रीतम की प्रीतम मेरो, बलहारी बलहारी।
समझ सोहागण नारी सुरता, समझ सोहागण नारी।।.... पद।।

पांच संगी तज ग्रह एक प्रीतम, धीरज चरणे धारी।
सहज सरूपी शुब्द समाना, शील व्रत सणगारी।। 1।।
चित मन प्रीतम संग चेतन, सनमुख खेल सवारी।
मेरे प्रवीव तिलक सिर माथे, वार वार पर वारी।। 2।।
सार धार रिदे में समरण, तन-मन अन्धर तारी।
अवरस कोउ नजर न आवे, थारी थारी थारी।। 3।।
सादुळ सेझ महल प्रीतम-सुख, पाई मोज परारी।
संत सोहागण मिल्यो हर सुरता, वारी वारी वारी।। 4।।
सादुळ चरण सरण सरणाई, वाह वाह भली विचारी।
सनमुख प्रीतम सदा सोहागण, निरभे खेले नारी।। 5।।

राग सूहब।। चिताणी को अंग।। साखी

सादुळमरणो अंत सिर, आज काल दंन एक।
सत संगत हर समरणो, वाका ज्ञान वंमेक।। 1।।
सादुळ मरणो अंत सिर, कुण जांणो अज काल।
गिरधर जैसे चल गये, मंदर तजे धन माल।। 2।।
सादुळ मरणो अंत सिर, दोऐ दंन माया देख।
चौकस उठे चालसी, सब को सइयद सेख।। 3।।

सादुळ मरणो अंत सिर, राणा रावत राज।
गिरधर जैसे कर गये, कूच विडाणो काज।। 4।।

वाणी

मन रे है इक दिन मरणो, कारज सिध मन सुकरत करणो।
मन रे है इक दंन मरणो........................ पद........।।

जप तप व्रत होम जिग जाणो, थान थापना माया थाणो।
पांच पसारा मरणो परणो।। 1।।
हूं में चोर चपेटक हाणो, कपटी राम संतां दिस काणो।
डम जम के डाकर सां डरणो।। 2।।
काया मन माया क्या कुल काणो, आसा तृष्णा मन उलझाणो।
भूल भूलाणो करणो भरणो।। 3।।
मन माया को मकर माणो, रहत न दिसे राजा राणो।
सत संगत ले सतगुरु को सरणो।। 4।।
दोअे दंन तेरो पाणी दाणो, पीछे आगे बाण पीयाणो।
तन–मन त्याग समर हर तरणो।। 5।।
पांचा के संग चले पंचाणो, उलटाए एके घर आणो।
जीवन मरतक अजरा जरणो।। 6।।
पांच तंत को त्याग पछाणो तीन लोक तज ताणो ताणो।
धीरज ध्यान अंधर को धरणो।। 7।।
सादुळ समझे उलट समाणो, तहां नहीं कोई वेजो ताणो।
वाका नहीं कोउ वरण अवरणो।। 8।।

साखी

सादुळ मरणो अंत सिर, चार दिना नित चोज।
माघ पण्डत कहां मर गये, भाणवती कहां भोज।। 1।।

वाणी

मन रे उण दिन कुण है मेरो तनदंन सगो न तन है तेरो।
मन रे उण दिन कुण है मेरो।.......... पद।।....

काळ क्रोध मद लोभ अहंकारा, पांचोई घट मांह पसारा।
होये रहयो जम तेरो हेरो।। 1।।
देखो दीवे को दिदारा, अवर सकल कूं करे उजारा।
अपणे आसण हेठ अंधारो।। 2।।
हूं में होडे जीते हारा, खोज रहत वन खेल खोहारा।
जैसे दूध विगड़ गयो जेरो।। 3।।
अवरस माया खेल अकारा, निरबंध सोई माया सां न्यारा।
चरण कवळ हम जाको चेरो।। 4।।
सादुळ समझ समाये सारा, सो संत मेरा है सिरदारा।।
वंदण मेरी वेरो वेरो।। 5।।

साखी

सादुळ मरणो अंत सिर, कर सुकरत मन काज।
सत संगत हर समरणा, तीन लोक सिर ताज।। 1।।

निसाण फोड़ उपदेश को अंग राग सूहब -साखी

सादुळ तन-मन सार है, रांम रांम दंनं रात।
चेतन निस दंन जंन चला, व्रहम चीण मुख वात।। 1।।
सादुळ सतगुरु संता को, सुण्यो शुब्द सत सोय।
उलट सुलट मिल एक है, कहंण सुणण नहीं कोय।। 2।।
सादुळ सतगुर संत को, सुण्यो शब्द इक सार।
मैं तें मांही मिळ रहयो वेहद खोज विचार।। 3।।
सादुळ सुब्द संमाप है, सतगुरु बोले सोय।
भगत मुगत भरपूर है, निरख एक नर लोय।। 4।।

वाणी

तंनं मंनं अद्धर लागी ताड़ी, उलट चडे हम ज्ञान अम्बाडी।
तंनं मंन..................................।। पद।।

सतगुरु सत सत सुब्ध सुणाया, प्रेम हरी रस पयाला पाया।
विच रिदे के फूल वाड़ी।। 1।।

वाह गरु खट कंवळ वताया, दसूऐ जोत दीदार देखाया।
फेर नकाले अम्बर फाड़ी।।2।।
तंहां नहीं कोई मुंआ न जााय, ऐसा भेद गुरू सां आया।
अंनंहद पीछे सोई अगाड़ी।।3।।
सादुळ समझे उलट समाया, काळ कर्म ताहां नहीं कुछ काया।
वका वाग फूल नही वाड़ी।।4।।
सादुळ संगी सकळ को, सकळ सां न्यारो सोय।
सकळ सां नयारो सब संगी, कंहंण सुंणणं नहीं कोय।।5।।

वाणी

टेर-तंनं मंनं मांही ताड़ी लागी, भरम, अंधेरी सरबंग भागी।
तंनं मन अंधर ताड़ी लागी.................. पद।।

हरद्धम जीवत मरतक होगी, जो गत जाणें विरला जोगी।
व्रहमं खोज जनं भयो वेरागी।।1।।
रूप नं रेख न वेद न रोगी, भगत जगत गत सरबंग भोगी।
सरबंग सूरत साहब सागी।।2।।
करणा वंना नित रोज करोगी, जो गत लखे नं जंदा जोगी।
तपसी लखै न मूंनी त्यागी।।3।।
सादुळ समझे रांमं संजोगी, सोग न हरख न सांसो सोगी।
जो जन नहीं कोई सूती जागी।।4।।

साखी

सादुळ फोड़े दसुओं, दरस्यो निकास दुसार।
देह विदेह वंनां दरस, चसम खुले चोधार।।1।।

राग- जोग- परचे को अंग- साखी

सादुळ जीव, सास संग, आतम को आधार।
रिदे सनेही राम कूं ,धरा न कबहूं धार।। 1।।
सादुळ जीवण सास संग, पोखण कूं पल पल।
जो जब है अबखी जिको, सनमुख करे सहल।। 2।।

सादुळ जीवण सांस संग, पूरण पूरा पूर।
मुक्ता गत आतम मंही, द्विल सां होये न दूर।। 3।।
सादुळ जीवण सास हो, जद तद राम जरुर।
दीपक तूं दस दिस दिपे, नैण वदन सिर नूर।। 4।।

वाणी

टेर- जीवण सास प्राण मेरे जाणा, नैन हमारे नूर।
मेरे राम वो, जीवण सास प्राण मेरे......... ।। अरध पद।।

रोम रोम में आतमा रामा, भंन भंन भंन भरपूर।। 1।।
है सोई है सकल कूं हाजर, दरसे, कबहूं न दूर।। 2।।
मेरे राम रिदे के मांही, थान थाप थिर थूर।। 3।।
सादुळ सास प्राण है सोई, हाजर नूर हजूर।। 4।।

साखी

सादुळ पूरण सकल कूं धार धेम हर धम।
मुक्ता गत नित तम मंही, गरक रहां हम गम।।5।।

वाणी

टेर- जीवण सास प्राण मेरे जाणं, दंन दंन मेरे दीन।
मेरे राम वो, जीवण सास प्राण मेरे जाण... अरध पद।।

प्राते रात सकल कूं, पूरण, ताक तिलोकां तीन।। 1।।
तुम हो भेला नयारा तुम हो, करता कीन अकीन।। 2।।
तयाग भाग कूं रही तिरखालू, मुक्ता जल में मीन।। 3।।
सादुळ सास प्राण है सोई, जो जन साच जकीन।। 4।।

साखी

सादुळ पूरण सकल कूं, परचा सुध भरपूर।
सरणे राखे संत कूं, हाजर सदा हजूर।। 1।।

।। अरज को अंग।।

राग-कल्याण मंगला संझाळू।।

साखी

सादुळके अरजां सुणो, दरसण के सुख देव।
बिरद वडे हो बाप जी, सरण समापण सेव।। 1।।
सादुळ के अरजां सुणो, निस दंन दीना नाथ।
मेहर निजर निस दिन मंगां, हम सिर तेरा हाथ।। 2।।
सादुळ के अरजां, सुणो, सतगुर संत सुजाण।
बिरद बडे हो बाप जी, पूरणं भेद पछांण।। 3।।
सादुळ के अरजां सुणो, निरभे संत निरवांण।।
दया नजर सर दीजिए, परवाणो परवांण।। 4।।

वाणी

कल्याण करो मुक्त के करता, तम हो मेरे तांही।
तम वन अवर न मेरा तारु, जगत बराबर जांही।। टेर।।

पाट पड़यो सतगुर पूरे के, कबहूं तजियो न कांही।
बिरद वडेरो अपणो बांबा, मुक्त सकल जग मांही।। 1।।
उदे अस्त विच चाले अन्तर, छडे न बादल छांही।
आप वडे हो संत उधारण, जेथ पुकारां जांही।। 2।।
अगम अभेद अमाप अठाही, ठीक सकल की ठांही।
सोई भेद लखे संत सतगुर अनहद अखे अठांही।। 3।।
सादुळ तेरा अरजी सोवाली, द्धरवाजे खड द्धांही।
मेरे मन को देख मनोरथ बबा तजो न बांही।। 4।।

साखी

सादुळ की अरजां सुणो, अनहद अगम अज्ञाद।
चरण कंवळ की चाकरी, सहजे सहज समाद।। 5।।

वाणी

कल्याण करो मुक्त के करतां, संत मुक्त के सांई।
दीन दयाल मुक्त के दाता, परचो दे परचांई।
कल्याण करो मुक्त के करता........... टेर।।

अवर सकल कूं आसा त्रिसना, आतर दे अळूझांई।
सतगुर साम चरण की सेवा, सत शुब्द सळुझांई।। 1।।
आगे के संत अनंत उधरे, कोटे अब कितांई।
हम की आई वेर हंमारी, चेतन राख चितांई।। 2।।
मन दसवें ज्योति सां मेलो, झूबाणो मन झांई।
देह विदेह न देख अदेखा, कुण जाणे है कांई।। 3।।
सादुळ आगे अरजी सोआली, अनंते संत अघांई।
अबकी मेरी बारी आई, संत सुधारण सांई।। 4।।

साखी

सादुळ की अरजा सुणो, अपणो करके आप।
सरणाई चरणा सरण, बिरद वडे हो बाप।। 6।।

राग नट कल्याण- संज्यालू आरती चिताणी को अंग साखी

सादुळ सतगुरु संत कूं, वंदण है डण्ड वरत।
दरस परस सत शुब्द दे, अनहद है अवगत।। 1।।
सादुळ हर चरणा सरण, आगे कोट अनंत।
सुख देवा सुख सागर, सरण सुधारण संत।। 2।।
सादुळ सतगुरु संत कूं, कर वंदण के कोट।
सरण चरण के लहर सुख, असे है हर ओट।। 3।।
सादुळ हर सुख सागरा, मेरा हैं मां बाप।
समता गत हर सरबंग में, थाणा थाप उथाप।। 4।।

वाणी

टेर- आरती कीजे गुर देव, तुम्हारी सरणे आया कूं लेओ आधारी।
आरती... पद.................

जोरा जोर तजो मन जारी, भाजे भरम दिला फुट भारी।। 1।।
केता पुरुस केती नारी, तेरी सरण आया सो तारी।। 2।।
अनंत कोट संत आगे उधारी, अब की आई वेर हमारी।। 3।।
सेवा सतगुरु की बलहारी, भवसागर में डूबत तारी।। 4।।
सादुळ समझे उलटी सारी, सनमुख खेलां सांझ सवारी।। 5।।

साखी

सादुळ सतगुर संत कूं, अरजां आद अनाद।
अरज गरज चरणा अगी, सुण लीजे हर साद।। 5।।

वाणी

सतगुर संत की आरती करीअे, सिस काट गुरु चरणे धरीअे।
सतगुर... पद।।

प्रथम पांच पच्चीस पर हरीअे, त्यागन कर भव सागर तरीअे।। 1।।
सिध वचन सतगुर सां डरीअे, काया को संग मूल न करीअे।। 2।।
उशुब्ध सुण मन अजरा जरीअे, व्रहे वेराग अमर वर वरीअे।। 3।।
सादुळ उलटे राम समरीअे, मुक्त समाना जीवत मरीअे।। 4।।

साखी

सादुळ के अरजां सुणो मेहर वाण महाराज।
चाकर हां मम चरण को, दइयो कृपा कर दाज।। 6।।

साखी

सादुळ आतर कर सदा, राम भजन दंन रात।
सरणो सतगुर संत को, वड़ा ग्रहण अेह वात।। 1।।
सादुळ आरत कर सदा, हर समरण सां हेत।
एक वसीलो एक को, खड़ो न दुसर खेत।। 2।।
सादुळ आतर कर सदा, निस दिन समरण नेह।
सत संगत गुर संत की, अत आरत कीजे अेह।। 3।।

सादुळ आरत कर सदा, समरण आतम सार।
उलटो सुलटो आप में, दरसण देख दुसार।। 4।।

वाणी

आरती कियां ऐसे सुख होई, काया लेस न लागे कोई।
आरती कियां... पद।।

शिव सिनकादिक सीधा सोई, कोटे कोट अनंत संत कोई।। 1।।
केता पुरुष केती लोई, हुआ अनंत अनंत संत होई।। 2।।
दुतिया भाव न दरसे दोई, तहां कछु आद अंत नहीं तोई।। 3।।
सादुळ सकल अकल में सोई, जो गत उलट द्रिष्ट भर जोई।।4।।

साखी

सादुळ की सुण लीजिअे, पल पल अरज पुकार।
चार हां मम चरण को, हर मम तारण हार।। 5।।

वाणी

आरती कर गुरु अंगण आया, प्रेम पीयाला भर भर पाया।
आरती.. पद।।

करम न भरम न नही कछु काया, मन कृत मोह नहीं कछु माया।। 1।।
गुर गम गुर का मंगल गाया, व्रहम सरुपी उलट वधाया।। 2।।
सतगुर आया शब्द सुणाया, रंग न रूप रेख नहीं राया।। 3।।
सादुळ समझे उलट समाया, काळ करम तांह नहीं कछु काया।। 4।।

साखी

सादुळ की अरजां सुणो, पूरण गुरु प्रतपाल।
चाकर राखो चरण को, जग को मेट जंजाल।। 6।।

गुरु महमां को अंग-राग नट कल्याण- साखी

सादुळआरत राम सत, निस दिन काजे नेम।
विरह वेराग वमेक वध, पल पल वाधे प्रेम।। 1।।
सादुळ आरत राम सत, राम भजन नित रोज।

प्रेम भगत प्रताप सां, खोजी आतम खोज।। 2।।
सादुळ आरत राम सत, भजन राम सत भाव।
प्रेम नेम प्रतीत पत, संत गत उलट समाव।। 3।।
सादुळ आरत राम सत, पूरण व्रहम प्रकाश।
समता गत एक राम सत, वीच रिदे विश्वास।। 4।।

वाणी

आरती कीजे अखण्ड रांमं रांमं रांम की।
राम राम राम की, निझ निझ नाम की।
आरती कीजे.............।।पद।।

सत संग राम सत, धार धीर धाम की।
वेर वेर वेर वेर, वात विसराम की।। 1।।
आद मध्य अंत एक गढ़ की न गाम की।
प्रेम को पायो प्रसाद, तृष्णा न ताम की।। 2।।
जगत जीव काळ जाळ, मिट गये मलाम की।
एक राम को आधार, द्विल में न दांम की।। 3।।
पांच तीन को परसंग, लूट ले लीलाम की।
राम राम की रहत, ठीक ठाम ठाम की।। 4।।
संत के रिदे समाप, जांण आठ जांम की।
पल पल पल पल, पूरणा परनाम की।। 5।।
सादुळ राम कूं सदाए, सिर नमां सलांम की।
अनहद अखे वेअंत, कर समां कलाम की।। 6।।

साखी

सादुळ आरत राम सत, आद मध्य अंत अेह।
अंग उमंग उछरंग अधक, नित नित नवलो नेह।। 5।।

वाणी

आरती कीजे अखण्ड, राम दिन रात की।
राम दिन रात की, प्रभाते प्रभात की।
आरती कीजे.......... पद।

रिदे सत राम, राम वीच मुख वात की।
सदा राम राम सार, तन मन तात की।। 1।।
अनंत संत के अनंत, गीत रांमं गात की।
अब मेरी सुणे अरज, दीन रांमं दात की।। 2।।
व्रहमा संभू विशन, सतगुर, पांच सात की।
सुर तेंतीस करोड़ सब, भूजे भांत भांत की।। 3।।
सादुळ सवारे सवार, जात जात जात की।
अनहद अखे वे अंत, आरती अजात की।। 4।।

साखी

सादुळ आरत राम सत, जा कूं नमण जोहार।
अवरस मेरे अवर है, वात न को वहवार।। 6।।

मूट सम्पूरण साखी

सादुळ आरत संत की, बलहारी बलहार।
आद मध्य अंत के अनंत, वारो वारो वार।। 1।।
सादुळ आरत संत की, दंन दंन अधक देखाय।
दरस दरस संत द्धर कूं, भगत बहत मन भाय।। 2।।
सादुळ आरत संत की, जन कर देखी जोय।
सत संगत हर समरणा, हर सां मेलो होय।। 3।।
सादुळ आरत संत की, संत के चित में सार।
अवर न जाणे अबगती देख्यो संत दुसार।। 4।।

वाणी-आरती

आरती कीजे अखण्ड सदाए राम संत की।
सदाए राम संत की, अनंत के अनंत की।। आरती... पद।।
प्रकमा दे पल पल, मेरे संत मिंत की।
वेर वेर डण्ड व्रत, खरी संत खंत की।। 1।।
संत राम कूं सलाम, चाह मन चंत की।
पूरे संत के प्रताप, आरती अचंत की।। 2।।

निकस पीछे नमाअे, गजा, है गज दन्त की।
संसार में न खेले संत, कदेई केदन्त की।। 3।।
सादुळ राम संत सत, आद मध्य अंत की।
अनहद अखे वे अंत, तार निझ तंत की।। 4।।

साखी

सादुळ आरत संत की, हरी मिलण की होय।
प्रेम नेम प्रतीत सां, कर देखो सब कोय।। 5।।

वाणी

आरती कीजे अखण्ड, सांझ की सवेर की।
सांझ की सवेर की, वेर वेर वेर की।
आरती कीजे................।। पद।।

पांच के परसण पच्चीस, घेर फेर घेर की।
मन सिर मार मेख, जेर फेर जेर की।। 1।।
जोग जुगत नाह जेथ, हेत प्रित हेर की।
ग्यान गम में गरक, हाजरी हमेर की।। 2।।
जिताई मृतक जेथ, खबर है न खेर की।
आरती की खबर ओथ, संग सदा सगेर की।। 3।।
सादुळ आरती सदाई, फेर फेर फेर की।
अनहद अखे वे अंत, नित समा नवेर की।। 4।।

साखी

सादुळ आरती संत की, कीया सफल सिध काज।
उलटो सुलटो आप में, मुक्ता गत महाराज।। 5।।

राग-पहाड़ी- साखी

सादुळ जग मिरग जल सपन, शीत कोट संसार।
वेर नहीं कुछ विखरते, सपन सै नांह सवार।। 1।।

सादुळ जग मिरघ जल सपन, नर दीसे सो नांह।
जम सो पकड़े जास दिन, ते दिन संधी न तांह।। 2।।
सादुळ जग मिरघ जल सपन, तन मन माया तांह।
दूर थये बहू जल दिसे, निकट गया कछु नांह।। 3।।
सादुळ जग मिरघ जल सपन, तन-मन माया तोह।
शीत कोट ज्यूं देख सरब, तेसे है नर तोह।। 4।।

वाणी

भोरा मन सपनो जग संसार, भोरा मन
रेण अधारी खेल रचयो है नाच रह्या नर नार।
भोरा मन सपनो जग संसार, भोरा मन सपनो जग संसार।
सपनो जग संसार..............।। पद।।

मात-पिता सुत बंधव नारी, पाळयो कुळ परवार।
जब तेरी नर थकी जोआणी, सब कुळ लहे न सार।। 1।।
चोरी जारी माया चटरस, खटरस नखरो खार।
अंत काल सिर होसी ओखी, मूरख जम की मार।। 2।।
भूल भटक आयो जम भेटे, चौरासी खांण चार।
अवसर अेही मानखो आयो, वळे न वारोम वार।। 3।।
जेता दिन माया में गुजरया, अेता दिन असार।
अजांई चेत भली पूळ आई, समरण राम संभार।। 4।।
सादुळ सतगुर सेवारामा, आतम पिराण आधार।
चरण कंवल में रहता चेतन, निरत खेल निरधार।। 5।।

साखी

सादुळ सुते सपन में, रुपक देख्यो रात।
मन ओ निदरोमुझणो, पीछे नहीं प्रभात।। 1।।

वाणी

भोरा मन जग सपने को खेल, भोरा मन कुटम
कबीलो बहु कुळ न्याती, अन्त सिर चलण अेकल।
भोरा मन जग सपन को खेल, भोरा मन......।। पद।।

वड वड भूप जबर सिर जोरा, सब सिर मारे सेल।
लूंट पडे तम कूं जब लूटे, अेसा कूंण उबेल।। 1।।
जिउ जिउ सुब्ध सुणे जग जोगी, तिउ तिउ ताई तेल।।
लाठी भव पेलूणी लागी, मन को तजे नं मेल।। 2।।
आपा दिरंग अवरस हीणा, अंधा छोड़ उलेल्।
जिउ जिउ भोम अलंग नर जावे, ठाह ठाह ठेला ठेल।।3।।
पांच पचचीसे दीरंग पेठे, फेड़ंग घर में फेल।
छानी चटरस कबहू न छोड़े, अण हूंता उसकेल।। 4।।
सादुळ सुबध लागो उर सनमुख, गुरु गम ज्ञान गुलेल।
फाटो बार मिल्यो चोफेरी, अणभे बाण उकेल।। 5।।

साखी

सादुळ सूते सपन में, राते देख्यो रूप।
त्यागी मुनी तपेसरा, भूल रहया सब भूप।। 6।।

साखी

सादुळ सूते सपन में, राते देख्यो रंग।
त्यागी मूनी तपेसरा, निरखरहया से नंग।। 1।।
सादुळ सूते सपन में, दोय रंग माया दीठ।
त्यागी मूनी तपेसरा, मन प्यारी बह मीठ।। 2।।
सादुळ सूते सपन में, खलकत देख्यो खेल।
कोटक तज परवार कुळ, इक दिन चले अकेल।। 3।।
सादुळ अेह जग सपन है, होतब राते होय।
वाजी है अंत विखरणी, रहे प्रात के रोय।। 4।।

वाणी

भोरा मन जग सपनो होअे जाय, भोरा मन, भोरा मन् जग सपनो होअे जाय।
जनत करत बहत जग देख्यो, रहत न देख्यो काय।।
भोरा मन जग सपनो होय जाय, भोरा मन, भोरा मन.... पद।।

कनक कामणी कपट किलोला, नर कूं नार नचाय।
मन दिया डाकण के मुख में, खाया के फिर खाय।। 1।।
मोह की अगन प्रीव मन मांही, लागी दसो दिस लाय।
आशा फिर कछु नांही उवां की, जलत जलत जल लाय।। 2।।
जोगी जगम सन्यासी जती, आसण चले उठाय।
सहसें वार कहियो सत शुब्दे, कपटी मने न काय।। 3।।
चटरस काम कपट का चाला, सबला चाले साय।
जब तम कूं पकड़े सिर जोरा, वठ सिर कुण वचाय।। 4।।
सादुळ चरण सरण सतगुर की, समता उलट समाय।
आतम सिर झड़ वरसे अेहनस, फिर अेसा फरमाय।। 5।।

साखी

सादुळ अेह जग सपन है, त्रह लोका मण्ड तौत।
जे सौ वरसां जीवणो, मरण खड़े सिर मौत।। 5।।

वाणी

भोरा मन मरणो एक दंन मांह भोरा मन,
सो हीला लखकोट सेणपा, नर फिर जीवे नांह।।
भोरा मर मरणो है एक दिन मांह, भोरा मन भोरा मन... पद।।

जप तप साधन साधे जोगी, तीन लोक के तांह।
छपरे छिपया काळ नहीं छोड़े, जतन करो, लख जांह।। 1।।
वादल छांह किया विसरामा, छोड़ चलेगी छांह।
अेसो सकल संसार अंदेसो, द्धर-द्धर सिर द्धांह।। 2।।
राजा उठ लूंटे रईत कूं, कूक करे अब कांह।
अंत सिर मार पड़े सिरे उवां के, मन जाणे मन मांह।। 3।।
सादुळ जन दिनी सतगुर कूं, बहड़ न छोड़े बांह।
वड़ी वडाई लाज वडा कूं, तम हो मेरे तांह।। 4।।

साखी

सादुळ है एक राम सत, अनहद अखे अदेख।
गुरु शुब्द सत ज्ञान सूं, दरस दसो दिस देख।। 5।।

राग पहाड़ी- व्रहण को अंग- साखी

सादुळ जन व्रहण सदा, विललत फिरत विदेश।
प्रिव मिलण बह प्यास मम, दौड़ जोया फेर देश।। 1।।
सादुळ जन व्रहणी सरदा, प्रिव सां विछड़े पल।
मम प्यासी पल ना मिले, जाय प्राण जल जल।। 2।।
सादुळ व्रहण के सदा, प्रिव मिलण को प्यास।
प्रिव मिले का तजे प्राण, तन मन रहे न तास।। 3।।
सादुळ व्रहण के सदा, सुनमुख प्रिव सरूप।
प्रेम प्यासा मम प्रिव को, भाव ताव रंक भूप।। 4।।

वृज लाल वंना पल जाय घड़ी, जुग जाय जते वल वाट खड़ी।
वृज लाल वनां पल जाय घड़ी, वृज वनां वृज लाल वनां।
वृज लाल वनां पल जाय घड़ी, वृज लाल.......... पद।।

वेहाल फिरां द्धीद्धार वना, कछु भाल करो खुद द्वार खड़ी।। 1।।
पल देखण द्धे, द्धिल द्धोसत प्रिरी, वृज लाल वडे, प्रिव लज पड़ी।। 2।।
भुज राम भले, गुर ज्ञान गले, पन पास पले, जंद्ध जीव जड़ी।। 3।।
सादुळ सदा, रिदे पास रहो, रंग राग रमां, दिन रात दड़ी।। 4।।

साखी

सादुळ व्रहण के सदा, सनमुख प्रिव को संग।
परस दरस एक प्रिव को, रिदे न दूजो रंग।। 1।।

वाणी

टेर- वृजलाल वना पल जाय विती, जुग जाय जिते, इहो गाल इति।
वृजलाल वना पल जाय विती, वृजलाल वना, वृजलाल वना।
वृजलाल...................... टेर।।

मिसकीन अहियां, महाराज सुणो, मुझ मालक हो, कहां गाल किती।। 1।।
हम आसक हां, द्धीद्धा देखण कूं, द्धीद्धा देखण द्धे निस दंन निती।। 2।।
रामं लाल रहीयां, डहूं दुख गया, तन तार तूंही, मैं मार डिती।। 3।।
सादुळ संगी बोले, सरबंगी, फल फूलन मैं जग जात जिती।। 4।।

साखी

सादुळ व्रहण के सदा, प्रेम प्यासा एक प्रीव।
मुझ पिता भ्राता मने, जगत बराबर जीव।। 6।।

साखी

सादुळ व्रहण के सदा, सनमुख प्रिव संजोग।
आस पास न अवर के, जद तद प्रिव संग जोग।। 1।।
सादुळ व्रहण के सदा, सनमुख प्रिव सनेह।
व्रहण जे दंन विछड़े, दन तै पर जले देह।। 2।।
सादुळ व्रहण सुन्दरी, पल पल प्रिव के पास।
जो जन मिले न प्रिव जब, उण दंन फिरत उदास।। 3।।
सादुळ व्रहण सुन्दरी, नित प्रितम को नेम।
मछली मेलो जल मंही, आस पास प्रिव अेम।। 4।।

व्रज लाल वना वेहाल वणी, व्रजलाल वना, जुग जाय जिते पल ताय घणी।
व्रजलाल वना, व्रजलाल वना, व्रजाल वना, वेहाल वणी।
व्रज लाल वना...................... ।। पद ।।

खडे खीज खपत खटकाल खड़े, विकराल वडे, अहे सेल अणी।। 1।।
सब साथ सखी, रिदे रोक रखी, मुझ प्रिव मिल्यो, जब एक जणी।। 2।।
अंत आद अही, मिल आप मंही, निख द्धा नींही, धन एक धणी।। 3।।
मुक्त समाप मांही, निझ मूल मिले, मिले सादुळ अमोल मणी।। 4।।

साखी

सादुळ व्रहण के सदा, प्रितम है जीव प्रांण।
प्रिव विछड़े कांहा जीव पछै, जैसे होतब जांण।। 5।।

वाणी

व्रज लाल वना, सुख तान सखी, जुग जाय जिते, दिन रात दखी।
व्रजलाल वना सुख तान सखी, व्रजलाल वना व्रजलाल वना.... पद।।

जब वाट जोयां, सुख तान सोयां, छन प्राण छिजे, पूछां रोज पखी।। 1।।

व्रजलाल वडे, खमा द्धर खडे, दया दान दिजे, रिदे नाल रखी।। 2।।
संत पास सही, रिदे आस रही, कृपा मुझ किजे, दंन रोज दखी।। 3।।
सादूळ सांई, कहयो मान कांई, लपटाय लिजे, अरज रोज अखी।। 4।।

साखी

सादुळ व्रहण के सदा, प्रेम राम की प्रीत।
रसना रिदे सत राम है, मेरे तन मन मीत।। 1।।

व्रहण मिलाप को अंग- साखी

सादुळ मेलो सन्धु में, व्रिहण कूं व्रजलाल।
मैं प्रीतम की प्रीव मुझ, ताल मिल्यो त्रहड़ ताल।। 1।।
सादुळ मेलो सत है, व्रिज मांही व्रजराज।
मेरो साहब है मुझे, तंत तिलक सिर ताज।। 2।।
सादुळ मेलो सत है, हर हर समरण हेत।
ओत प्रोत मिल आतमा, सत संग राम समेत।। 3।।
सादुळ मेलो सत है, मुक्त राम के मांह।
सात दीप नव खण्ड सकल, जल थल महीयल जांह।। 4।।

वाणी

वृजलाल मिलयो मिल घूम मची,
वृजलाल मिलयो संग सार सदा रंग रास रची।
वृजलाल मिलयो, वृजलाल मिलयो मिल घूम मची।
वृजलाल मिलयो.......... टैर..........।।

खुद छोड़ खंगी, मन मोख मंगी, रह तास रही, पुन पास पची।। 1।।
फिरते फिरंगी, जंग लाय जंगी, कुल वात कही, कुल काट कची।। 2।।
रंग रंग रंगी, संग अंग संगी, सत मान सही, सत वात सची।। 3।।
चित लाय चंगी, पण्ड होय पंगी, लह तास लही, वल पास वची।। 4।।
सादुळ संगी अंग संग अंगी ठाह ठीक ठही, जन राम जची।। 5।।

साखी

सादुळ साहब सन्धु है, मिळे मेळे निझ मूल।
गुरु गम सां सब संत गरक, सत माने सादुळ।।5।।

वाणी

वृजलाल मिलयो मिल मांह मिली,
वृजलाल मिलयो अंग संग अही, रंग रास रली।
वृजलाल मिलयो वृजलाल मिलयो वृजलाल मिलयो.......।। पद।।

अज प्रीव अगी, लुट पोट लगी, मिल तास मही, गलतान गली।। 1।।
पतर प्रेम पीया, कुळ केफ कीया, मिल आप मही, अहे आप अली।।2।।
जल वाह जले, बल तास बले, जलती जलळी जल मांह जलळी।।3।।
तीये तेल तिलां, महबूब मिला, सादुळ सही कुल गुळ कळी।। 4।।

साखी

सादुळ साहब सिन्धु है, मिल मिल बैठा मांह।
देख दिसो दिस दिप है, तम हम सरबंग तांह।। 6।।

साखी

सादुळ धुन मुरली सुणे, पल पल सुणते प्यास।
तन मन धन तज त्याग के, अनहद रहत उदियास।। 1।।
सादुळ धुन मुरली सुणे, उछरंग भये अनंद।
उचरत ज्ञान आवाज मैं, चंचल थिर रवि चंद।। 2।।
सादुळ मुरली धुन सुणे, तंत खण मूरली तांह।
अनहद मूरली आवाज में, मुक्त समांणा मांह।। 3।।
सादुळ मूरली धनु सुणे, जिउ जिउ पाई जाण।
अनहद हर वरसे अखण्ड, प्रेम भीना प्राण।। 4।।

वाणी

कि यार तेरी मूरली धुन प्यारी, यार तेरी मूरली धुन, छन पल एक नांही न्यारी।
यार मेरी मूरली धुन प्यारी। अहे धुन प्यारी अछी धुन प्यारी।

यार तेरी मूरली धुन प्यारी, यार तेरी.......।। पद।।

कछुए नांह करिया करणी, जिउ में नांह अजरा जरणी।
प्रीतम आपे करो पकरणी, प्रिव पर में परवारी।। 1।।
राहत में में नाहे रहणी, ग्रहता में में नाहे गरहणी।
प्रीतम तूं हूं जी आहयां परणी, हूं में वाजी हारी।। 2।।
सेवा समरण ना में सरणी धनअन मन में नांहै धरणी।
सांमरीया की परणी, सरणी, उलट सुलट मिलयारी।। 3।।
सादुल नींही कुआरी परणी, वर पायो मिल अवरण वरणी।
है जिउ तिउ प्रितम में हरणी, ना जीती ना हारी।। 4।।

साखी

सादुळ धुन मूरली सुणे, चंचल मन भये चुप।
दे टुबकी दरीया मंही, आगे देख अचुप।। 5।।

वाणी

कि यार तेरी मूरली सां धुन लागी यार तेरी मूरली सां धुन लागी।
भरम अंधेरी सरबंग भागी, यार तेरी मूरली सां धुन लागी।
अहे धुन लागी, अच्छी धुन लागी, यार तेरी मुरली सां धुन लागी।। टेर

सपने निदर में सूती पईयां, कृपा आतुर पावत कइयां।
तंत खण मूरली वाजे तइयां, जिउ सपने नंदरा जागी।। 1।।
चाली बोल चुप चुप चइयां, थारी, थारी थारी थइयां।
निस दंन तेरे चरणे नइयां, आसक मासक आगी।। 2।।
प्रीतम के गल उलटे पइयां, सहजे रास रचयो संग सइयां।
द्धिलवर द्धेरा द्धिल में द्धइयां, अंतर गत अण रागी।। 3।।
सादुळ समता गत सइयां, गुपता गुपत गरक मिल गइयां।
दीप उठे सतगुर कर दइयां, सरबंग सूरत सागी।। 4।।

साखी

सादुळ धुन मुरली सूणे, मिल थिर चंचल मन।
श्रवण न खंडे एक छन, जीता तन मन जन।। 6।।

साखी

सादुळ मूरली सूणे, नहेचल तन मन नित।
श्रवण न खंडे एक छन, चंचल होय निचंत।। 1।।
सादुळ धुन मूरली सूणे, मन नहेचल मांह।
श्रवण न खंडे एक छन, नूखतो दूजो नांह।। 2।।
सादुळ धुन मूरली सुणे, थाकत मन थिर थाप।
श्रवण न खंडे एक छन, आगे देख अथाप।। 3।।
सादुळ धुन मुरली सुणे, मन पायो निझ मूल।
श्रवण न खंडे एक छन, सत शुब्दे सादुळ।। 4।।

राग पहाड़ी वाणी

यार तेरी मुरली धुन अेसी, यार तेरी मुरली।
कव वल कर कर कहीये कैसी कि, यार तेरी.... पद।।

जल भरणे कूं सरवर जइयां, घोर इसी मूरली घंण घडीयां।
सुणता सोई सनमुख सइयां, दे गल कट सिर देसी।। 1।।
तन मन उलटे थाहत तइयां, ले ले आस पास प्रीव लइयां।
पंगल थी चरणां में पइयां, चलण न पाव चलेसी।। 2।।
पइयाला सरग मरतक रइयां, सपत दीप नव खण्ड सरइयां।
प्रतक देखे हरत पइयां, कुजरत कैसी कैसी।। 3।।
गुरगम रहता संत संग गइयां, जो जन फेर न फेरे जइयां।
रिल मिल रिल मिल रिल मिल रइयां, हर द्धम मांह हमेसी।। 4।।
सादूळा समत गत सइयां, द्धिलवर अंद्धर बाहर द्धइयां।
तखत टकोरो जइयां तइयां, जाहर जैसी जैसी।। 5।।

साखी

सादुळ धुन मूरली सूणी, अनद्धर बाहर अेम।
श्रवण न खंडे एक छन, नहेचल तन मन नेम।। 5।।

वाणी

कि यार तेरी मूरली सां ढ्रिल मोही, यार तेरी मूरली।
उलट सुलट मिल ओही ओही, यार तेरी मूरली सां ढ्रिल मोही।
अहे ढ्रिल मोही अच्छी ढ्रिल मोही। यार तेरी..... पद।।

यार मेरे अंगण करी फिर यारी, पल पल परसम्पर परवारी।
सूरत ढ्रेख अमूरत सोई, आहे इचरज ओही।। 1।।
सनमुख सहजे खेलां सारी, प्रिया संग मोह रही ढ्रिल प्यारी।
अनहद अवाज सकल घाट ओही, हेरत में ढ्रिल होही।। 2।।
तन मन अन्दर लागी तारी, हूं में होड न जीती हारी।
किरिया करणी होत न कोई, खलक खालक मिल खोही।। 3।।
सादुळ गोपी सणगारी, प्रितम पायो आरम परी।
जिउ मूरली धुनतिउ मिल जोई, तोही तोही तोही।। 4।।

साखी

सादुह धुन मूरली सुणे रिदे राम दिन रेण।
श्रवण न खंडे एक छन, वातां अवर न वेण।। 6।।

राग विहाग तानक को अंग- साखी

सादुळ अेह संसार के, भरमे खेता भूत।
एक वसीलो एक को, अेसो को अवधूत।। 1।।
सादुळअेह संसार के, आंन देव की आस।
पहले रह जाके पखे, पीछे ई जे पास।। 2।।
सादुळ अेह संसार के, द्रिष्ट राम दे देव।
गुरु गम वन लागे गफल, समरण पूजा सेव।। 3।।

वाणी

मेरे इक राम सत अे माई मेरे, पूरब भाग मिले गुरु, पूरा, गफलत दूर गुमाई। बाबा गफलत दुर गुमाई, मेरे इक राम सत.....।। पद।।

पाबू गोगा कोइक पूजे, जोगण चौसठ जाई।

मूरत करे पत्थर की मानी, धरत राम दे धाई ।। 1 ।।
भूत पीर केता भरमाया, भूत पूजता भाई ।
के खेता हूड़मता केई, मोगा पीर मनाई ।। 2 ।।
सालग राम पत्थर की सेवा, नम नम सीस नमाई ।
सालग राम है सिरजन हारा, अेसी अंध अंधाई ।। 3 ।।
अठसठ तीरथ के फिर आवे, भरम किते भटकाई ।
अेसा लोक वेद सब अंधा, अण दिठे पत आई ।। 4 ।।
भगवत केता भरमाया, गीता केते गाई ।
पड़पंच लागा तीन पांच कै, भगती गये भूलाई ।। 5 ।।
सांग वेख सत राम न सेवे, पेट भरण पण्डताई ।
दूजो शुब्द सुणावे दूजा, वेहद ओर वताई ।। 6 ।।
इउ कहता है ईस अजूनी, वाता लोक वडाई ।
आद मंध अंत राम अजूनी, कर धन खबर न काई ।। 7 ।।
व्रहमा विष्णु शम्भू वडके, भरम रेत भूरकाई ।
महाणे नांख्यो जाल मछी कूं, मिल सब लोक मुंझाई ।। 8 ।।
व्रहमा विष्णु, शभू वडके, जग सब पूजे जाई ।
पड़पच अे तीन परले का, पूजारा क्या पाई ।। 9 ।।
जंण जंण तंण तंण जगत जहूरा, वन वन मूलक वसाई ।
राम अन्दर बाहर रामा, नयासत सब नसाई ।। 10 ।।
सहेसर नामे राम न सेवा, द्धिल दर रांम दोवाई ।
उलट सुलट टुबकी दे आया, समता राम सदाई ।। 11 ।।
सादूळ राम सकल में समता, सकल मुकत समताई ।
आर पार है राम अखण्डी, कहता सुणत है काई ।। 12 ।।

साखी

सादुळ है अेक राम सत, आन देव की आन ।
जो सेवे है फल जिसो, मानो भा मत मान ।। 5 ।।

वाणी

मेरे अेक राम सत महाराज मेरे, पूरब भाग
मिले गुर पूरा, कीये सफल सिध काज।
बाबा कीये सफल सिध काज।
मेरे अेक राम सत महाराज ....।।पद।।

भूत प्रेत पूजे जग भेरु, राजा रावत राज।
भांड पूजना भोपा भरड़ा, कीया स निरफल काज।। 1।।
जंतर-मंतर नाटक चेटक जुगती, शंख वजावे साज।
आन देव की सेवा आसा, कीया स काज अकाज।। 2।।
व्रहमा विष्णु शंभू वडके, लोका त्रहु न लाज।
भरम करम का बांधे भारा, खाये खाज अखाज।। 3।।
लेखो चोखो मूल न लाभे, दीयो कुमत रो दाज।
आन देव की पूजा अेसी, रूपे वीच रवाज।। 4।।
सादूळ एक राम सत सत है, राम वडे वड राज।
सुर दोय साधे जोत सरुपी, सकल राम सिरताज।। 5।।

साखी

सादुळ है एक राम सत, ओर कहे से ओर।
देख नार कंत दोय की, ठहे न एकी ठोर।। 6।।

वाणी-राग विहाग

साखी

सादुळ वेख संसार की, बोली वात बिरंग।
रूप वेख सिर राम को, सेव देव सरबंग।। 1।।
सादुळ तानक सरब कूं, जगत बराबर जेथ।
साहब कोघर वेख सिर, तिरगुण सेवे तेथ।। 2।।
सादुळ तानक संत के, लागे सब नर लोय।
साहब को घर वेख सिर, सेव आन सब कोय।। 3।।

सादुळ तानक संत की, वेख सकल के वीच।
एक भुजे सो उतमा, नर दोये भुजे स नीच।। 4।।

वाणी

अब मेरे एक राम की आस अब मेरे,
अेको एक राम की आसा, दुसर रखे न दास।
अब मेरे अेक राम की आस............।। पद।।

समरण कर कब साहब समरे, आन देव की आस।
अेक नार दोये कंत उसी के, रहे न एकी रास।। 1।।
सालग राम पत्थर की सेवा, दाखे हां हर दास।
एक कंत के दोये असती, ओ नित रोज उदियास।। 2।।
प्रथम जे नर अब न पूजियो, पूजियो ढाक पलास।
पीछे उवां को फल नहीं पायो, नुखतो गयो नरास।। 3।।
सत सत एक साहब को सरणो, तोड़ न छोड़यो तास।
सनमुख रोज उसी को साहब, पल पल जाके पास।। 4।।
सादुळ चरण सरण सरणाई, वडो वडो विश्वास।
उलटो सुलटो बाहर अन्दर, समरण सास उजास।। 5।।

साखी

सादुळ तानक संत की, सकल वेख सिर सेल।
सो माने सो संत है, खलकत लखे न खेल।। 6।।

वाणी

रिदे एक राम नाम को रंग रिदे,
उलटो सुलटो बाहर अन्दर,
समता गत सरबंग बाबा समता गत सरबंग
रिदे एक राम को रंग, रिदे.........।। पद।।

मैं इक राम राम सत मंगा, संत राम को संग।
राम राम सत रामदोआई, अवरस तजे अलंग।। 1।।

आन देव की पूजा आसा, भगत भजन में भंग।
दोये नारी एक कंत कूं देखे, जिउ जिउ मिटे न जंग।।2।।
प्रेम हरी रस राम न पावे, पाचां के परसंग।
एक मते जन एक अकेलो, सो पावे सत संग।। 3।।
सादुळ साहब सरबंग सूरत, एक सकल अंग अंग।
जोत मिले है जोत सरूपी, गंग गले मिले गंग।। 4।।

साखी

सादुळ तानक संत की, त्याग एसो गत तोफ।
एकी सां तन उड़ गये, होय न दूसर होफ।। 6।।

साखी

सादुळ है एक राम सत, सकल बराबर संध।
सत रिदे लागो, शुब्द, बूडा बेला बंध।। 1।।
सादुळ देख्यो सकल में, निरख देख नर लोय।
खण्ड पण्ड व्रहमण्ड खलक, सकल बराबर सोय।।2।।
सादुळ है एकराम सत, दीना नाथ दयाल।
मेहर करे मुझ मेटे है, जीव के आल जंजाल।। 3।।
सादुळ है एक राम सत, प्रगट पूरण पद।
उलट मिलयो अनहद सां, होतब फेर न हद।। 4।।

वाणी

अब मेरे एक राम की आंण, अब मेरे,
उलटो सुलटो बाहर अन्दर, निरभे घूरे निसाण।
बाबा अब मेरे एक राम की आण, एक राम......।। पद।।

आन देव की पूजा आसा, खेल चुतरसी खांण।
जहां आसा जहां वासा जांही, पूछो वेद पुराण।। 1।।
दंन दंन सेवे आन देव कूं, होतब सुख की हांण।
जो कुछ करसे भुगते जे दंन, राजा रावत रांण।। 2।।

मानखो रतन अमोलख मुरख, अे आयो अहसांण।
आज सवारो मरणो अंत है, जांण सगे तो जांण।। 3।।
मुक्ता राम सकल के मांही, पूरण सकल पछांण।
पण्ड खण्ड व्रहमण्ड से परबत, सकलस मांह समांण।। 4।।
सादुळ लागो सत सत शुब्दे, घर मांही घमसांण।
दीप उदोत दसो दिस देख्यो, परवा़णो परवा़ण।। 5।।

राग सोरठ- राज त्याग वेराग को अंग- साखी

सादुळ त्याग वेराग, संत, तज धन माल तरक।
जोग लिया कारण जिके, गया जै मांह गरक।। 1।।
सादुळ साह सुलताण से, महल तजे धन माल।
सुनमुख सांई सां सदा, हेत फकीरी हाल।। 2।।
सादुळ साह मनसूर से, वारत एक वमेक।
सूली चड़ बोले शिखर, एनल एनल एक।। 3।।
सादुळ शेख फरीद से, कुए विच लड़क मकान।
सांई मिलणे, सही, जले जलाये जांन।। 4।।

वाणी

को सुणता है, फिरणा फरक फकीर जीवत मरणा हैं।
ई फिरणा फरक फकीर संत को सुणता है भाई फिरणा...।। पद।।
राजस तज्यो भरथरी राजा, छोड़या महल मालीया छाजा।
उलटी माया नजर न आवे, सूधा गरक सधीर।। 1।।
बोले साह सुल्तान बुखारे, कोपत बानी हंसी किनारे।
सनमुख बानी बोल सुनावे, तुरत लगी तकवी़र।। 2।।
शेख फरीद कुएं पर लटके, शाह मनसूर सूली पर चड़के।
अेलन अेलन सुख न अलावे, तन विचे लागो तीर।। 3।।
काया करम रेख नही काई, सदा निरमल गरक सदाई।
भगत राम को सो जन भावे, मारे मन पंच मीर।। 4।।
धन धन सन्ता अे धन धारे, न्यात पांत कुल जग सां न्यारे।

ज्ञान व्रहम गत हरजस गावे, सदा चरण गत सीर।। 5।।
अनंत कोट संत होय अण रागी, तुरन्त जन्मते सुखदेव त्यागी।
सादूळ क्या कहे समझावे, कहते संत कबीर।। 6।।

साखी

सादुळ हर जन संत के, तन मन धन को त्याग।
संत गता सतसंग में, वाधे व्रह वेराग।। 5।।

राग सोरठ-वाणी

संत को सुणता है, वात न को वहेवार, जीवत मरणा है।
वात न को वहेवार जीवत मरणा है भाई वात न को वहेवार,
जीवण मरणा है।............... पद।।

राजा गोपीचंद तज राणी, कोट किलो तज तज कुल कांणी।
माल खजाना तज धन माया, सुनमुख चेतन सार।। 1।।
पूजे नहीं संत पत्थर पाणी, निरभे पद की संत निसांणी।
करम भरम नहीं संत के काया, होड न जीत हार।। 2।।
खेले नहीं संत चुतरस खाणी, जो गत संत की जो गत जांणी।
दिद द्रिष्ट में दरसे दाया, धुर पग जग सां धार।। 3।।
बोले संत हरी रस बाणी, परवाणो संत को परवांणी।
छपरा नहीं तहां धोप न छाया, नही को नर नहीं को नार।। 4।।
जीवत मरतक जे संत जांणी, पूरण पद सो संत पछांणी।
जहां को मुआ नहीं को जाया, दीद वना दीदार।। 5।।
सादूळ उलटे समझ समाणी, तुम हो पेटो तुम हो तांणी।
प्रेम हरी रस प्याला पाया, अगम भेद अपार।। 6।।

साखी

सादुळ त्याग वेराग संत, तन माया को मोह।
सहजे ही संत संग में, तन-मन मेलो तोह।। 6।।

अनहद उपदेश को अंग सोरठ- साखी

सादुळ न्यारो देह सकल सां, देही सां है दूर।
जात पांत नही हर जठे, भुगत मुक्त भरपूर।। 1।।
सादुळ न्यारो सकल सां, देह विदेह न देख।
संत लखे ऐसी समझ, अनहद अखे अदेख।। 2।।
सादुळ न्यारो सकल सां, सकल मांह हर सोय।
संत लखे ऐसी समझ, कहता लखे न कोय।। 3।।
सादुळ न्यारो सकल सा, पाट घाट नहीं पण्ड।
देह विदेह न द्रिष्ट है, वात न पण्ड ब्रहमाण्ड।। 4।।

वाणी

प्यालो प्रेम हरी रस पायो ओ, प्यालो प्रेम हरी रस पायो ओ।
उल्टो सुल्टो बाहर अंदर, दीप उदे दरसायो ओ।
प्यालो प्रेम हरी रस पायो ओ,..............।।पद।।

तीन लोक सां न्यारो तकीयो, जननी ओ नही जायो ओ।
अवर सबे त्रहलोक उदर मे, आप उदर नहीं आयो ओ।। 1।।
देह विदेह वना वन द्रिष्टी, गुण वन रसना गायो ओ।
समरण वन है समरण सहजे, ध्ये ध्याता नहीं धायो ओ।। 2।।
उलट चले उड़ अनड़ आकाशे, दृष्ट थकी दरसायो ओ।
निरदावा निरलेस निरासा, थिर मन नेहचे थायो ओ।। 3।।
सादूळ सब सां न्यारो साहब, अनहद गयो न आयो ओ।
जीवत मरे फेर न जीवे, अबे समझ में आयो ओ।। 4।।

साखी

सादुळ न्यारो सकल सां जहां कोई आय न जाय।
समरण नहीं साखी शुब्ध ध्ये, ध्याता नहीं धाय।। 5।।

वाणी

पायो प्रेम हरी रस प्यारो ओ, पायो प्रेम हरी रस प्यारो ओ।
मुक्ता गत आतम मांही, देख्यो दीप दूसरो ओ।।
पायो प्रेम हरी रस.....।। पद।।

जो गतराम संतां की जाणी, धार सार चौधारो ओ।
अेथ ओथ है बाहर अन्दर, पूणर सकल पसारो ओ।। 1।।
कथणी बकणी नहीं को करीयो, वात न को वहवारो ओ।
कहण सुणण नहीं कार अकारो, भेद न हलको भारो ओ।। 2।।
आप गुमायो पायो अनहद, होड न जीत न हारो ओ।
द्रिष्ट थकी हम जब ही देख्यो, व्रहम को खोज विचारो ओ।। 3।।
सादुळ समझे उलट समायो, तहां रवि चन्द्र न तारो ओ।
नीहीं को देह विदेह नांही, निरख परख सां न्यारो ओ।। 4।।

साखी

सादुळ न्यारो सकल सां, देह न को विदेह।
निरख परख सुणता नांही, ओलख साहब अेह।। 6।।

राग सोरठ-हेली चिताणी को अंग।।

सादुळ अज हूं चेत सठ, वीत गई सब वार।
शिस समूलो सेत है, समर राम तंत सार।। 1।।
सादुळ अजहूं चेत सठ, समचो देख संसार।
सोते दीठा सांझरा, सो उठ चले सवार।। 2।।
सादुळ अजहुं चेत सठ, अब नेड़ो है अंत।
राम समर दंन राम के, सुन मुख सेवो संत।। 3।।
सादुळ अजहुं चेत सठ, कड़के सिर पर काळ।
आई वार चलणो उठे, बूढा कुण कुण बाळ।। 4।।

वाणी

हांये हेली राम समर दंन रात के, चित मन कर कर चोज।
हेली राम समर दंन रात के............।। पद।।

हांये हेली चोरी जार चपेटका, चित चाले वे चोज।
हांये हेली जम पकड़ेगो जीव कूं, हो हो कूक हरोज।। 1।।
हांये हेली एक अकेलो अंत सिर, बीजो तज सिर बोज।
हांये हेली माग पण्डत कहां मर गये, भाणुमती कहां भोज।। 2।।
हांये हेली सब कूं पूरण सब संगी, रात दनां नत रोज।
हांये हेली राग रंग रुप रस, सब में रस मोज।। 3।।
हांये हेली सादूळ सतगुरु संत सा, मांग हरी रस मोज।
हांये हेली सत संगत हर संत की, खोजी आतम खोंज।। 4।।

साखी

सादुळ वीती रात सब, वहे जावे दन वीत।
काळ करे सिर नीत कड़का, नर क्यां सुवे नचीत।। 5।।

वाणी

हांये हेली राम समर दिन रात के, अे मानो उपदेश।
हांये हेली राम समर दिन रात के................।। पद।।

हांये हेली पंथवाड़ी क्या पूज है, पड़दे मूलम पेश।
हांये हेली पड़दे पेठा पण्ड कूं, लागे अंत सिर लेश।। 1।।
हाये हेली सूधा चल सत संग में, काया तजो कलेश।
हांये हेली पल पल बोले प्रगट है, हर जन साख हमेश।। 2।।
हांये हेली निरदावा अंग निरमलो, दास भाव दरवेश।
हांये हेली ज्ञान गरीबी गलतान है, प्रेम प्रीत परवेश।। 3।।
हांये हेली सादूळ सतगुरु संत सा, हाजर रहो हमेश।
हांये हेली दीप उदोत दसो दिसा, देख सन्तां को देश।। 4।।

साखी

सादुळ साहब सकल में, निरख दिसो दिस नूर।
में ते सारी मांड में, हाजर नूर हजूर।। 6।।

साखी

सादुळ चालयो जाय सब, अजहूं चेत अजांण।
सारो सीस सपेत हैं, जाण सगे तो जांण।। 1।।
सादुळ चाल्यो जाये सब, रंक राजा रंढ रांण।
राज छभा होती रळी, मड़े ले गये मसांण।। 2।।
सादुळ चल गये सठ, भोज राज से भूप।
गढ़ मण्डप सब तज गये, राग रंग रस रूप।। 3।।
सादुळ चाल्यो जाये सब, बड़े भूप बलवंत।
छाहा दोये दस जोजन छतर, ओ पण मर गये अंत।।4।।

वाणी

हांये हेली वीती जावे वार है, कर मन सुकरत काज।
हांये वेली वीती जावे वार है..........।। पद।।

हांये हेली अजहूं जीव अचेत है, गुड़े काळ सिर गाज।
हांये हेली चोकस उठे चालणो, राणा रावत राज।। 1।।
हांये हेली बह आतर कर बाधीअे, पांणी पहेला पाज।
हांये हेली पेहले न बांधी पाज तो, कूच होयेगो काज।। 2।।
हांये हेली राम अनुराग है, सब संता को साज।
हांये हेली नवा खण्डा में नंझराम है, तीन लोक सिर ताज।। 3।।
हांये हेली पूरण हम कूं पूरणा, नेम गरीब नवाज़।
हांये हेली संत बोले सत शब्द है, अणभे रोज आवाज।। 4।।
हांये हेली सादूळ सतगुरु संत है, दीन गरु को दाज।
हांये हेली आगे पीछेआप नां, लाला मेरी लाज।। 5।।

साखी

सादुळ समरो राम सत, हेत हींये सिर हार।
खिसतो हींये में खटक, समरण आतम सार।। 6।।

वाणी

हेली अे साहब आतम सार है, धार धीर मन धीज।
हेली अे साहब आतम सार है................।। पद।।

हेलीए कूड़ कपट क्यां कीजिये, खोट समर मन खीज।
हेलीए तेज तमारे तन को, छन छन जावे छीज।। 1।।
हेलीए सत शब्द गुर संत को, आतम राम अजीज।
हेलीए बहड़े कांई बूझीये, चित मांही निझ चीज।। 2।।
हेलीए मुक्ता गत आतम मांही, परतक देख पतीज।
हेलीए अनड़ रहत आकाश में, वादल गाज न वीज।। 3।।
हेलीए सादूळ समरण सार है, बुध सुध पोखयो बींज।
हेलीए बीझ मांही है बूझणो, अनहद अखे अबीज।। 4।।

साखी

सादुळ माने सत सत, वारत ज्ञान वमेक।
अवरस तज माया असर, उलट सही कर एक।। 6।।

उपदेश को अंग-साखी

सादुळ मानो सत सत, आतम गत उपदेश।
मुक्ता गत हर सिंधु मांही, हम तम सकल हमेश।। 1।।
सादुळ मानो सत सत, वेहद अंत की वात।
सोई न्यारो सकल सां, कहे संत कुशलात।। 2।।
सादुळ मानो सत सत, संत को शब्द संदेश।
सत संगत हर संत की, संत को शुब्ध संदेश।। 3।।
सादुळ मानो सत सत, सब संत को समचार।
सारा बुड़ा सिन्धु में, पीछे मांह पुकार।। 4।।

वाणी

हेलीए व्रहम अपणे के वीच है, व्रहम को खोज विचार।
हेलीए व्रहम अपणे के वीच है,.......।। पद।।

हेलीए कोटक आतर कीजिये, समरण आतम सार।
हेलीए बीजो मुख क्या बोलियो, वना बोल विचार।। 1।।
हेलीए समरे सोई संत है, नर कुण कुण है नार।
हेलीए साहब सरबंग संग है, आतम कूं आधार।। 2।।
हेलीए मछली को घर जल मंही, जल में रहत जमार।
हेलीए संत रहत हर सिन्धु में, निरख संत निरधार।। 3।।
हेलीए सादुळ सतगुर संत की, दृष्टी सकल दुसार।
हेलीए अनहद अखे उदोत है, धरीये सकल सां धार।। 4।।

साखी

सादुळ मानो सत सत, सब सतां की साख।
दीप दुसारो दस दिसो, चहुं दिस जले चराख।। 5।।

वाणी

हेली ए व्रहम अपणे के वीच है, सुख सागर की सीर।
हेलीए व्रहम अपणे के वीच है.....।। पद।।

हेलीए पांच डार इक पतर में, फाकी लीन फकीर।
हेलीए आनंद सुख भयो आतमा, सिन्धु में रहत सधीर।। 1।।
हेलीए शील संतोक दया धरम संग, सत गत ग्रहत शरीर।
हेलीए दे टुबकी दरीया मही नाहिइयो, निरमल नीर।। 2।।
हेलीए सतगुरु वाहयो सत शुब्द तन विच लागो तीर।
हेलीए हेकी सांई होतबो, मरतक है मन मीर।। 3।।
हेलीए सादूळ सार समाप है, अणभे संत अमीर।
हेलीए अखे उदे वे अंत को, प्रेम प्यासो पीर।। 4।।

साखी

सादुळ साहब सन्धु है, मंडप मंडयो सो मांहे।
संत कूं आयो समझ में, नुगरा समझे नांहे।। 6।।

साखी

सादुळ राम समाप है, मे ते सरबंग मांह।
देख्यो साहब भर द्रिष्ट, निजरे दूजो नांह।। 1।।
सादुळ सकल समाप है, अेक बराबर अेक।
अेक बराबर अेक है, अेके मांह अनेक।। 2।।
सादुळ सकल समाप है, जगत न जाणे जेथ।
अन्धा आगे आरसी, उद गत ओथ न अेथ।। 3।।
सादुळ सकल समाप है, जो दिसे सो जग।
समझ सही सत शुब्द सां, परख पछाण्यो पग।। 4।।

वाणी

हेलीए राम समर दिन रात के, भुजन न एक पल भूल।
हेलीए राम समर दिन रात के.................।। पद।।

हेलीए राज पथरणा रेशमी, तज मन तकीया तूल।
हेलीए विछड़ो जब ही वेल सां, फिर कमलाणो फूल।। 1।।
हेलीए माया देख मांडकी, डिगो न मन तूं डूल।
हेलीए कनंक कामणी कलंक है, खबड़ दार मत खूल।। 2।।
हेलीए वेख सांग बह वारता, सब माया को सूल।
हेलीए भगत न आतम भेद है, करणा सूल कसूल।। 3।।
हेलीए सादूळ साहब सन्धु है, झाक झकोला झूल।
हेलीए तीन लोक न्यारा तपे, संत को मांह सलूल।। 4।।

साखी

सादुळ साहेब संध है, सत गत मांह समाप।
सोई न्यारो सकल सां, अनहद अखे अमाप।। 5।।

वाणी

हेलीए राम समर दिन रात के, पांचेई विसीयर पाल।
हेलीए राम समर दिन रात के..........।। पद।।

हेलीए सतसंग कीजे संत की, महल तजो धन माल।
हेलीए कड़क अचन को काल है, कुण जाणे अज काल।। 1।।
हेलीए दया गरीबी दीनता, चित गुर वचने चाल।
हेलीए जीताई मृतक जठे, हर संता गत हाल।। 2।।
हेलीए सेवाराम संत सतगुर, निस दिन नजर निहाल।
हेलीए दया नजर गुर दीन है, थिर आयो मन थाल।। 3।।
हेलीए सादूळ साहेब सन्धु है, संत रहता गत साल।
हेलीए उलट सुलट खेल इसो, ताल न चुके ताल।। 4।।

साखी

सादुळ साहेब सन्धु है, संत जाणे गत सोय।
सुर नर उसर मुनेसरा, कहता लखे न कोय।। 6।।

साखी

सादुळ अेह उपदेश सुण, भाव भगत संत भाग।
सार धार सत संग में, जद तद चेतन जाग।। 1।।
सादुळ अेह उपदेश सुण, द्रिष्ट में भाले दूर।
मुक्त मिलो आतम मंही, हाजर सदा हजूर।। 2।।
सादुळ एह उपदेश सुण, शील ग्रहण द्रिढ साध।
मुक्तागत आतम मही, सहजे सहज समाध।। 3।।
सादुळ एह उपदेश सुण, साधो शील संतोक।
मार फते कर मन कूं, रिदे कवल में रोक।। 4।।

वाणी

होलीए रिदे कवल में मिल रहयो, अे मेरो उपदेश।
हेलीए रिदे कवल में मिल..........।। पद।।

हेलीए अनड़ रहत आकाश है, पंखी ओर सघे न पेश।
हेलीए आस निरास अनड़ है, बीजा सगे न बेश।। 1।।
हेलीए जम डर जोखो जीव को, खटको मन को खेश।
हेलीए सतगुरु की सतसंग में, हाजर रहो हमेश।। 2।।

हेलीए जग माया रस जाल सो, पंखी अे परदेश।
हेलीए सत संगत हर संत की, देख्यो अे अपणो देश।।3।।
हेलीए सादूळ समझ समाप है, द्धर मांही द्धरवेश।
हेलीए आण गेण की आस न है, अवरस मिटयो अंदेश।।4।।

साखी

सादुळ एह उपदेश सुण, मन साधो मन मांह।
साहब सरबंग संग है, न्यारो है कुछ नांह।। 5।।

वाणी

हेलीए रिदे कवंल में मिल रहयो उलट सार अभन्यास।
हेलीए रिदे कंवल..................।।पद।।

हेलीए जप तप साधन जोग है, फंद तिरबंध गल फास।
हेलीए सूरे सबल सेवीयो, नुखतो गयो निरास।। 1।।
हेलीए रिदे कंवल नित रोज है, समरण सास उसास।
हेलीए गलताना गुर गम में, पल पल संतां पास।। 2।।
हेलीए काट कूट नित कीजिए, नफर पांच को नास।
हेली ए अवरसु, ओरां अगन में, एक एक की आस।। 3।।
हेलीए पीर पैगम्बर पण्डता, रहे न ऐही रास।
हेलीए मुनी ध्यानी मसर है, अे तीन गुणा लग तास।। 4।।
हेलीए मेरो साहब में मंही, वीच रिदे विश्वास।
हेलीए द्रिष्ट मुस्ट नहीं देह है, निझ जन संत नवास।। 5।।
हेलीए सादूळ समझ समाप है, परगट दीप प्रकाश।
हेलीए चसम चड़े चौधार है, दाखे सादूळ दास।। 6।।

साखी

सादुळ एह उपदेश सुण, वन रसना वन वात।
दफतर न्यारो देह सां, सतगुर दीन सखात।। 6।।

साखी

सादुळ एह उपदेश सुण, हाजर सुनमुख होय।
मुक्ता गत है सब मंही, सब सां न्यारा सोय।। 1।।
सादुळ एह उपदेश सुण, करो सफल सिध काज।
सब सां न्यारा मांह सब, तीख सकल सिर ताज।। 2।।
सादुळ एह उपदेश सुण, सनमुख शुब्द संदेश।
मुक्ता गत मांही मण्डप, देख हमारो देश।। 3।।
सादुळ एह उपदेश सुण, मोख मुक्त सत मान।
सोई न्यारो सकल सां, सोई समझ समान।। 4।।

वाणी

हेलीए द्रिष्ट मुस्ट वन देह है, अनहद अखे अरुप।
हेलाए द्रिस्ट मुस्ट................।। पद।।

हेलीए कलंक कळेसी कपट है, काम वडे अंध कूप।
हेलीए संता की सत संग में, कामी देख करुप।। 1।।
हेलीए अनंड़ रहत आकाश में, धरता छांह न धूप।
हेलीए निरखण कुं कुछ हैं नहीं, रंग रेख नहीं रूप।। 2।।
हेलीए लेख सेख वन सो लखे, संत वन देह सरूप।
हेलीए निरदावा निरबंध है, चाप न संत के चूप।। 3।।
हेलीए सादूळ समझ समाप है, अेसो भेद अनूप।
हेलीए लखे न सो सुर लोक है, भट नट लखे न भूप।। 4।।

साखी

सादुळ एह उपदेश सुण, परवाणो परवाण।
अंतर गत अनहद अखे, निरभे पद निरवाण।। 5।।

वाणी

हेलीए द्रिस्ट मुस्ट वन देह है, सनमुख सार समाप।
हेलीए द्रिस्ट मुस्ट.............।। पद।।

हेलीए सत सत लागो शुब्द है, सुख दुख मिटयो संताप।
हेलीए उलटो सुलटो आप में, आपे साहब आप।। 1।।
हेलीए तीन लोक नहीं तठे, तप न जाके ताप।
हेलीए तपे न जाके ताप है, तपयो संत सो ताप।। 2।।
हेलीए जोग न साधन है जठे, जप न जाके जाप।
हेलीए जप जाप नहीं है जठे, जपयो संत सो जाप।। 3।।
हेलीए वन थाप न की वात है, अलख अलेख अथाप।
हेलीए थपे न कोउ थापना, थाप न सो संत थाप।। 4।।
हेलीए कुंण जांणे सो है, किसो, अनहद अखे अछाप।
हेलीए सनमुख लागी संत के, छाती उपर छाप।। 5।।
हेलीए परे परे सां है परे पुन्न नहीं कोउ पाप।
हेलीए नाद बूंद नहीं निरख है, निरख्यो संत निपाप।। 6।।
हेलीए सादूळ समझ समाप है, अगर भेद अमाप।
हेलीए मपे न आवे माप में, मथ्यो संत सो माप।। 7।।

साखी

सादुळ अेह उपदेश सुण, पेट न जाके पीठ।
निरखण में आवे नहीं, दसो दिस द्रिग भर दीठ।। 8।।

साखी

सादुळ एह उपदेश सुण, वना नेण वन वैण।
निरखण में आवे नही, निरख्यो सो निझ नैण।। 1।।
सादुळ एह उपदेश सुण, सहजे सहजे सेख।
सहजे समझ समाप है, रूप न जाके रेख।। 2।।
सादुळ अेह उपदेश सुण, मुक्ता गत सन्धु मांह।
सोई बूडा सन्धु में, तीर न लागे तांहै।। 3।।
सादुळ अेह उपदेश सुण, निरख परख कुछ नांह है।
सतगुर दियो शब्द सत मिळ बेठा संत मां है।। 4।।

वाणी

हेलीए निरखण में आवे नहीं बूझ खोज नहीं बाण।
हेलीए निरखण में आवे नहीं............।। पद।।

हेलीए गरभ न आवा गेण है, खेल न चुतरस खांण।
हेलीए देख मण्डप नहीं देश है, तिरगुण न ताणो तांण।। 1।।
हेलीए द्रिष्ट मिली उण देश में, सांसो सोग न सांण।
हेलीए संत जन चाखे भर सुरक, रस वन समझ रसांण।। 2।।
हेलीए सनमुख कोउ संत है, जीवत मृतक जांण।
हेलीए जल थल महीअल हर जठे, पूरण सकल पछांण।। 3।।
हेलीए साहेब न्यारो सकल सां, सकल सुमाह समांण।
हेलीए सत शब्द गुर संत को, भयो उदे एक भांण।। 4।।
हेलीए सादुळ समझ समाप है, निरभे पद निरवांण।
हेलीए सत शुब्द गुर संत को, परवाणो परवांण।। 5।।

साखी

सादुळ अेह उपदेश सुण, निस दिन राखो नेम।
उलट सुलट बाहर अन्दर, पी भर प्यालो प्रेम।। 6।।

साखी

हेलीए निरखण में आवे नहीं, सोई है मेरो सेंण।
हेलीए निरखण में आवे नहीं,...........।। पद।।

हेलीए धरण अबंर नहीं धायबो, रवि शशि उदे न रेण।
हेलीए तारा मण्डल निहीं तहां, गरभ न आवा गेण।। 1।।
हेलीए कुटुंब कबीलो कुळ नहीं कोउ, भाई नहीं न भेण।
हेलीए जात पांत जग नहीं जठे, मेलो एकी मेंण।। 2।।
हेलीए पाप धरम नहीं पाअेबो, लेख न लेखो लेण।
हेलीए उलटो सुलटो एक है, दुसर नहीं न देण।। 3।।
हेलीए सादूळ समझ समाप हैं, वात तात नहींवेण।
हेलीए जोग जुगत नहीं जाप हैं, निरख परख नहीं नेण।। 4।।

साखी

सादुळ अेह उपदेश सुण, सत बोलो गुर संत।
सकल मुक्त इक सार है, आद मध्य नहीं अंत।। 6।।

साखी

सादुळ समझ समाप है, सत सत शब्द समान।
मुगता गत आतम महीं, मान सगे तो मान।। 1।।
सादुळ समझ समाप है, सत सत शबद सरुप।
त्यागी लखे न जप तपां, भट नट लखे न भूप।। 2।।
सादुळ समझ समाप है, सरबंग मांह सधीर।
सोई न्यारो सकल सां, धार रिदे में धीर।। 3।।
सादुळ समझ समाप है, सब सां न्यारो सोय।
समता गत मांही सकल, जेथ तेथ ज जोय।। 4।।

वाणी

हेलीए शिखर उपर साद है, सुणता है सोई संत।
हेलीए शिखर उपर साद है, सुणता है सोईसंत।
हेलीए शिखर पर साद है,............।। पद।।

हेलीए नहीं दिवस राती नहीं, तहां न पांचे तंत।
हेलीए निरखण कुं कुछ है नहीं, आद मध्य नहीं अंत।। 1।।
हेलीए समझ सार सत शब्द की, खरी रिदे में खंत।
हेलीए तीन लोक नहीं तठे, कोउ न नारी कंत।। 2।।
हेलीए लख वन संत सो लखे, चित में चाह न चंत।
हेली बहड़ न पाछा बहड़े, गज राज गेदंत।। 3।।
हेलीए सादूळ समझ समाप है, अखे उदे वे अंत।
हेलीए अनंत कोट में एक है, एके मांह अनंत।। 4।।

साखी

सादुळ समझ समाप है, अनहद अखे उदोत।
संत लखे अेसी समझ, ज्ञान गमे में गोत।। 5।।

वाणी

हेलीए शिखर उपर साद है, धरे संत तहां धीर।
हेलीए शिखर उपर साद है,..............।। पद।।

हेलीए सुर न लखे गत संत की, पण्डत लखे न पीर।
हेलीए त्यागी मुनी तपेसरा, ताकत ओले तीर।। 1।।
हेलीए अखे भेद अण मण्ड है, संचत नहीं शरीर।
हेलीए सुख सागर में संत है, सो संत सुख री सीर।। 2।।
हेलीए निरदवा निरलेप है, फेरी छुट फकीर।
हेलीए समता गत सत शुब्ध में, वडे विरायत वीर।। 3।।
हेलीए सादूळ समझ समाप है, धार रिंदे धर धीर।
हेलीए जीताई मर जाए सो, अनहद लखे अमीर।। 4।।

साखी

सादुळ समझ समाप है, समता गत जंन संत।
जीताई मर जाये जंन, तास लखे निझ तंत।। 6।।

राग-खंभाची

हालो सखीरी खेला होरी, संता री धरम शाला जी।
हालो सखीरी खेलां होरी सतां री धरम शाला जी,
पी पी मस्त प्याला जी।। ...।। पद।।

खट दरसण माया संग खेले, कर अपणा मूंह काला जी।
चउदे लोक तिरगुण का चाळा, ठीकर है सब ठाला जी।। 1।।
मरण है अेक दिन के मांही, बुढा कुण कुण बाला जी।
काया तज हरी समरण कीजे, देसी मोज दयाला जी।। 2।।
पल पल मेरे सतगुरू पाया, प्रेम हरी रस पयाला जी।
पी पी पी भर मस्त पयाला, मस्त छकया मतवाला जी।। 3।।
जीता मरतक खेले हरी जन, चला हरी संत चाला जी।
फाग वेराग उलट दे फेरी, ताल मिलया हर ताला जी।। 4।।
मस्तो पयालो पी पी मस्त, हो अे अलसती हाला जी।
सिंधु लेहर वीच समायो, हाल होए वेहाला जी।। 5।।

ग्यान गुलाल उडायो सतगुरु, लाल दियो रंग लाला जी।
मस्तो मस्त अलस्ती मस्ती, अे को मस्त अलाला जी।। 6।।
सनमुख खेल सदाहरी संता, वरछ सबूरी वाला जी।
अे तो दीप अनामी अनहद, नाम नहीं कुछ नाला जी।। 7।।
सादूळ हर होरी खेलां सन्ता संग, तास खुलया तन ताला जी।
हर हरदीप दिसो दिस होरी, अे कोई दीप उजाला जी।। 8।।

वाणी

हालो सखीरी खेलां होरी, सन्तां री दरबारा जी।
हालो संता री खेलां दरबारा, वल वल वारो वारा जी।। टेर।।

गाउगी प्ररी रीझाउगी री, है वड भाग हमारा जी।
उलट सुलट खेलो आतम, हरी समरण हूसीयारा जी।। 1।।
पलक न नयारी प्रीतम प्यारी, पलक न न्यारा न्यारा जी।
उलट सुलट मिल आतम मांही, सिंधु झकोला सारा जी।। 2।।
काया माया त्यागन कर के, जिस दिन खेलो न्यारा जी।
जीतक मरतक खेले सो जन, हर हर जीत न हारा जी।। 3।।
मैं प्रितम की प्रीतम मेरा, सारां का सिरदारा जी।
पूरण पूरा भर भरपूरा, थान थपा थिर थारा जी।। 4।।
सनमुख खेल सदा हरी सन्तां, वल वल वारो वारा जी।
खेल सभा हरि हरि जल खेले, तहां न रवि चंद तारा जी।। 5।।
ग्यान गली विच उड गुलालां, चेतन राम चौधारा जी।
मुकत खेलो सिंधु मांही, संत गत सांझ सवारा जी।। 6।।
दंन दंन दीप दसो दिस दीपे, संत के काज सुधारा जी।
हर हर खेल..... दसो होतबो, होड न जीत न हारा जी।। 7।।
सादूळ हर होरी खेल सन्तां संग, आतम दीप उजारा जी।
अेको खेल अनी अन अेको, हर हर खेल हमारा जी।। 8।।

राग-खंभाची-अरज को अंग साखी

सादुळ माला मन सां, फेरो निस दंन फेर।
पल पल पल पल पल पल, वेरो वेरो वेरो।। 1।।

सादुळ माला मन सां, रोज फेर दंन रात।
गुणता चुळे न आंगली, वन रसना की वात।। 2।।
सादुळ हाथ समरणी, माया की मन मांह।
पासे नासे पीव सां, तिरजा बीजा तांह।। 3।।
सादुळ हाथ समरणी, मन में ओरमखोल।
पासे नासे प्रीव सां, बीजां सां हस बोल।। 4।।

वाणी

फजर की मन में माला फेर, पल पल पल पल सार पुकारी, वेरो वेरो वेर।
फजर की मन में माला फेर.................।।पद।।

दरवाजे खड़े द्धरवेश, शुब्द सत हस्त ग्रह समशेर।
अपणे आप कूं फिर आपे, जद तद मन सिर जेर।। 1।।
वेख सांग वडाई वडपण, हूं तूं मन में हेर।
चोर चपेटक नाटक चेटक, अंधा छोड़ अंधेर।। 2।।
राव रंक वड राजा राणा, सब को मन में शेर।
वह बुध कर कर सब कूं बूझयो, एक नहीं अधशेर।। 3।।
अब तब दंन सब रोज अचळ के, समरण सांझ सवेर।
जीतो मन सां जुग जुग जीतो, नित संत कहे नवेर।। 4।।
सनमुख साखी सब सन्ता की, भन भन वाजे भेर।
उलटो सुलटो बाहर अंदर, घर में बूझो घेर।। 5।।
सादूळ माला वेल सवेरी, फेरे मन में फेर।
रात दिनां नित रोज रिदे में, साहब सास सगेर।। 6।।

साखी

सादुळ हाथ समरणी, रिदे न प्यारे राम।
वूहता जण वाटड़ी, गये न उगे गाम।। 5।।

वाणी

मना रे माला है मन मांह, फेरो वेरो वेर फजर की, नखली चोहा नांह।।
मना रे माला है मन मांह.................................. पद।।

माला रखो न गल के मांही, बहारख रखो न बांह।
वन रसना की वात विचारो, कल वल किजे कांह। 1।।
बाहर सूणे न कोउ बूझे, द्धिल अंद्धर की द्धांह।
सतगुरु जांणे सो मुझ सांपी, मन जांणे मन मांह।। 2।।
धोपा नहीं नहीं ध्ये धाता, छपरा नहीं न छांह।
निरबंध वात सकल सां न्यारी, जोग न जप तप जांह।। 3।।
सादूळ माला फेर सवेरी, तन मन मांह तांह।
उलटो सुलटो बाहर अन्दर, निरख परख कुछ नांह।। 4।।

साखी

सादुळ मन में समरणी, फेरे मन में फेर।
प्रेम प्रीत प्रतीत सां, वेरो वेरो वेर।। 6।।

अरज को अंग परज साखी

सादुळ के अरजां सुणो, रहता दयो सत राम।
अरजी हां तो घर अगी, नेम इयो नंझ नाम।। 1।।
सादुळ के अरजां सुणो, नाम दियो नित नेम।
दया करे मम दीजिए, पियाल हरी रस प्रेम।। 2।।
सादुळ के अरजां सुणो, दिद दियो दिखाय।
किरपाला किरिपा करे, प्रेम भगत परसाय।। 3।।
सादुळ के अरजां सुणो, सतगुरु संत सुजाण।
परवाणो दीजे प्रतक, निरभे पद निरबांण।। 4।।

साखी

रस्ता देखाओ गुरु राम का वो, नजर सोवाली तेरे नाम का।
रस्ता देखाओ गुरु राम का वो, नजर................पद।।

विशन शंभू अवर ब्रहमा, गरज सोवाली गाम का।
सिगासण मेरे सिखर उपर, कपट झपटा काम का।। 1।।
घर पेहलाजा सोआली घर के, दीया सहेला दाम का।
मान मजलस मुकरबो मन, मकड़ धम है माम का।। 2।।
दया कीजे दरस दीजे, धर सर संतां धाम का।
दान चरणा सेवा दीजे, अमर पटा अनाम का।। 3।।
सादूळ राखो चरण सरणे, जद तद आठे जाम का।
अनंत कोटे संत आगे, सबे सोवाली श्याम का।। 4।।

साखी

सादुळ के अरजां सदा, रात दिनां नित रोज।
सतगुरु दियो सत सत शुब्द, खोजी कर कर खोज।। 5।।

वाणी

पाओ पियाला गुरु प्रेम का वो निरमळ उजल नेम का।
पाओ पियाला............।। पद।।

दया करीजे दरसण दीजे, जाहर प्रगट जेम का।।
चाकर राखो सरण चरणा, कीजे दूरी केम का।। 1।।
अनंत कोटे तारे आगे, तारो अब ही तेम का।
प्रेम परचो नेम पयासा, एहनिस पूरण एम का।। 2।।
पूरण दाता दे परवाणो, खत हरी जन खेम का।
संत दरसण दे स्नेही, हर हजूरी हेम का।। 3।।
सादूळ कूं सत दीजे सतगुर, ढ्ढरस दरसण ढ्ढेम का।
हरी रसावल दजे हसते, पिरात दफतर प्रेम का।। 4।।

साखी

सादुळ की अरजां सुणो, राम वडे छिपाल।
भगत वछला मो दे भगत, सनमुख करो संभाल।। 5।।

राग परज - साखी

सादुळ पल की नांह सुध, कमठाणा क्या कीन।
जल खुटे जल जाएगे, मरे तड़ फड़े मीन।। 1।।
सादुळ पल की नांह सुध, आगे आगे आस।
जीव भूलाणो जात है, दाखे सादूळ दास।। 2।।
सादूळ पल की नांह सुध, बुध हीणा मुख बोल।
जाब मांगे जब जीव सां, ता को मूल न तोल।। 3।।
सादूळ पल की नांह सुध, आगे आस अनेक।
जे सौ वरस जीवणो, अंत मरण दन अेक।। 4।।

वाणी

कया करते कया करते कमठाणा वे,
कया करते आद्धम पलक खबर नहीं काई।
कया करते.....................।। पद।।

फूल देखे कया तुम फूले, झाल अगन में कया तुम झूले।
करत जतन कमलाणा वे, जयां नर जतन करता जाई।। 1।।
डाल पात फिरते नर डूले, खबर वना कितने नर खूले।
अंधा लोक अजाणा वे, पण्डे शब्द की खबर न पाई।। 2।।
कया ढिग ढिगलिउआ कया ढिग दुंले, तूं करतो सोई नर तूले।
राजा कया कया राणा वे, भूल भूलाणा कया सुत भाई।। 3।।
सादूळ सुख दुख सूल कसूले, भरम अंधेरे कितने भूले।
ज्यां आया जयां जाणा वे, रमझ देख संग चलत न राई।। 4।।

साखी

सादुळ पल की नांह सुध, नित दे उड़ी नीम।
चौकस अंत सिर चालसी, हिकमत छोड़ हकीम।। 5।।

वाणी

मोह रहयो मोह रहयो कर मेरी वे, निरख देख अंत रहणा नांही।
मोह रहयो मोह रहयो.................. ।। पद ।।

नहीं कोउ है अपना सुत नारी, हूं में करते वाजी हारी।
तूं क्या कहते तेरीये, तूं न कोई तेरा तांही ।। 1 ।।
भूल अडाणा करते भारी, थिर थिर करते क्या है थारी।
घरघर जाये घेरीये, द्धरवाजे खड़ आयो द्धाहीं ।। 2 ।।
खोट माया अंत होसी खारी, छप कर देखे है सब छारी।
विकळ काळ सिर वेरीये, बुध हीणो क्या लोडे बांही ।। 3 ।।
सादूळ खेलो सुनमुख सारी, वळ वळ हारी वारी वारी।
काया रही न केरीये, छोड़ चलेंगे वादल छांही ।। 4 ।।

साखी

सादुळ पल की नांह सुध, थाप न मूलम थाप।
वारी अपणी उठ वहे, बेटो कुण कुण बाप ।। 5 ।।

राग परज हर वाणीया को अंग -साखी

सादुळ की साखी सुणो, दियो सूं दफतर देख।
व्रहम विचारे वांणीयो, ले लेखो जो लेख ।। 1 ।।
सादुळ साहो सनमुख, वह राजी सुण वात।
दिया ता हम कूं दरस, सोले पांचे सात ।। 2 ।।
सादुळ की अरजी सुणो, सो माने अब सेठ।
दिया सो ले दाम, नामो वालो नेठ ।। 3 ।।
सादुळ साहब सेठ कूं, दीया चुकाये दाम।
पांच पचीसे लेपकड़, रिदे रहो धन राम ।। 4 ।।

वाणी

लेखो ले ले हर वाणीयो भर लेखो ले ओ ले
हर वाणीया भर लेखो ले.....।। पद।।

काळ क्रोध मद लोभ अहंकारा, लोक वडेरा पांचे ले।
अे सब पांच तीन की उत्पन, ओलख लीजे आठे अे।। 1।।
काया माया भरणा करणा, कहो कांकला कीना के।
कीना आपे आपे काटो, छानो छिपटो छतो छे।। 2।।
लूट लियो सारो कर लेखो, तन मन लूंटे लीना ते।
भरम करम लियो कर भेला, जारी ले से कीनां जे।। 3।।
शुब्द दियो सत सत संत सतगुर, भगत भाव भेलीजे भे।
पल पल प्रेम हरी रस प्याला, दया प्याला हर भर भर दे।।4।।
सादूळ हूं तो लीयो समूलो, लेखो चूको पछे की ले।
देण ने लेणो राम दोवाई, हर बोलो हर बोलो है।। 5।।

साखी

सादुळ साहब सेठ कूं, माप दिया है मन।
मन रहता हर मौज में, ता संग रहता तन।। 5।।

वाणी

देणो की देणो की कहो हर वाणीया थारो देणो की।
कहो हर वाणीया थारो देणो की, देणो की देणो की देणो की....।। पद।।

दफतर पांच तीन को दीनो, सांकया डरता सांसो सी।
वेख सांग वडाई वडपण, तरक मता जन तीना ती।। 1।।
तन मन चेतन दियो तम कूं, जो हूं तो सो दीनो जी।
एको एक तूं ही उर आतम, धरता करता पूता धी।। 2।।
सीस काट दियो सतगुर कूं, दया गरीबी सतगुरु दी।
मुकता गत हर सागर मांही, प्रेम पियालो भर भर पी।। 3।।
हाथा पोथी घर में हूंती, लेखो घर समेती ली।

हर काटयो खत अपने हस्ते, कहो सन्तां हर लेसे की।। 4।।
दरस्यो परस्यो नजर देख्यो, लाभ सोभ हसते लिखल ी।
करता एक ओर नहीं कोई, गरजा दूई हंती सो गी।। 5।।
सादूळ हूं तो दियो समूळो, बूधी का न हंती का बी।
काटयो खत सतगुरु कर कृपा, थाहत आद हंती सो थी।। 6।।

साखी

सादुळ साहब सेठ कूं, मन दिया निझ मूल।
ता मन साथे तन है, सरब दियो सादूळ।। 6।।

राम समोरी-चादर

चादर राम नाम की चौखी, दूर कीया सब दोखी।
चादर राम नाम....................।। पद।।

प्यासी है जाके उर प्यारी, अण प्यासी कूं ओखी।
राजा राज मुनेश्वर रिषी, जण जण जण जोखी।। 1।।
जब में चादर ओढी जब ही, सरबंग सार संतोषी।
जो ओढ़े सो अमर जोगी, अनहद गत अवलोषी।। 2।।
रामदास ओढ़ी रेविदास, आतम सार अनोखी।.....
कबीर दादू सुन्दर केई, सब सन्तां सिर सोखी।। 3।।
रोहल साहो सेवाराम, मिल सत शब्दे मोखी।
सादूळ चरण सरण सरणाई, पांच आतमा पोखी।। 4।।

वाणी

चादर राम नाम की चंगी संत ओढे सरबंगी।
चादर राम नाम की..............।। पद।।

चादर ररै ममै रंग चोड़ी, ररै ममै रंग रंगी।
रमै ममै रंग रंगी सुरंगी, वाका सब वद रंगी।। 1।।
उलटी सुलटी चादर ओढ़ी, फेर चौफेर फिरंगी।
ओढ़े सो संत जुग जुग अमर, अनहद सार अलंगी।। 2।।
राम चन्द्र कृष्ण सिर राजे, व्रहम विवके विरंगी।

सत राम वन खोज खबर सब, खोज खबर सब खंगी।।3।।
रोहल साहो सेवारामा, सूफी सब का संगी।
सादूळ चरण सरण सरणाई, मूल समूली मंगी।। 4।।

वाणी राग सामेरी चादर

अब मैं ओढी चादर ऐसी, जन संत ओढे जैसी।
अब मैं ओढी चादर ऐसी।। टेर।।

शीश दे ओढे जन सोई, बह संतों मैं बैसी।
राम रिदे उर सतगुरु राजी, लेख सेख जन लेसी।। 1।।
सोई चादर सब संता सिर, हरदम सार हमेसी।
जो जन तन मन सांपे जा कू, दया करै गुरू दैसी।। 2।।
अनंत कोट संतों सिर ओढ़ी, कहीये महमा कैसी।
जो ओढ़े सो अमर जुग जुग, द्धरवाजै द्धरवैसी।। 3।।
रोहल साहो सेवारामा, तंत निझ ओढ़ी तैसी।
सादुळ चरण सरण सरणई, हरद्धम सार हमैसी।। 4।।

राग झगलौ

लज राखो लजवारा, हरि हर पूरण हारा।
लज राखो लज वारा।। टेर।।

ध्रुव को पिता नृप कोपयो ध्रुव से, वदलयो है तन वारा।
अविचल राज दियो हरि आप, जांणत है जग सारा।। 1।।
हरणाकंश कोपयो हरिजन से, सुणलयो सो समीचारा।
हरणा कंश नख से हारयो, भगत प्रहलाद उभारा।। 2।।
नामे को दूध पीयो नैहचे, छपरा छाज छजारा।
देवल फोरे हरि दर्शन दिय, मृतक धेन जिवारा।। 3।।
कबीर के घर मौसे कारण, वारत है तन वारा।
सकळ वेख कूं सीधो सारयो, ताता ताम तैयारा।। 4।।
आपरो वृद वडेरो ऐसा, संतां को काज संधारा।
शरण आया संत अनेक सुधरया, आप वडा उपकारा।। 5।।

सादुळ के अरजां सुण सांईया, हमै दुख काट हमारा।
कर कृपा मेरी वेदन काटो, साहब हो सिरदारा।। 6।।

वाणी

रंग राम भुजन सां राती, वळे न दुसर वाती।

रंग राम भुजन सां राती,....................।। टेर।।

राम को नाम छोडे ज्यूं राजी, गाफल रागों गाती।
खोज खबर बिन नीमी खेई, छड़-छड़ कूटे छाती।। 1।।
पूरण परचे प्रितम पायो, सत गत दोनों संगाती।
अवर पुरुष मेरे निजर न आवे, अे ही मेरे वण आती।। 2।।
अब तो घूमों उलटी-सुल्टी, मघन प्रेम मद माती।
मस्तो मस्त अलस्ती मस्ती, पाप पुन प्रभाती।। 3।।
सादुळ राम दिसो दिस सुनमुख, नहीं को जात न न्याती।
काया माया भरणा न करणा, रंग पद दिवस न राती।। 4।।

साखी

सादुळ एह चेतन सदा बोले तो हर बोल।
बोल न हर बोलीए तो, उन मन रहे अबोल।। 1।।

मिरग जल सीत कोट मन मुरख,
जग सपनो कर जांण रे।। मिरग जल।। टेर।।

मात पिता सुत नार मोहयो, कुटंब कुळ की कांण रे।
भूल भरमणा बहत भारी, अंध सो अलूझांण रे।। 1।।
पेकम्बर वड पिर पतशाह, शाह के सुलताण रे।
मोटका एक दंन मरसी, राव राजा राण रे।। 2।।
आप हाथे आपणे अंध, दीया दहू पग दाण रे।
फास अपनी आफ फासयो, होत आपे हांण रे।। 3।।
आयगो एक दिन अचन को, जासी ले जमराण रे।
जीव के सिर मार ज़ुजरब, मड़ जले मसाण रे।। 4।।

गृभगते कुड भरे गाफल, खेल चुतरस खांण रे।
आण जाणौ दैड आसा, त्रिगुण ताणा ताण रे।। 5।।
सादुळ अब संसार सपनो, पाणी बूंद बूंद पिराण रे।
विखरते कछू नांह वेरा, मन तन को माण रे।। 6।।

साखी

सादुळ रहे चेतन सदा, राम समर दंन रात।
सेवा सतगुरु संत की, वडा ग्रहण एह वात।। 1।।

पियाला-राठ-सोरठ-वाणी

पियालो प्रेम भरपायो, सजण घर आव सेलाणी।
पियालो प्रेम...............

जद मुरसद मेहर जाणी, करे कृपा हणी कानी।
देख्या दिल ख्याल देवानी, हेरत जे बीच हेरानी।। 1।।
कर न सिर काट कुलबाणी, गुरु जा ज्ञान ग्रहे ज्ञानी।
पसरीया पान वना पाणी, न काहे नजर निरखाणी।। 2।।
विरह जे विच वे ज्ञानी, फिरे देख्या सबे फानी।
घूमयो घर आव घेराणी, मूलक जे बीच मेदानी।। 3।।
जद समझे रमज जानी, अहे सादूळ अेसानी।
किया कुदरत, केतानी, अहे तू ए तू मयां ऐकानी।। 4।।

वाणी

मस्त रहना फकड़ ऐसे, अगम स्थान झण्डे हो।।।
मस्त रहना...............।। टैर।।

समझ सतगुर की सैना, आस्क वन पंख उडे हो।
आसक हैं अमरापुर रा, लहर चौधार लुडे हो।। 1।।
वना वादळ वना विजली, मेहां चौधार मंडे हो।
दृष्ट उदेपत अहे सारी, बना दरियाव बुडे हो।। 2।।
नहीं परलोक परवाणा, नहीं उर खण्ड खण्डे हो।
है उर खण्ड खण्ड खण्डे, खण्डे है ज्यों पण्डे हो।। 3।।

नही हर दूर नहीं नेड़े, नहीं व्रहम छोटे वडे हो।
फकड़ सादूळ है अळ मस्ताना, गौर समूरे गड़े हो।।4।।

गुरु महमा को अंग

'गुरु महमा को अंग' साखी शिष्य पूछे:-

सादुळ कूं दयो एह समझ गुरु महमा निझ ज्ञान।
तम हम कूं पूरण तिके सतगुरु संत सयान।। 1।।

गुरु संत बोले

सादुळ कहे हैं सरब संत सतगुरु महमा सत।
पूछयो हैं गुरु पीर कूं खोल देखायो खत।। 2।।
सादुळ कहे हैं सरब संत गुरु महमा निझ ज्ञान।
पल पल पल गुरु पूरणा सतगुरू संत सयान।। 3।।
सादुळ कहे हैं सरब संत गुरु महमा नित गाय।
संत गत न्यारो सकल सां पूरण सो पद पाय।। 4।।

चौपाई छन्द गुरु संत बोले

गुरु महमा जन निस दिन गाई, पूरण भेद हरी रस पाई।
निरभे सो पद न्यारो नांही, मुक्ता गत हर सागर मांही।। 1।।
गुरु महमा गावे जंन ज्ञानी, धाये निरंतर धीरज ध्यानी।
निरभे सो पद न्यारो नांही, मुक्ता गत हर सागर मांही।। 2।।
गुरु महमा गाई ग्रहे गाढ़ी, काया की भरमना सब काढ़ी।
निरभे सो पद न्यारो नांही, मुक्ता गत हर सागर मांही।। 3।।
गुरु महमा गावे सो गुर का, धीरज सा पाया पद धुर का।
निरभे सो पद न्यारो नांही, मुक्ता गत हर सागर मांही।। 4।।
गुरु महमा गाई सो गाता, राम भजन जंन से रंग राता।
निरभे सो पद न्यारो नांही, मुक्ता गत हर सागर मांही।। 5।।
सतगुरु महमा सत है सोई, जो गत संतां विरला जोई।
निरभे सो पद न्यारो नांही, मुक्ता गत हर सागर मांही।। 6।।

सतगुरु महमा है तंत सारा, दिल मांही हर का दीदारा।
निरभे सो पद न्यारो नांही, मुक्ता गत हर सागर मांही।। 7।।
सतगुरु महमा राम समरणा, दुतिये भाव न जम सां डरणा।
निरभे सो पद न्यारो नांही, मुक्ता गत हर सागर मांही।। 8।।

'पधरी छन्द'

सतगुरु संत सत तंत सार, ब्रह गाईये वल हर वार वार।। 1।।
प्रेम नेम प्रकाश प्रांण, जोग जप तप वरत गुरु जांण।। 2।।
हेत प्रीत नित हरख होय, जब तरस है मम जोय जोय।। 3।।
सत संगत गुरु संत सोहय, गुरु महमा नित गाय गाय।। 4।।
सतगुरु महमा हर संमाप, ओत-पोत गुरु समाप आप।। 5।।
दरस परस दालद दूर, नित निरख निरख वरतंत नूर।। 6।।
गुपत प्रगट गुरु दिया ज्ञान, सतगुरु गत सत अंत सयान।। 7।।
संत गता हर गता सोई, कहता संत गत लखे कोई।। 8।।
प्रेम नेम भरपूर पीर, मुक्त सरूप अमीर मीर।। 9।।
सत संत सतगुरु महमा संत सादूळ, मेहर सरूप मुक्त मूल।। 10।।

'अरध भुजंगी छन्द'

महमा मनी हैं, वहां मैं वनी है।। 1।।
ब्रहम का विचारा, वळे वार वारा।। 2।।
बोले ब्रहम बाणी, जिको संत जाणी।। 3।।
संतां का सुधारा, वळे वार वारा।। 4।।
परचे पसाणयो, जिको संत जांणयो।। 5।।
वडेरां वडे हो, गुरु सां गडे हो।। 6।।
सांहां का साहं हो, वाहां का वाह हो।। 7।।
राजां का राजा हो, वाजां का वाजा हो।। 8।।
गुरु का गोसांई, संता रूप सांई।। 9।।
दया ज्ञान देवा, जिके राम जेवा।। 10।।
सत राम सोई, जिको राम जोई।। 11।।

पूरां का प्रवाण, गीतां का गवाणा।। 12।।
मीरां का मीरा हो, पीरां का पीरा हो।। 13।।
दरसयो द्वारे, सवारे सवारे।। 14।।
दाखां राम देवा, संत राम सेवा।। 15।।
ब्रहम ज्ञान वंको, डंके सिर डंको।। 16।।
सत राम सागे, जिको देख जागे।। 17।।
गुरु का गुजारा, निरखयो नंजारा।। 18।।
गुरु अव गतु, सत सत सतु।। 19।।
संत रूप सांई, पूरो भेद पांई।। 20।।
सादूळ सुधारा, तमे मुझ तारा।। 21।।
गुरु सो गता हो, मुक्ता मता हो।। 22।।
उपदेश गुरु एसा, जिके राम जैसा।। 23।।
मिले निझ मूला, सोई है सादूळा।। 24।।

'भुजंगी छन्द'

महमा हैं सतगुरु संत मोटा, तमारा तिकारा गुरु भांज तोटा।। 1।।
प्यासा जन सतगुरु प्रेम पावे, जिके प्रेम प्यासी जंन नित जावे।। 2।।
तीर्थ वरत जप तप जैसा, अपना करके मिटावे अंदेसा।। 3।।
जप तप तीर्थ वरत जांही, मिले एक ही एक अनेक मांही।। 4।।
सत राम सोई सोई संत सागे लगनी लूट के लीव ले चरण लागे।। 5।।
मुक्ता कराये गुरु राम मेलो, भेद हां पछागणयो गुरु राम भेलो।। 6।।
ब्रहम का विचारा ब्रहम का वमेक, एक के मांही है पछाणयो अनेक।।7।।
महमा करतां एसो देश माण्यो जठे जप नांही जोग सेसत जाण्यो।।8।।
जिके गुरु महमा करत जाके, तिके तीन ही लोक मजूर ताके।। 9।।
डंके सिर सतगुरु संत डंको, ब्रह्म का विचारा विले राह वंको।। 10।।
भेद अग्याद गुरु राह भीना, कृपा करके सेवगां काज कीना।। 11।।
सरणे रखे हैं सतगुरु संत सामी, नवेरा नवेरे गुरु निझ नामी।। 12।।
परवाणा दिया हैं गुरु संत पूरा, हरी जनां लिया हैं लिखाये हजूरा।। 13।।
सतगुरु उलटा सुलटा समाये पूरा के प्रतापे पूरा भेद पाये।। 14।।

महमा सतगुरु संत मनाये, गुरु के प्रतापे सादूळ गाये।। 15।।
सेवाराम सतगुरु संत सागे, लगन गुरु चरण सादूळ लागे।। 16।।

'सवैया छन्द'

गुरु महमा गावे जंन ज्ञानी, लिखे हजूर प्रवाणो लीयो।
भगत भाव सतगुरु कूं भावे, दया नजर भर सतगुरु दीयो।
सरण चरण रहता सतगुरु के, प्रेम हरी रस प्यालो पीयो।
सादूळ महमा सतगुरु संत की, जाके सरणे जुग जुग जीयो।। 1।।
सत सत महमा सतगुरु संत की, कोटां में करतां जंन कोई।
सतगुरु महमा सकल सरोवण, हिरदे राम समरणा होई।
प्रेम प्रताप गुरु हैं पालग, जास मता गत सतगुरु जोई।
सादूळ सतगुरु महमा सत हैं, सतगुरु संत है साहब सोई।। 2।।
सत सत महमा सतगुरु संत की, पूछो शास्त्र वेद पुराणी।
संत कहे सतगुरु सत है प्रथम खोज आपण प्राणी।
महमा संत सतगुरु सत मानयो, प्रेम हरी रस गुरु प्रचाणी।
सादूळ सुण लीजे सतगुरु के, बोले सतगुरु सत सत बाणी।। 3।।
सत सत महमा सतगुरु संत की, सरबंग सां संत सतगुरु सूरा।
दिन कर कोट वदन में दिये, निरमल उजल गुरु को नूरा।
दिदां खोल नजर भर देखयो, प्रेम पूरण सतगुरु पूरा।
सादूळ महमा सतगुरु सत हैं, हर सोई गुरु संत हजूरा।। 4।।

'उधोवर छन्द' गुरु सत बाणी

गुरु गम दीजिये निझ ज्ञान, सतगुरु संत जंन सयान।। 1।।
महमा सतगुरु सत मान, आसा छोड़ दे सब आन।। 2।।
महमा राखीये मन मांह, निरखो और दूसरा नांह।। 3।।
सतगुरु संत मेरे साथ, निरभे दीन दीनानाथ।। 4।।
सतगुरु संत गत है सयान, गुरु गम प्रेम भीना ज्ञान।। 5।।
पूरण भेद गुरु प्रताप, आतम राम सतगुरु आप।। 6।।
दीना ज्ञान के दातार, आत्म राम गुरु आधार।। 7।।

भगती भाव सतगुरु भेद, विपरा नांह जाणे वेद।। 8।।
देखया सतगुरु दीदार, वंदण कोट वारो वार।। 9।।
रमता गुरु आत्म राम, सादूळ कोट कोट सलाम।। 10।।

'मोती छन्द'

सतगुरु सरब बड़े हो संत, तमे गुरु ज्ञान करो निझ तंत।। 1।।
सतगुरु संत हो राम समीप, दीपे गुरु ज्ञान सतगुरु दीप।। 2।।
दया के सतगुरु दीन दयाल, रमता राम गुरु रिछपाल।। 3।।
सतगुरु संत हैं राम सरूप, एसा गुरु भेद अगम अरूप।। 4।।
महमा करता होये मलार, वरसे सतगुरु वारो वार।। 5।।
महमा संत करे महा मोक, लखे नहीं भेद ऐसो त्रहलोक।। 6।।
गुरु सत ज्ञान दीप नित गाये, प्यालो गुरु प्रेम हरी रस पाये।। 7।।
सतगुरु संत संतां सुखदेव, सवारे प्राते करे गुरु सेव।। 8।।
देवा गुरु मुक्त गत दातार, सेवो गुरु संत कूं सांझ सवार।। 9।।
जांण्यो गुरु आत्म राम जरूर, हरी रस प्रेम मिलाये हजूर।। 10।।
मुक्त का भेद सतगुरु मूल, सेवो दिन रात प्रात सादूळ।। 11।।

'रेखता छंन्द'

सतगुरु संत की महमा सत है, कोट के रात प्राते कीजे।
महमा सतगुरु मुक्ता मूल हैं, धीर सां प्राण सधीर धीजे।
सतगुरु संत जन ज्ञान संतोक है, दया की नजर भर रोज दीजे।
सादूळ सत महमा सतगुरु संत की, भजन प्रताप सां प्राण भीजे।। 1।।
सत सत महमा सतगुरु संत की, करत हाँ हम सां होत कांई
सतगुरु संत को ज्ञान समाप है, ग्रहत सो संत सो रहत गाई।
सत सत शब्द सो पूरणा सतगुरु जीत सा मरत सो लेत जांई।
सादूळ सत महमा सतगुरु संत की सतगुरु संत है आप सांई।। 2।।
सत सत महमा सतगुरु संत की, सतगुरु संत की सत सेवा।
प्रेम विवेक सत शब्द की पारखा, दरसता सतगुरु संत देवा।
अनहद अगम अग्याद उदोत है, आतमा राम है संत एवा।

सादूळ सत महमा सतगुरु संत की, जांण हां आतमा राम जेवा।। 3।।
सत सत महमा सतगुरु संत की, हर हर होतबो चित होई।
सतगुरु संत की सुणत हो साखना, जीत सा मरण सो संत जोई।
तन कूं मन कूं पूरणा तम हो, कहत हुं दूसरो नांह कोई।
सादूळ सत महमा सतगुरु संत की, सतगुरु संत है राम सोई।। 4।।
सत सत महमा सतगुरु संत की, वात नहीं तास में और वाकी।
परचे पसाणीयो आप हो पूरणा, जाण हुं महमा सत जाकी।
करत हुं भरत हुं मन के कारणे, थापना मन की सब थाकी।
सादूळ सत महमा सतगुरु संत की, त्रह-लोक परलोक में आंण ताकी।। 5।।
सत सत महमा सतगुरु संत की, चाकरा दीजिये हाथ चिठी।
प्रेम हैं, प्रीत है राम सां पायेबो महमा करता लागे मिठी।
उजले की कहै आतम उजली, प्रेम हजूर सां जाय पिठी।
सादूळ सत महमा सतगुरु संत की, दरस हजूर के वीच दिठी।। 6।।
सत सत महमा सतगुरु संत की, वेद पुराण में देख वाची।
जपणा तपणा जोग जोगेसरा, कामना कारणे वात काची।
सतगुरु सत सत राम है समरणा, राम वेरंग में प्राण राची।
सादूळ सत महमा सतगुरू संत की, सतगुरु महमा वात साची।। 7।।
सत सत महिमा सतगुरु संत की, लोक की रेख मिटाये लीको।
देणा लेणा करत भरत हैं दूसरो, जगत सां छूट के होये जीको।
सतगुरु हस्त में शब्द समशेर है, ठहारो मार संभार ठीको।
सादूळ सतगुरु चरण के सरण हाँ, नाम प्रताप है राम नीको।। 8।।
सत सत महमा सतगुरु संत की, जप तप जांण है संत जागे।
ज्ञान सा दीप मैं संत गरकाव हैं, लोक की वारता नांह लागे।
आत्मा राम सो आप ही आप है, भरमना मन की सब भागे।
सादूळ साख हैं सरब ही संत की सतगुरु संत ही राम सागे।। 9।।
सत सत महमा सतगुरु संत की, ज्ञान गोखड़े बैठ गायो।
राम को रूप हैं रजमो राम को, जेथ नहीं मरण है नांह जायो।
आप प्रताप सां अनंत के उधरे, लख नहीं लोक के संग लायो।
सादूळ सत महमा सतगुरु संत की, पूरणा भेद सो राम पायो।। 10।।

'त्रोटक छन्द'

सतगुरु महमा को संभलीया, मुक्तासत भेद सो मम मलीया।। 1।।
गुरु संत वडे वडे मुक्ता गत सो, सत हैं, सत हैं सत है सत सो।। 2।।
गुरु के प्रताप समाप गती, जांणे नहे जोगेसर जोग जती।। 3।।
सतगुरु हैं सार समाप सन्तु, उधरणा सरणा आद अन्तु।। 4।।
भरमना सब मन की उठ भागे, लगनी हर आत्म रूप लगे।। 5।।
दरसण सतगुरु दीप दीठो, मन कूं मन को महबूब मीठो।। 6।।
सतगुरु संत को ऐसो सारणो, माया मोह न जनम मरणो।। 7।।
दंन दंन बलहारे दरसण के, पायो संत दरसण परसण के।। 8।।
संत सतगुरू राम प्रताप सन्तु, उधरे के अनंत अनंत अनंतु।। 9।।
प्रवाण दीया गुरु प्रेम पता, गुपता गुपता गुरु ज्ञान गता।। 10।।
सतगुरु सत आतम राम सही, लहता सत लाल अमोल लही।। 11।।
गुरु संत प्रताप समाप गरहो, रहता संत चरणां के मांह रहो।। 12।।
तम मेरे सतगुरु तारण के सरबंग संत कारज सारण के।। 13।।
अंक खोल दिखावण आये एसो, कहिये मुख ते बोल कैसो।। 14।।
अनंता गुरु संत सरण उधरे, सरणे सतगुरु हम हां सुधरे।। 15।।
सादूळ हर सतगुरु संत सचे, वल महमा कर कोट वचे।। 16।।
सादूळ एसा सो सतगुरु सत है, गुरु ज्ञान गता संत गुरु गत है।। 17।।
मुक्ता गत सतगुरु मिलो, भरमना तज आत्म राम भिलो।। 18।।
दंन दंन सतगुरु के दीप दीपे, छते सत प्रतक सो नांह छिपे।। 19।।
साद़ूळ महमा संत सतगुरु के, धरता संत सतगुरु हैं धुर के।। 20।।

'झूलणा' शिष्य बाणी

सतगुरु संत की महमा सत है, गल भर कण्ठ सुर गाइये जी।
पूरण भेद गुरु संत प्रताप है, लाल अमोल लखाइये जी।
चरण गुरु सरण जंन उजला चित हैं, व्रहम सो भेद वतलाइये जी।
सादूळ सत महमा सतगुरु संत की, प्रेम हर प्याल भर पाइये जी।। 1।।
सतगुरु संत की महमा सत हैं, लेखणा चरण में लिजिये जी।
महमा सतगुरु सिर सट मिलत हैं, दरसतां काट अघ दिजीये जी।

व्रह कर वेर ही वेर सवेरा के, कोट गुरु महमा किजीये जी।
सादूळ सत महमा सतगुरु संत की, प्रेम हर प्याल भर पिजीये जी।। 2।।
सतगुरु संत की महमा सत है, पूरणा राम से पत हैं जी।
सरब में पूरणा साखनां संत की, खोल दिखाये के खत है जी।
महमा सतगुरु संत निझ मूल है, दंन दंन राम सत दत हैं जी।
सादूळ सरब कहत है संत जन सांप्रते, सतगुरु महमा सत हैं जी।। 3।।
सतगुरु संत की महमा सत है, जांण इन्द्री पंच जीत हैं जी।
रसना रिदे एक सत राम हैं, गाइये गल भर गीत हैं जी।
महमा सतगुरु राम सत समरणा, राम जन संत की रीत है जी।
सादूळ सतगुरु वदन में सांप्रते, दीप के कोट अदीत है जी।। 4।।
सतगुरु संत की महमा सत है तांत नहीं दूसरे तांणणा जी।
ज्ञान सा दीप में रामजी गायेबो, मुक्त सा चोलणा मांणणा जी।
सतगुरु संत जंन शब्द समान है, जोग वेराग का जांणणा जी।
सादूळ संत सतगुरु दीप समाप हाँ, अनंन्त के एक में आंणणा जी।। 5।।
सतगुरु संत की महमा सत है, थापना राम थर थूरणा जी।
पांच पच्चीस सुं मार हैं पकड़ के, बालणा जालणा बूरणा जी।
संग सरबंग में संत सरूप है, हाजरा नूर हजूरणा जी।
सादूळ सत महमा सतगुरु संत की, प्रेम का प्याल भर पूरणा जी।। 6।।
सतगुरु संत की महमा सत है, लगन कर हिरदे लेखणा जी।
वचन वमेक गुरु संत की वारता, सत कर ग्रहण सेखणा जी।
शब्द सत सतगुरु हस्त में सेल हैं, मन कूं, जेर के मेखणा जी।
सादूळ सत महमा सतगुरु संत की, दंन दंन सतगुरु देखणा जी।। 7।।
सतगुरु संत की महमा सत है, संत के चित्त में सार है जी।
हालणो चालणो सरब सांहेत हैं, धारणा सरब सां धार है जी।
सूईतो हालते चालते सपने आतमा प्राण आधार है जी।
सादूळ सुन मुख सतगुरु संत को, दरसता दूर सूं दीदार है जी।। 8।।

'मनहर छंद'

गुरु की महमा गत, सोई जांण सत सत।
खोल के देखायो खत संत में समाप हैं।
प्रेम ज्ञान उदे प्रात राम सत दिन रात।
ब्रह्म एक मुख वात प्रेम को प्रताप है।
सतगुरु हैं रुप संत, तार सार निझ तंत।
अणभे हैं, गुरु आद अंत, थापना न थाप हैं।
सादूळ गुरु महमा सत, दत हैं सत राम दत।
पूरणा है रिदे पत, आप राम आप हैं।। 1।।
गुरु महमा गाये, प्रेम हरी रस पाये।
सतगुरु घणो सोहाये, वळे वार वार हैं।
जद तद दरस जोये, हिरदे सां उदोत होये।
सतगुरु राम सोय, दरस को दीदार है।
सोई राम आप साई, कहणे कूं न ओर कांई।
दीप ज्ञान राम दांई, संत को सुधार है।
सादूळ हैं राम सोये, दरसता न एक दोये।
तारणा हो गुरु तोय, व्रहम को विचार है।। 2।।

'नाराच छंद'

गुरु समाप राम गत गुरु राम गत है।
आद अंत मध्य एक तास निझ तत है।
ओत पोत जोत अन्त, खोल देत खत हैं।
सादूळ हैं, राम संत, सतगुरु सत।। 1।।
गुरु समाप राम गत पाईये सो पत हैं।
सत के शब्द सत, दे समूल दत हैं।
मुक्त के रूप पांच मार फेर कीध फत है।
सादूळ कहे राम संत, सतगुरु सत है।। 2।।
गुरु समाप राम गत, बुध सुध बोल है।
व्रहम को गुरु वमेक, तंत निझ तोळ हैं।

प्रवाणो हजूर प्रेम, खत देत खोल हैं।
सादूळ गुरु गत सत अनहद अमोल हैं।। 3।।
गुरु समाप राम गत, तेग हस्त तीर हैं।
सूर वीर गुरु संत, मार पंच मीर हैं।
पूरणा सां धार पांच वडे सूर वीर हैं।
सादूळ गुरु संत सत, संत सौ सधीर है।। 4।।

'ईन्दव छन्द'

सतगुरु संत आद सो अंत, उधार अनंत उधार इसो हैं।
तुंहि हर तात रटे दिन रात, वडेरा वात जूं गाईये जिसो हैं।
हरि हरि हेत चलाये चेत, देवा हर देत तूं तार तिसो हैं।
सादूळ है सत गुरु अवगत, खरो दियो खत दीदार दिसो है।। 1।।
महमा सत मान देवा हर दान थपा थिर थान सो संत सही है।
दया गुरु दीन मिले जल मीन, तहां नही तीन कोटे संत कही है।
मता संत मन तजे गुरु तन दीपे सिर दंन उधार एही है।
सादूळ सयान गुरु सत ज्ञान, धरो गुरु ध्यान ठहा ठीक ठही है।। 2।।

'ठेक निसाणी'

सत महमा गुरु संत की, गल मोहण गायो। 1।।
सुणयो ज्ञान गुरु संत को, थिर मन कूं थायो।। 2।।
सतगुरु की सत संग में, अब आराम आयो।। 3।।
प्रेम हरी रस पूरणो, भल आतम भायो।। 4।।
चेतन राम चरण में, धर धीरज धायो।। 5।।
मरण को नहीं मामलो, जणणी नहीं जायो।। 6।।
गुरु नगारो ज्ञान को, वण डंक वजायो।। 7।।
सतगुरु कृपा सिर के, छत्तर उपर छायो।। 8।।
परवाणों हर प्रेम को, लिख हजूर लायो।। 9।।
पूरण पांच पच्चीस को, आसण उठायो।। 10।।
सत शब्द समशेर सां, घेर मन कूं घायो।। 11।।

प्रवाणों गुरु पीर को, वगेरे वचायो ।। 12 ।।
नहचो आयो नाम को, जांण खीर जमायो ।। 13 ।।
रोड़ रोड़ पड़ी रोम रोम में, ररो रणणायो ।। 14 ।।
सत शब्द संत सतगुरु, सुनमुख सुणायो ।। 15 ।।
दीप उदे हर दीप सो, दीदार देखायो ।। 16 ।।
जल मछली जल में, सिन्धु मांह समायो ।। 17 ।।
देख दीदार दरस के, पन परचो पायो ।। 18 ।।
संत रूप समान हैं, वंदन वधायो ।। 19 ।।
सादूळ महमा गुरु संत की, के कोट कमायो ।। 20 ।।

'गगर निसाणी'

सतगुरु संता अनंत अनंता, नम नम सीस नमाया हैं।
सतगुरु सामी निझ निझ नामी, सत सत शब्द सुणाया है।
सतगुरु सांई जण संग जाई, ज्ञान गता संत गाया है।
जण जण जोई सतगुरु सोई, धन अनहद में धाया है।
सतगुरु सूरा निरख्यो नरा, दरसण दूर सूं देखाया है।
सतगुरु साणो पद परवाणो, लिख अनहद सां लाया है।
संत सरूपा अलख अरुपा, मुक्ता नजर मिलाया हैं।
गुरु सत ज्ञानी मैं सत मानी, अनहद नजरे आया है।
कृपा कीजे दरसण दीजे, एसे अरज अघाया है।
दीन दयाला नजर नहाला, द्रिस्ट गुरु की दाया है।
निरदा न्यारो पल पल प्यारो, काल जाके काया है।
परचो पायो समझ समायो, छत्तर सिर उपर छाया हैं।
मेलो मांही न्यारो नांही, थिरथा तन मन थाया है।
प्रेम प्याल पी मतवाल, खोफ खुफर घत खाया है।
उचरत एसा हेक हमेशा, मोह न जाके माया है।
पंच रंग प्रांणी जण फिर जांणी, हर दम में हुकम हलाया है।
मुक्ता मेलो भन भन भेलो, हिकमत सकळ हलाया है।
शुब्द सुणावे प्यालो पावे भजन सरूपी भाया हैं।

कामण कीना भन भन भीना वाह वाह खेल वणाया हैं।
वेहद वंको डंको डंको, वण सुर नाद वजाया है।
सतगुरु सरणो अजरा जरणो व्रह सो उलट बताया है।
तप न तपणो जप न जपणो, जलफा सबे जलाया है।
देव न देवा सतगुरु सेवा, पूरण निरभे पाया हैं।
सत राम सनेही अनहद एही, व्रहम वादल वरसाया है।
व्रहम वेरागी जत सत जागी, सरणे चरण समझाया हैं।
उलटे आयो सुलट समायो, फेर एसा फरमाया हैं।
सादूळ संगा संग सरबंगा, सरबंग, मांह समाया है।। 27।।

साखी

सादूळ महमा गुरु संत की, सत कीनी हैं सत।
माने जाकूं मुक्त को, खोल देखावो खत।। 1।।
सादूळ महमा गुरु संत की, सत है महमा सोय।
अवर न दूजो कोई एसो जगत बराबर जोय।। 2।।
सादूळ सतगुरु संत की, सत हैं महमा सार।
व्रहमा लखे न शिव विशन, एसो भेद अपार।। 3।।
सादूळ सतगुरु संत की, महमा हैं मन मीठ।
अनंत वदन में अनंत के, दंन कर नजरे दीठ।। 4।।
सादूळ सतगुरु संत की, महमा को फल मूल।
डाल पातर फल दरस हैं, समूल मांही सादूळ।। 5।।
सादूळ सतगुरु संत की, महमा को फल मोट।
ओर चले सब उठ के, एक राम की ओट।। 6।।
सादूळ सतगुरु संत को, बोल शब्द सत बांण।
देही गढ़ में देस देसा, एक राम की आंण।। 7।।
सादूळ सतगुरु संत है महमा में मजबूत।
राम दोवाई राम की, भड़क गये सब भूत।। 8।।
सादूळ सतगुरु संत की, महमा के गढ मांह।
अणभे हां चरणा अगी, निख भव लागे नांह।। 9।।

सादूळ सतगुरु संत की, महमा सत सत मान।
भो भरमना सब उठ भगे निरभे नेठ निदान।। 10।।
सादूळ सतगुरु संत की, समरण महमा सार।
आवा गेवण गर्भ उतपन्ने वले न वारो वार।। 11।।
सादूळ सतगुरु संत की, महमा है हर मौज।
रसना रिदे दिन रात के, राम समरणा रोज।। 12।।
सादूळ सतगुरु संत की, कर महमा कर जोड़।
उलटे पायो आप में, दूर थकी मन दौड़।। 13।।
सादूळ सतगुरु संत है, पल पल पूरण प्रेम।
कोट अनंत के कीजिये, नित महमा को नेम।। 14।।
सादूळ सतगुरु संत है अनहद अगम अरुप।
त्यागी लखे न जप तपा, भट नट लखे न भूप।। 15।।
सादूळ कूं संत सतगुरु, मुक्त द्यो भर मांण।
निरभे चोट निसांण कूं, बुध भर मारे बांण।। 16।।
सादूळ कूं संत सतगुरु, मुक्त द्यो भर माप।
निरभे चोट निसांण कूं थिर भर मारे थाप।। 17।।
सादूळ कूं संत सतगुरु मुक्त द्यो भर मट।
निरभे चोट निसांण कूं, घट डारे घूंघट।। 18।।
सादूळ सतगुरु संत है, मेरे सिर के मोड़।
आद अन्त आगे आगे तुम हो तोड़ा तोड़।। 19।।

'कवत छन्द'

गुरु महमा तंत ज्ञान, प्रेम हर हिरदे प्रकासा।
गुरु महमा तंत ज्ञान, निरभे जन निझ नाम नमासा।
गुरु महमा तंत ज्ञान, मिल्यो हर हिरदे मांही।
गुरु महमा तंत ज्ञान नजर हर न्यारो नांही।
गुरु महमा तंत ज्ञान, मुक्त हर मांही मेलो।
गुरु महमा तंत ज्ञान, भजन हर आत्म भेलो।
सादूळ सतगुरु संत की, महमा निझ निझमूल हैं।

महमा नित नित गाइये, सो संत धन सादूळ है।। 1।।
गुरु महमा तंत ज्ञान, जम सां दूरे जावे।
गुरु महमा तंत ज्ञान, भजन हर समरण भावे।
गुरु महमा तंत ज्ञान, पांच न करे प्रकासा।
गुरु महमा तंत ज्ञान, मिटे मन तोलो मासा।
गुरु महमा तंत ज्ञान, संत सत संग सबूरी।
गुरु महमा तंत ज्ञान, प्रेम की लागी पूरी।
सादूळ सतगुरु संत की, महमा तन मन मांह है।
सतगुरु संत जन की सहा निख भव लागे नांह है।। 2।।
गुरु महमा तंत ज्ञान, जोग हैं न जप तप जांही।
गुरु महमा तंत ज्ञान, मुक्त हैं महमा मांही।
गुरु महमा तंत ज्ञान, प्रेम सां भीना प्राणी।
गुरु महमा तंत ज्ञान, जिको पण सहजे जाणी।
गुरु महमा तंत ज्ञान, दंन कर साहब दीठो।
गुरु महमा तंत ज्ञान, महमा हर रस मीठो।
सादूळ रिदे हर समरणा, सतगुरु महमा सार है।
ज्ञान दीप मांही गरक, चो मुख ले चोधार है।। 3।।
गुरु महमा तंत ज्ञान, द्रिस्ट नहीं आत्म दूरी।
गुरु महमा तंत ज्ञान हिरदे में राम हजूरी।
गुरु महमा तंत ज्ञान, गले हर गल भर गायो।
गुरु महमा तंत ज्ञान, प्रेम हर परचो पायो।
गुरु महमा तंत ज्ञान, संत है अणभे साई।
गुरु महमा तंत ज्ञान, थिरता तन मन थाई।
सादूळ हिरदे हर समरणा सतगुरु महमा सत हैं।
गुरु की गत सो राम गत, ज्ञान दीप अवगत है।। 4।।

साखी 23, चौपाई छन्छ 8, पधरी छन्द 10, अरध भुजंगी छंद 24, भुजंगी छंद 17, सवैया छंद 4, उधोवर छंद 10, मोती छंद 11, रेखता छंद 10, त्रोटक छंद 20, झूलणा छंद 8, मनहर छंद 2, नाराच छंद 4, ईन्दव छंद 2, ठेक निसाणी 1, गगर निसाणी 1, कवत छंद 4, इति श्री ज्ञानदीप गुरु महमा को अंग सम्पूर्ण।

श्री श्री 1008 श्री सदाराम जी महाराज मंदिर
गुहड़ा (जैसलमेर)

सत शिरोमणी श्री श्री 108
श्री सदारामजी महाराज
श्री दयाल दास जी
महाराज
श्री खाजू राम जी
महाराज
श्री करणु राम जी
महाराज
गादी पती श्री मोटूराम जी
महाराज